नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 311, नई दिल्ली, शनिवार 10 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में वही व्यक्ति दुखी है जो ख़ाली है काम मैं व्यस्त रहो और मस्त रहो।

03 आदत से संस्कृति तक, मनुष्य के भीतर बनता हुआ ब्रह्मांड

06 नेट नहीं, सन्नाटा, सुरक्षित ऑफलाइन

08 हिंदी:भारत की आत्मा से विश्व मंच तक- भाषा, संस्कृति,पहचान और वैचारिक स्वतंत्रता

# ई-रिक्शा श्रृंखला: भाग 1 से 7 – संपूर्ण विशेषांक

दिल्ली ई-रिक्शा संकट: कानून, लाइसेंस, सब्सिडी से बैटरी बम तक – जनहित सुधार की मांग

सात भागों में खुलासा: बिना DL पंजीकरण, एक लाइसेंस कई वाहन, सब्सिडी लूट, 236 सड़क प्रतिबंध, PIL रास्ता, बैटरी खतरा – अब समय सुधार का!

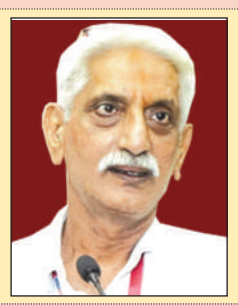

**लेखक:- संजय कुमार बाठला**

परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

**श्रेणी: परिवहन नीति, सड़क सुरक्षा एवं जनकल्याण**

**भूमिका:** श्रृंखला का सार दिल्ली की सड़कों पर ई-रिक्शा लाखों गरीबों का सहारा हैं, लेकिन लाइसेंस ढिलाई, सब्सिडी धोखा, प्रतिबंध जटिलता और बैटरी खतरे ने इन्हें जोखिम बना दिया।

इस सात भागीय श्रृंखला में हमने जांच, कानूनी उद्धरण, आंकड़े और समाधान प्रस्तुत किए। पाठकों के लिए सभी भाग संक्षिप्त रूप में नीचे उपलब्ध – जनहित में RTI/PIL दाखिल करें।

**श्रृंखला सारांश तालिका:**

| भाग | मुख्य विषय | प्रमुख खुलासा | कानूनी आधार |
|---|---|---|---|
| 1 | पंजीकरण बिना DL | एक DL पर कई ई-रिक्शा असुरक्षित | G.S.R. 27(E), 2015 |
| 2 | तथ्य-पेटी | उल्लंघन 3x बढ़े | S.O. 2812(E), 2016 |
| 3 | कानूनी उद्धरण | स्थायी DL अनिवार्य 2022 | दिल्ली विभाग आदेश 2022 |
| 4 | सब्सिडी जाल | 60% लटके आवेदन | EV Policy 2020 |
| 5 | 236 सड़क प्रतिबंध | जाम का दोषी? | HC 31.07.2014 |
| 6 | जनता PIL | 4 मांगें तैयार | Art 14, MV Act |
| 7 | बैटरी/दुर्घटना | आगजनी 70% | AIS-038 ARAI |

**ई-रिक्शा खतरे: एक नजर**

सभी भाग संक्षिप्त प्रस्तुति, भाग 1-3 (मूल लेख):

* बिना DL पंजीकरण असुरक्षित;
* एक लाइसेंस कई वाहन भ्रष्टाचार का संकेत।
* तथ्य-पेटी: स्थायी DL 2022 अनिवार्य,
* उल्लंघन 3x। कानूनी: G.S.R. 27(E).

भाग 4: सब्सिडी 30,000₹ का जाल – 60% लटके; डीलर/पोर्टल दोष। समाधान: तत्काल भुगतान।

भाग 5: 236 सड़क प्रतिबंध (HC 2014); नई दिल्ली 77 सड़कें। ज़ोन सुझाव।

भाग 6: PIL मसौदा – सिंगल DL लिंकिंग, कैप हटाना। RTI टेम्पलेट।

*भाग 7:*ळ बैटरी खतरा – ओवरचार्ज आगजनी 70%, दुर्घटना 2.5x। BMS अनिवार्य।

कानूनी और नीतिगत सुधार: 10 मांगें

***कानूनी सुधार:***

1. MV Act संशोधन: ई-रिक्शा के लिए "स्मार्ट DL" – QR कोड से RC लिंक।
2. G.S.R. 27(E) प्रवर्तन: बैटरी BMS/ARAI सर्टिफिकेट पर जुर्माना दोगुना।
3. दिल्ली HC निगरानी: वार्षिक अनुपालन रिपोर्ट।

**नीतिगत सुधार:**

| मांग | विवरण | लाभ |
|---|---|---|
| 1. सिंगल DL-रिक्शा | एक व्यक्ति एक सक्रिय ई-रिक्शा | दुर्घटना ट्रैकिंग आसान। |
| 2. सब्सिडी 90-दिन | ऑटो-भुगतान पोर्टल | 100% वितरण। |
| 3. 236 सड़क समीक्षा | GPS ज़ोनिंग | जाम 30% कम। |
| 4. बैटरी वारंटी | 3 साल, फ्री टेस्ट | आगजनी रोक। |
| 5. ITMS एकीकरण | कैमरा चालान | उल्लंघन 50% घाटा। |
| 6. प्रशिक्षण अनिवार्य | 10-दिन कोर्स ITI में | DL योग्यता। |
| 7. फ्लीट लाइसेंस | 10+ वाहन के लिए अलग | संगठित संचालन। |
| 8. GRAP में छूट | प्रदूषणकाल में प्राथमिकता | EV लक्ष्य। |
| 9. RTI डैशबोर्ड | लाइव डेटा | पारदर्शिता। |
| 10. PIL फंड | जन-सहयोग कोष | कानूनी लड़ाई। |

**समापन: पाठकों के लिए कार्य योजना**

यह श्रृंखला साबित करती है कि ई-रिक्शा सुविधा हैं, खतरा नहीं।

पाठकों से अपील:

- RTI दाखिल करें: transport.delhi.gov.in पर – "एक DL पर ई-रिक्शा संख्या बताएँ।"
- *PIL में शामिल हों:* newstransportvishesh@gmail.com पर संपर्क; मसौदा फ्री।
- सोशल अभियान: ईरिक्शा_सुरक्षा_अभी शेयर करें।

**परिवहन विभाग, उपराज्यपाल और MoRTH जवाब दें – जनता इंतजार नहीं करेगी। सड़कें रणभूमि नहीं, सुरक्षित मार्ग हों!**

## परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

# पेंशन ऑनलाइन: डिजिटल इंडिया में बुज़ुर्गों की ऑफलाइन उम्मीदें

**डिजिटल इंडिया के युग में पेंशन प्रक्रिया जितनी 'ऑनलाइन' घोषित हुई, उतनी ही 'ऑफलाइन' उम्मीदें लेकर बुज़ुर्ग और विधवाएं अब भी राहत का इंतज़ार कर रहे हैं।**

संजय कुमार बाठला, मुख्य संपादक, स्वतंत्र पत्रकार और सामाजिक मुद्दों के विश्लेषक

दिल्ली के सरकारी दफ्तरों की खिड़कियों के बाहर पेंशन फाइल लिए खड़े बुज़ुर्ग अब साइबर कैफे की कतारों में हैं।

*** अब धूप नहीं जलाती, पर सर्वर डाउन जरूर हो जाता है।**

* फाइल गायब होने की चिंता अब "फॉर्म सबमिटेड सक्सेसफुली" के स्क्रीनशॉट में बदल गई है — पर नतीजा तकरीबन वही है, इंतज़ार पहले भी था, अब भी है।

जबसे दिल्ली में "जनकल्याण" के नारे डिजिटल स्क्रीन पर चमकने लगे हैं, तबसे पेंशन भी तकनीकी दौर में 'क्लिक' हो गई है — क्लिक कीजिए, अप्लाई कीजिए और फिर सिस्टम के जवाब का इंतज़ार कीजिए।

रात के दस बजे पोर्टल खुलता है, तीन बजे बंद हो जाता है। यह गणित शायद वही समझ सके जो नींद के बजाय सर्वर के साथ जागता हो।

विधानसभा स्तर पर दो सौ आवेदनों की सीमा किस गणितज्ञ ने तय की, यह रहस्य अब भी कायम है।

ऐसा लगता है जैसे जनकल्याण योजना नहीं, कोई सीमित 'कोटा' स्कीम चल रही हो और आश्चर्य यह कि सरकार के पास हर नागरिक का आधार और उम्र का विवरण है, फिर भी बुज़ुर्गों और विधवाओं को वेबसाइट पर खुद को साबित करने की मजबूरी बनी हुई है।

यह सवाल अब सीधा और स्पष्ट है — योजना आई जरूर, पर पहुँची कितनों तक?

तकनीकी साक्षरता की कमी के कारण लाखों बुज़ुर्ग और विधवाएं या तो एजेंटों पर निर्भर हैं, या उन साइबर कैफे के मालिकों पर जो तकनीकी सेवा के नाम पर पेंशन की ताक़त का नया बाज़ार चला रहे हैं।

* तकनीक सुविधा का माध्यम बननी चाहिए थी, बाधा का नहीं।

* सरकार चाहे तो आधार-डेटा के आधार पर स्वतः पात्रता तय कर पेंशन जारी कर सकती है।

हर ज़िले में एक 'सहायता केंद्र' या मोबाइल वैन भी बुज़ुर्गों और विधवाओं के लिए बड़ा सहारा साबित हो सकते हैं। यह सिर्फ सुविधा नहीं — सम्मान की पुनर्स्थापना होगी।

जनहित में बस यही कहना है — अगर पेंशन फिलहाल नहीं पहुँची है तो कम से कम "आपका आवेदन प्रक्रिया में है" का एसएमएस भेज दीजिए। ताकि इन बुज़ुर्गों और विधवाओं को यह महसूस हो सके कि डिजिटल इंडिया ने उन्हें भुलाया नहीं है, बस इंतज़ार की लिमिट थोड़ी बढ़ा दी है।

दिल्ली में वरिष्ठ नागरिक और विधवा पेंशन के लाखों आवेदन अब भी लंबित।

*विधानसभा क्षेत्रवार सीमित कोटा आवंटन से असमान वितरण की आशंका।

* आवेदन पोर्टल के समय और सर्वर क्षमता पर कई शिकायतें दर्ज।

* डिजिटल साक्षरता की कमी के चलते बुज़ुर्ग और विधवाएं अब भी बिचौलियों पर निर्भर।

# परिवहन विकास परिषद की बैठक में एआईएमटीसी और एसआईएमटीए ने उठाए जनहित के मुद्दे

संजय कुमार बाठला

देश के परिवहन क्षेत्र से जुड़ी नीतियों और व्यापारिक चुनौतियों पर नीति-निर्माताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए अखिल भारतीय मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (एआईएमटीसी) और सदर्न इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन (एसआईएमटीए) ने परिवहन विकास परिषद की बैठक में अनेक ठोस और संरचनात्मक सुझाव पेश किए। इन सुझावों का उद्देश्य सड़क परिवहन व्यापार की स्थिरता, पारदर्शिता और सुरक्षा को सुदृढ़ बनाना है।

**परिवहन विकास परिषद की बैठक में एआईएमटीसी और एसआईएमटीए ने उठाए जनहित के मुद्दे**

अखिल भारतीय मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (एआईएमटीसी) और सदर्न इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन (एसआईएमटीए) की टीमों ने नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित परिवहन विकास परिषद (Transport Development Council – TDC) की बैठक में भाग लिया। इस बैठक में परिवहन व्यापार से जुड़े कई व्यवहारिक और नीतिगत मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

बैठक में एआईएमटीसी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरीश सभरवाल, अध्यक्ष डॉ. जी.आर. शनमुगप्पा तथा पूर्व अध्यक्ष श्री गुरिंदर पाल सिंह उपस्थित रहे।

**नीतिगत सुधारों और पारदर्शी व्यवस्था पर बल**

* परिवहन व्यापार की स्थिरता, वृद्धि और विकास सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय सड़क परिवहन नीति तैयार करने का सुझाव।

* वर्तमान ई-चालान प्रणाली के दुरुपयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए साक्ष्य-आधारित और पारदर्शी प्रणाली लागू करने का आग्रह।

**राज्यों के बीच समन्वय और कर संरचना में एकरूपता की मांग**

* विभिन्न राज्यों में मौजूद सीमा चौकियों को समाप्त करने की मांग, विशेषकर कर्नाटक और महाराष्ट्र में तत्काल कार्रवाई पर जोर।

* एक राष्ट्र, एक कर सिद्धांत के अनुरूप देशभर में समान मोटर वाहन कर प्रणाली लागू करने का प्रस्ताव।

**व्यवसायिक सुरक्षा और तकनीकी प्रावधानों पर चर्चा**

* परिवहन के दौरान माल की चोरी या क्षति के मामलों में वाहक की देयता सीमित करने हेतु प्रेषक/प्राप्तकर्ता द्वारा पारगमन बीमा अनिवार्य करने की सिफारिश।

* मालवाहक वाहनों के लिए AIS 140 VLTD उपकरणों की अनिवार्यता समाप्त करने का सुझाव, ताकि कुछ विशेष विक्रेताओं पर एकाधिकार न बने।

* जहां स्वचालित वाहन परीक्षण केंद्र नहीं हैं, वहां मैन्युअल फिटनेस परीक्षण केंद्रों को संचालन जारी रखने की अनुमति देने की अपील।

**चालकों के कल्याण और बस संचालन के मुद्दे**

* चालकों के लिए सड़क किनारे विश्राम सुविधाएं और उनके लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की आवश्यकता पर बल।

* बस बॉडी कोड (AIS 153) के कार्यान्वयन से उत्पन्न समस्याओं और पहले से निर्मित बसों के गैर-पंजीकरण के विषय पर चिंता व्यक्त।

* पर्यटक वाहनों में लगेज कैरियर बंद किए जाने से प्रभावित ऑपरेटरों की व्यावहारिक कठिनाइयों पर जोर।

एआईएमटीसी ने दोहराई जनहित के प्रति प्रतिबद्धता परिषद में रखे गए सभी बिंदुओं को सदस्यों ने गंभीरता से सुना।

एआईएमटीसी ने कहा कि संगठन इन सभी विषयों पर निरंतर फॉलो-अप कार्रवाई करता रहेगा, ताकि सड़क परिवहन व्यापार के विकास, सुशासन और सामाजिक सुरक्षा के उद्देश्य को सशक्त बनाया जा सके।

# SIR (Special Intensive Revision) विशेष गहन पुनरीक्षण

पिंकी कुंडू

प्रक्रिया प्रारंभ हो रही है, जिसमें सभी मतदाताओं को अपना परिगणना फॉर्म भरकर BLO को जमा करवाना होगा। फॉर्म जमा नहीं करवाने पर आपका नाम मतदाता सूची में नहीं आएगा।

**उद्देश्य**

1. मृत व्यक्तियों के नाम हटाना।
2. स्थायी रूप से निवास बदलने वालों का नाम हटाना।
3. किसी मतदाता का दो स्थानों पर पंजीकरण हो उसे निरस्त करना।
4. फर्जी मतदाताओं का नाम हटाना।
5. शुद्ध, स्वच्छ व पारदर्शी मतदाता सूचियों का निर्माण करना।
6. पुनः पंजीकरण प्रक्रिया

अपना फॉर्म भरने से पूर्व आप अपने 2 नवीनतम रंगीन पासपोर्ट साइज फ़ोटो जरूर खिंचवा लें, जिसका बैकग्राउंड सफेद होना चाहिए।

आप सभी को BLO द्वारा परिगणना फॉर्म उपलब्ध करवाया जाएगा, जिसे निश्चित समय में भरकर BLO को जमा करवाना होगा।

फॉर्म के साथ आपको 11 दस्तावेजों की सूची में से कोई भी दस्तावेज अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा।

**दस्तावेजों की सूची**

1. केंद्र सरकार/ राज्य सरकार/ PSU के नियमित कर्मचारियों को जारी पहचान पत्र या पेंशन कार्ड
2. भारत में 01/07/1987 से पूर्व सरकार/बैंक/LIC/ डाकघर/ PSU या स्थानीय प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र/ दस्तावेज/ पहचान पत्र
3. जन्म प्रमाण पत्र
4. पासपोर्ट
5. मूल निवास प्रमाण पत्र
6. 10 वीं बोर्ड की अंक तालिका मय प्रमाण पत्र
7. वन अधिकार प्रमाण पत्र
8. अन्य पिछड़ा वर्ग/ अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति या अन्य जाति प्रमाण पत्र
9. राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (जहां लागू हो)
10. राज्य/ स्थानीय अधिकारियों द्वारा तैयार किया गया परिवार रजिस्टर
11. सरकार द्वारा जारी कोई भूमि/ गृह आवंटन प्रमाण पत्र

आप इन 11 दस्तावेजों में से अपने कम से कम कोई भी 2 दस्तावेज तैयार रखें, ताकि परिगणना फॉर्म भरने में आपको कोई परेशानी नहीं हो।

मतदाताओं के पंजीकरण की 3 श्रेणियां बनाई गई है, आप उनके अनुसार भी अपने दस्तावेज तैयार कर सकते हैं।

1. यदि आपका जन्म 01/07/1987 से पूर्व हुआ है, तो आपको स्वयं का कोई भी एक दस्तावेज जमा करवाना होगा, साथ में कोई अतिरिक्त दस्तावेज है तो भी काम आएगा, लेकिन कोई एक दस्तावेज होना अनिवार्य है।
2. यदि आपका जन्म 01/07/1987 से 02/12/2004 के मध्य हुआ है तो आपको एक दस्तावेज स्वयं का तथा एक दस्तावेज माता-पिता का होना अनिवार्य है। यानी कम से कम 2 दस्तावेज होने चाहिए।
3. यदि आपका जन्म 02/12/2004 के बाद हुआ है तो आपके पास 3 दस्तावेज होने चाहिए। एक स्वयं का, एक माता का व एक पिता का। कम से कम तीन दस्तावेज।

SIR प्रक्रिया शुरू होने वाली है, आप अपने परिवार व आसपास के लोगों तक इसकी सूचना पहुंचाएं। उन्हें भी दस्तावेज तैयार करने के लिए प्रेरित करें, जिससे पारदर्शी मतदाता सूचियों का निर्माण हो सके।

आपका वोट आपका अधिकार है। जागरूक मतदाता बनें व परिगणना फॉर्म भरकर अपने BLO को जमा करवाएं।

**निर्वाचन आयोग**

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

## आज का साइबर सुरक्षा विचार "पासवर्ड चुराए जा सकते हैं, लेकिन MFA खातों को तोड़ना कहीं अधिक कठिन बना देता है।"

पिंकी कुंडू

MFA का प्रयोग सुनिश्चित करें। मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA) MFA एक सुरक्षा विधि है जिसमें उपयोगकर्ताओं को अपनी पहचान सत्यापित करने के लिए दो या अधिक स्वतंत्र कारकों का उपयोग करना पड़ता है—जैसे पासवर्ड के साथ एक बार उपयोग होने वाला कोड (OTP), बायोमेट्रिक या हार्डवेयर टोकन। यह खातों को समझौता करना कहीं अधिक कठिन बना देता है क्योंकि यदि एक कारक (जैसे पासवर्ड) चोरी भी हो जाए, तो भी हमलावर बिना दूसरे कारक के लॉगिन नहीं कर सकते।

**इंफोस्टीलर – छुपा हुआ खतरा**

* क्या हैं: इंफोस्टीलर ऐसे मैलवेयर हैं जो संक्रमित सिस्टम से क्रेडेंशियल्स और संवेदनशील डेटा चुराने के लिए बनाए जाते हैं।

* क्या चुराते हैं: लॉगिन आईडी, पासवर्ड, बैंकिंग विवरण, क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट, ब्राउज़र कुकीज़ और सेशन टोकन।

* कैसे फैलते हैं: फ़िशिंग ईमेल, खतरनाक अटैचमेंट, क्रैक्ड सॉफ़्टवेयर डाउनलोड और समझौता किए गए वेबसाइट।

* क्यों खतरनाक हैं: रैनसमवेयर की तरह फाइल लॉक करने के बजाय, इंफोस्टीलर सक्षम करते हैं:

1. अकाउंट टेकओवर (ATO): हमलावर आपके रूप में लॉगिन कर सकते हैं।
2. पहचान की चोरी: व्यक्तिगत डेटा का दुरुपयोग।
3. लंबे समय तक शोषण: चोरी किए गए क्रेडेंशियल्स का डार्क मार्केट में पुनर्विक्रय।

**MFA – इंफोस्टीलर के खिलाफ आपकी ढाल**

* केवल पासवर्ड कमजोर है: यदि मैलवेयर आपका पासवर्ड चुरा लेता है, तो हमलावर तुरंत लॉगिन कर सकते हैं।

* MFA एक बाधा जोड़ता है: दूसरा फैक्टर आवश्यक होता है (OTP, ऑथेंटिकेटर ऐप, बायोमेट्रिक या हार्डवेयर टोकन)।

* अकाउंट टेकओवर रोकता है: चोरी हुए क्रेडेंशियल्स के बावजूद हमलावर आसानी से MFA को पार नहीं कर सकते।

* रीप्ले अटैक रोकता है: MFA हमलावरों को चोरी किए गए पासवर्ड को कई प्लेटफ़ॉर्म पर पुनः उपयोग करने से रोकता है।

* डिजिटल लचीलापन बनाता है: क्रेडेंशियल चोरी को साइबर अपराधियों के लिए कम लाभदायक और कम पैमाने पर संभव बनाता है।

**इंफोस्टीलर बनाम MFA सुरक्षा पहलू**

*** इंफोस्टीलर खतरा**

**MFA लाभ**

* क्रेडेंशियल चोरी यूज़रनेम और पासवर्ड चुराता है, MFA चोरी होने पर भी एक्सेस रोकता है

* अकाउंट टेकओवर अनधिकृत लॉगिन सक्षम करता है, दूसरा फैक्टर आवश्यक, अधिकांश लॉगिन रोकता है

* डेटा शोषण लंबे समय तक धोखाधड़ी, क्रेडेंशियल्स का पुनर्विक्रय, हमलावरों की कमाई की क्षमता सीमित करता है

* हमले की सफलता दर सिंगल-फैक्टर में उच्च, MFA से नाटकीय रूप से कम उपयोगकर्ता सुरक्षा MFA के बिना न्यूनतम क्रेडेंशियल चोरी के खिलाफ मजबूत रक्षा

**जोखिम और सीमाएँ**

* MFA बायपास प्रयास: उन्नत इंफोस्टीलर सेशन टोकन चुरा सकते हैं या उपयोगकर्ताओं को धोखा देकर गलत अनुरोध मंज़ूर करवा सकते हैं।

* यूज़र थकान: बार-बार MFA प्रॉम्प्ट से लापरवाह अनुमोदन हो सकता है।

*** सर्वोत्तम अभ्यास:**

1. मजबूत MFA तरीकों का उपयोग करें (ऑथेंटिकेटर ऐप या हार्डवेयर टोकन, केवल SMS नहीं)।
2. MFA को एंडपॉइंट प्रोटेक्शन, फ़िशिंग जागरूकता और बिहेवियरल एनालिटिक्स के साथ मिलाएँ।
3. संदिग्ध लॉगिन अनुरोधों और डिवाइस नोटिफिकेशन पर सतर्क रहें।

मुख्य संदेश MFA इंफोस्टीलर के खिलाफ सबसे प्रभावी रक्षा में से एक है। यह आपको अजेय नहीं बनाता, लेकिन यह अकाउंट टेकओवर के जोखिम को काफी कम कर देता है और हमलावरों को अधिक जटिल, कम पैमाने पर संभव तरीकों को अपनाने के लिए मजबूर करता है।

"अपने पासवर्ड को घर की चाबी समझें। यदि चोर उसकी कॉपी बना ले, तो वह अंदर आ सकता है। MFA उस दरवाज़े का ताला है जो हर बार बदलता है — इसके बिना, चोर बाहर ही फँसा रहता है।"

# स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

# क्या आप जानते हैं अक्सर ज़्यादा सोचने से सिरदर्द बन जाता है, जाने नियंत्रित करने के कुछ प्रभावी उपाय

पूजा ठाकुर
साइकोलॉजिस्ट

**ज़्यादा सोचने से अक्सर सिरदर्द होता है**

ज़्यादा सोचने से दिमाग लगातार टेंशन में रहता है। लगातार मेंटल स्ट्रेस से मसल्स टाइट हो जाती हैं और सिर में प्रेशर बढ़ जाता है, जिससे सिरदर्द होता है। जब विचार बिना किसी रिज़ॉल्यूशन के बार-बार आते हैं तो दिमाग ज़्यादा एनर्जी इस्तेमाल करता है। मेंटल रिलैक्सेशन, ब्रेक और शांत एक्टिविटीज़ इस ओवरलोड को कम करने में मदद करती हैं।

* मेंटल थकान को रोकने के लिए विचारों को संतुलित करना उतना ही ज़रूरी है जितना फिजिकल हेल्थ को संतुलित रखना।

* बहुत अधिक सोचना (Overthinking) एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति एक ही बात को बार-बार दोहराता रहता है, जिससे मानसिक थकान और तनाव बढ़ता है।

**इसे नियंत्रित करने के कुछ प्रभावी उपाय:**

1. जागरूक बनें: जब आप खुद को पुरानी बातों या भविष्य की चिंता में उलझा हुआ पाएं, तो रुकें और खुद से कहें कि ₹मैं अभी ओवरथिंकिंग कर रहा हूँ।₹ जागरूकता ही बदलाव की पहली सीढ़ी है।

2. समय सीमा तय करें: किसी समस्या पर विचार करने के लिए दिन में केवल 15-20 मिनट का 'चिंता समय' (Worry Time) निर्धारित करें। उसके बाद अपना ध्यान दूसरे कामों में लगा दें।

3. लिखना शुरू करें: अपने विचारों को डायरी में लिखें। जब विचार कागज पर आ जाते हैं, तो दिमाग उन्हें बार-बार दोहराना बंद कर देता है।

4. वर्तमान पर ध्यान दें (Mindfulness): गहरी सांस लें या ध्यान (Meditation) करें। यह आपको 'अभी' में वापस लाने में मदद करता है।

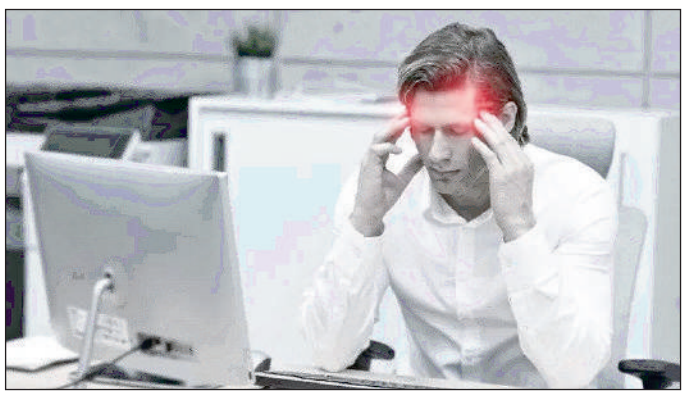

5. परफेक्ट बनने की कोशिश छोड़ें: यह स्वीकार करें कि सब कुछ आपके नियंत्रण में नहीं है और गलतियाँ होना स्वाभाविक है।

6. खुद को व्यस्त रखें: जब दिमाग खाली होता है, तो वह ज्यादा सोचता है। अपनी पसंद का कोई काम करें, जैसे व्यायाम, पेंटिंग या संगीत सुनना।

यदि फिर भी बहुत अधिक सोचना आपकी नींद या दैनिक जीवन को प्रभावित कर रहा है, तो किसी अच्छे साइकोलॉजिस्ट से काउंसलिंग के माध्यम से सलाह अवश्य ले। इसके लिये आप info@counsellingwali.com जैसे प्लेटफॉर्म के जरिए भी ऑनलाइन मदद ले सकते हैं।

# एक ऐसा घोल जो पीपल और बरगद के पौधे को बिना उखाड़े हटा सकता हैं

विद्या भूषण भरद्वाज

घर की छत या दीवारों की दरारों में पीपल और बरगद के पौधों का उगना एक आम समस्या है, जो दिखने में छोटी लग सकती है लेकिन घर की मजबूती को हिला कर रख देती है। बता दें कि इन पेड़ों की जड़ें बहुत शक्तिशाली और फैलने वाली होती हैं, जो धीरे-धीरे कंक्रीट और ईंटों के बीच जगह बना लेती हैं।यदि समय रहते इन्हें हटाया न जाए, तो ये छत और दीवार में दरार डाल देते हैं, जिससे बरसात में पानी टपकने और सीलन की समस्या बढ़ जाती है। इन समस्याओं से बचने के लिए इन्हें बार-बार उखाड़ने के बावजूद ये दोबारा उग आते हैं क्योंकि इनकी जड़ का छोटा सा हिस्सा भी जीवित रहने की क्षमता रखता है। अगर आपके घर की छत या दीवार के किनारे पर ये पौधे उग आए हैं, तो परेशान होने की जरूरत नहीं है।

आज के इस लेख में हम आपको इन्हें हटाने का एक ऐसे घोल के बारे में बताने जा रहे हैं, जिससे आप इसे बिना उखाड़े हटा सकती हैं।

पीपल और बरगद के पौधे को कैसे हटाएं?पीपल और बरगद जैसे जिद्दी पौधों को दोबारा उगने से रोकने के लिए सबसे कारगर चीज है हींग। हींग का तीखापन और इसके रासायनिक गुण इन पेड़ों की जड़ों को भीतर से सुखा देते हैं, जिससे पौधे की दोबारा पनपने की क्षमता खत्म हो जाती है।

**घोल बनाने और इस्तेमाल करने की विधि**

पौधों को हटाने के लिए घोल को बनाने के लिए सही तरीके से घोल बनाना बहुत जरूरी है। नीचे देखें इस घोल को बनाने की प्रक्रिया-

सबसे पहले आप लगभग 10-20 ग्राम शुद्ध हींग लें।

इसके बाद इसे आधा कप गुनगुने पानी में घोलकर एक गाढ़ा मिश्रण तैयार कर लें।

इसके बाद पौधे के तने को छत की सतह के पास से काट दें।

तना काटने के बाद जहां जड़ दिखाई दे रही हो, वहां किसी नुकीली चीज या पेचकस से थोड़ा गहरा छेद कर दें।

अब इस छेद में तैयार किया गया हींग का गाढ़ा घोल भर दें और ऊपर से थोड़ी गीली मिट्टी या सीमेंट लगा दें।

**नमक और फिटकरी घोल का करें इस्तेमाल** अगर आपके किचन में हींग नहीं है, तो आप नमक और फिटकरी का इस्तेमाल कर सकती हैं। नीचे देखें इसे इस्तेमाल करने का प्रोसेस-

इसके लिए नमक जड़ों की नमी को पूरी तरह खींच लेता है और फिटकरी जड़ों के विकास को रोक देती है। इसके लिए एक कप पानी में 4 चम्मच नमक और 2 चम्मच फिटकरी पाउडर मिलाकर उसका गाढ़ा घोल बनाएं।

इसके बाद इस घोल को जड़ों के पास डाल दें।

घोल को इस्तेमाल करते समय किन बातों का रखें ध्यान ?इस घोल का इस्तेमाल करने के लिए धूप वाला दिन चुनें। जब जड़ें सूखी होती हैं, तो वे आपके द्वारा डाले गए घोल को अधिक तेजी से सोखती हैं।

ध्यान रखें कि घोल डालने के तुरंत बाद उस स्थान पर पानी न पड़ने दें, वरना घोल बह जाएगा और जड़ों पर असर नहीं करेगा। घोल डालने के 3-4 दिन बाद आप देखेंगे कि जड़ें काली पड़कर सूखने लगी हैं।

# "क्यों कानों को ठंड से बचाना फैशन नहीं, जीवन रक्षा है ?"

के. के छाबड़ा

**जानें 10 चौंकाने वाले सच !**

सर्दियों की दस्तक होते ही हम भारी जैकेट और दस्ताने तो निकाल लेते हैं, लेकिन अक्सर कानों को खुला छोड़ देते हैं।

क्या आप जानते हैं कि आपके कान केवल सुनने के अंग नहीं हैं, बल्कि वे आपके शरीर के 'थर्मोस्टेट' (तापमान नियंत्रक) की सबसे कमजोर कड़ी हैं?

चिकित्सा विज्ञान और आयुर्वेद दोनों ही मानते हैं कि कानों के जरिए घुसने वाली ठंड सीधे आपके मस्तिष्क और हृदय प्रणाली को प्रभावित कर सकती है।

आज की इस विशेष रिपोर्ट में हम उन रहस्यों को खोलेंगे कि क्यों कानों को ढकना आपकी सेहत के लिए 'सुरक्षा कवच' की तरह काम करता है।

**क्यों है कानों को बचाना इतना जरूरी?**

कान की बनावट में मांसपेशियों या वसा (Fat) की कोई सुरक्षात्मक परत नहीं होती।

यहाँ की त्वचा के ठीक नीचे तंत्रिकाओं (Nerves) का जाल होता है।

जब ठंडी हवा सीधे कान के पर्दे और नलिका से टकराती है, तो यह शरीर के 'कोर टेम्परेचर' को तेजी से गिरा सकती है, जिससे 'थर्मल शॉक' का खतरा बढ़ जाता है।

**10 दुर्लभ और अज्ञात 'सच' (10 Rare & Unknown Facts)**

दिमाग का सीधा कनेक्शन: कानों के पीछे 'वेगस नर्व' (Vagus Nerve) की

शाखाएं होती हैं।

यहाँ अत्यधिक ठंड लगने पर यह नस उत्तेजित हो जाती है, जिससे अचानक चक्कर आना (Vertigo) या सिरदर्द शुरू हो सकता है।

कानों की अपनी 'हड्डी' का बढ़ना (Exostosis): जो लोग ठंडी हवा में कानों को खुला रखते हैं, उनके कान की नली में रक्षा तंत्र के रूप में अतिरिक्त हड्डी बढ़ने लगती है। इसे 'सर्फर्स ईयर' (Surfer's Ear) कहते हैं, जो सुनने की क्षमता कम कर सकता है।

चेहरे का लकवा (Bell's Palsy): कड़ाके की ठंड में कान के पीछे से गुजरने वाली 'फेशियल नर्व' में सूजन आ सकती है। इससे चेहरे के एक तरफ की मांसपेशियों में अस्थायी लकवा होने का खतरा रहता है।

पाचन से संबंध: आयुर्वेद के अनुसार, कानों का सीधा संबंध 'वात' दोष से है। कानों में ठंड लगने से पेट में गैस, मरोड़ और अपच की समस्या अचानक बढ़ सकती है।

ब्लड प्रेशर का जंप: कान ठंडे होने पर शरीर की नसें संकुचित हो जाती हैं। यह संकुचन ब्लड प्रेशर को अचानक 10-15 पॉइंट बढ़ा सकता है, जो बुजुर्गों के लिए खतरनाक है।

संतुलन और 'इन्नर ईयर': कान के भीतर तरल पदार्थ होता है जो शरीर का संतुलन (Balance) बनाए रखता है।

अत्यधिक ठंड इस तरल के दबाव को प्रभावित कर सकती है, जिससे चलते समय लड़खड़ाने का अहसास हो सकता है।

दांतों का दर्द: कई बार हमें लगता है कि दांत में कैविटी है, लेकिन असल में वह कान की नसों में ठंड लगने के कारण होने वाला 'रेफर्ड पेन' होता है।

इम्यूनिटी का गिरना: कान ठंडे रहने से शरीर की ऊर्जा केवल उन्हें गर्म रखने में खर्च होती है, जिससे संक्रमण से लड़ने वाली सफेद रक्त कोशिकाएं (WBC) कमजोर पड़ जाती हैं।

कान का 'वैक्स' और सुरक्षा: ठंड में कान का वैक्स (Earwax) सख्त हो जाता है, जिससे कान में खुजली और संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।

सर्दियों का एंग्जायटी अटैक: कानों के जरिए जाने वाली ठंडी हवा सीधे 'सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम' को सक्रिय कर देती है, जिससे बिना कारण घबराहट और बेचैनी महसूस होने लगती है।

**कैसे करें बचाव? (Safety Tips)**

मफलर या मंकी कैप: मफलर को इस तरह लपेटें कि कान पूरी तरह ढके रहें।

रुई का प्रयोग: यदि बहुत ज्यादा हवा चल रही है, तो कानों में हल्की रुई (Cotton ball) डालना एक प्रभावी 'विंड-ब्रेकर' का काम करता है।

बादाम या तिल का तेल: नहाने के बाद कान के बाहरी हिस्से और पीछे तेल की एक बूंद लगाएं। यह एक 'इंसुलेटिंग लेयर' बनाता है।

**निष्कर्ष**

आपके कान आपके शरीर की खिड़कियां हैं।

यदि इन खिड़कियों से ठंडी हवा अंदर आएगी, तो पूरे 'घर' (शरीर) का तापमान बिगड़ जाएगा।

इस सर्दी, स्टाइल के साथ-साथ अपनी इन नाजुक इंद्रियों का ख्याल जरूर रखें।

# हृदयाघात एवं हृदय रोगों की रोकथाम

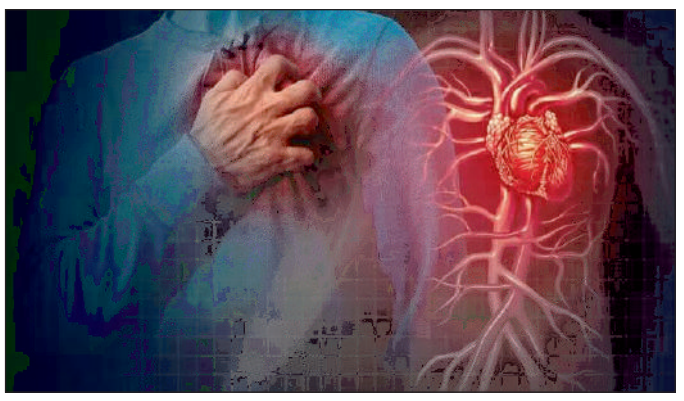

**पर्याप्त पानी पीना और शरीर को हाइड्रेट रखना क्यों सबसे ज़रूरी है**

हृदयाघात और हृदय संबंधी समस्याओं से कैसे बचा जाए।

हालाँकि हृदय को स्वस्थ रखने के लिए कई जीवनशैली उपाय आवश्यक हैं, लेकिन पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और शरीर को हाइड्रेट रखना सबसे बुनियादी, सरल और प्रभावशाली उपायों में से एक है — जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

पानी केवल एक तरल नहीं है — यह हृदय और संपूर्ण हृदय–रक्तवाहिनी तंत्र (Cardiovascular System) के लिए जीवनरेखा है।

1. हाइड्रेशन रक्त की मात्रा और गाढ़ेपन (Viscosity) को नियंत्रित करता है रक्त का एक बड़ा हिस्सा पानी से बना होता है। जब शरीर में पानी पर्याप्त होता है:

* रक्त पतला और सुचारु रूप से बहता है
* हृदय को रक्त पंप करने में कम मेहनत करनी पड़ती है
* रक्त के थक्के (Clots) बनने का खतरा कम होता है

नवीनतम वैज्ञानिक समझ: आधुनिक शोध बताते हैं कि हल्की-सी डिहाइड्रेशन भी रक्त को गाढ़ा कर सकती है, जिससे:

* रक्तचाप बढ़ता है
* थक्के बनने की संभावना बढ़ती है
* धमनियों में प्लाक जमने का खतरा होता है

सभी हृदयाघात के प्रमुख कारण हैं।

2. पर्याप्त पानी रक्तचाप (Blood Pressure) को नियंत्रित करता है जब शरीर में पानी कम होता है, तो कुछ हार्मोन सक्रिय हो जाते हैं:

* वासोप्रेसिन (Vasopressin) – जो रक्त नलिकाओं को संकुचित करता है
* रेनिन–एंजियोटेंसिन सिस्टम – जो रक्तचाप बढ़ाता है, इनका परिणाम:
* रक्तचाप में वृद्धि
* हृदयाघात और स्ट्रोक का खतरा

वर्तमान चिकित्सकीय दृष्टिकोण: आज के डॉक्टर पानी पीने को रक्तचाप नियंत्रण का प्राकृतिक सहायक उपाय मानते हैं — आहार और व्यायाम के साथ।

3. हाइड्रेशन हृदय की मांसपेशियों को मजबूत रखता है हृदय एक मांसपेशी है, और हर मांसपेशी को सही कार्य के लिए पानी चाहिए:

* इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने के लिए
* हृदय की विद्युत गतिविधि (Heart Rhythm) को सामान्य रखने के लिए
* धड़कन की अनियमितता से बचाव के लिए

डिहाइड्रेशन में:

* सोडियम व पोटैशियम असंतुलित हो जाते हैं
* दिल की धड़कन अनियमित हो सकती है
* अचानक हृदय संबंधी घटनाओं का जोखिम बढ़ जाता है

4. डिहाइड्रेशन शरीर में तनाव (Stress Response) बढ़ाता है जब शरीर में पानी कम होता है, तो शरीर इसे तनाव की स्थिति मानता है और हार्मोन छोड़ता है:

* कॉर्टिसोल (Stress Hormone)
* एड्रेनालिन (Fight or Flight Hormone)
* इनसे:
* दिल की धड़कन तेज़ होती है
* रक्तचाप बढ़ता है
* हृदय को अधिक ऑक्सीजन चाहिए
* लंबे समय तक यह स्थिति कोरोनरी आर्टरी डिज़ीज़ का कारण बन सकती है।

5. *पानी हृदय रोग के जोखिम कारकों को कम करता है, पर्याप्त पानी पीने से:

* मेटाबॉलिज़्म बेहतर होता है
* वजन नियंत्रित रहता है
* इंसुलिन संवेदनशीलता बढ़ती है
* शरीर से विषैले तत्व बाहर निकलते हैं, जबकि लंबे समय तक पानी की कमी से:
* LDL (खराब कोलेस्ट्रॉल) बढ़ता है
* सूजन (Inflammation) बढ़ती है
* धमनियों के सख्त होने (Atherosclerosis) का खतरा बढ़ता है

हृदय स्वास्थ्य पर नवीनतम शोध और विकास आधुनिक कार्डियोलॉजी में हाइड्रेशन को अब हृदय सुरक्षा का अहम स्तंभ माना जा रहा है:

नए शोध क्षेत्र: रक्त की गाढ़ेपन सूचकांक (Blood Viscosity Index) को स्वतंत्र हृदय जोखिम कारक माना जा रहा है। हाइड्रेशन और प्लाक स्थिरता के बीच संबंध पर अध्ययन हृदय रोग रोकथाम कार्यक्रमों में अब पानी पीने की शिक्षा शामिल

**क्लिनिकल अनुभव:**

* हृदयाघात के मरीजों में अक्सर पुरानी डिहाइड्रेशन पाई जाती है
* कार्डियक रिकवरी और रिहैबिलिटेशन में पर्याप्त हाइड्रेशन से बेहतर परिणाम मिलते हैं

हृदय स्वास्थ्य के लिए व्यावहारिक पानी पीने के सुझाव

* दिन भर नियमित अंतराल पर पानी पिएँ
* प्यास लगने का इंतज़ार न करें — प्यास डिहाइड्रेशन का देर से संकेत है
* फल, सब्ज़ियाँ, सूप जैसे जलयुक्त खाद्य पदार्थ लें
* अत्यधिक चाय, कॉफी और मीठे पेय कम करें
* मूत्र का रंग देखें — हल्का पीला रंग सही हाइड्रेशन का संकेत है

निष्कर्ष पर्याप्त पानी पीना केवल अच्छी आदत नहीं — यह हृदय की सुरक्षा है। यह सुधार करता है:

* रक्त प्रवाह
* रक्तचाप
* हृदय की कार्यक्षमता
* संपूर्ण मेटाबॉलिक स्वास्थ्य

हाइड्रेशन हृदयाघात और हृदय रोगों की रोकथाम का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है। यह सरल है, सुरक्षित है, लगभग निःशुल्क है और विज्ञान द्वारा प्रमाणित है।

* आज की भागदौड़, तनावपूर्ण और निष्क्रिय जीवनशैली में पानी पीना एक छोटी आदत है — लेकिन इसका प्रभाव जीवनरक्षक हो सकता है।

आज से ही पर्याप्त पानी पीने को अपनी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा बनाइए — आपका दिल आपको धन्यवाद देगा।

# बादाम के हेल्दी फायदे.

पिंकी कुंडू

1. सुबह भीगे हुए बादाम खाने से उनमें ज़्यादा मेडिसिनल गुण होते हैं। पानी में भीगे हुए बादाम सूखे बादाम से ज़्यादा न्यूट्रिशियस होते हैं।

2. बादाम खाने से सर्दी-ज़ुकाम कम होता है। रात को सोते समय भीगे हुए बादाम और गर्म दूध पीने से सर्दी-ज़ुकाम कम होता है।

3. बादाम कुछ देर के लिए भूख मिटाते हैं।

4. डाइटिंग करने वाले लोग ज़्यादा बादाम खाते हैं। जब डाइटिंग करने वाले लोग भूख महसूस करते हैं, तो वे दूसरी

खाने की चीज़ों के मुकाबले 12 बादाम ज़्यादा खाते हैं। ये बारह बादाम नाश्ते का काम करते हैं।

5. बादाम न्यूट्रिएंट्स देते हैं और कैलोरी नहीं बढ़ाते।

6. डायबिटीज़ वाले लोग बादाम खाने से अपना शुगर लेवल कंट्रोल में रखते हैं।

7. रिसर्च के दौरान यह साफ़ हुआ कि रोज़ मुट्ठी भर बादाम खाने से दिल की बीमारियाँ कम होती हैं। बादाम खाने से दिल की ब्लड वेसल में ब्लड फ्लो बेहतर होता है।

8. बादाम में कॉपर ज़्यादा होता है। जो खून साफ़ करने में काम आता है।

9. बादाम ड्राई स्किन वालों की स्किन का ऑयल बढ़ाने में मदद करते हैं।

10. बादाम खाने से बाल झड़ने की दर भी कम होती है।

## हृदय स्वास्थ्य पर नवीनतम शोध और विकास आधुनिक कार्डियोलॉजी में हाइड्रेशन को अब हृदय सुरक्षा का अहम स्तंभ माना जा रहा है:

नए शोध क्षेत्र: रक्त की गाढ़ेपन सूचकांक (Blood Viscosity Index) को स्वतंत्र हृदय जोखिम कारक माना जा रहा है। हाइड्रेशन और प्लाक स्थिरता के बीच संबंध पर अध्ययन हृदय रोग रोकथाम कार्यक्रमों में अब पानी पीने की शिक्षा शामिल

**क्लिनिकल अनुभव:**

* हृदयाघात के मरीजों में अक्सर पुरानी डिहाइड्रेशन पाई जाती है
* कार्डियक रिकवरी और रिहैबिलिटेशन में पर्याप्त हाइड्रेशन से बेहतर परिणाम मिलते हैं

**हृदय स्वास्थ्य के लिए व्यावहारिक पानी पीने के सुझाव**

*दिन भर नियमित अंतराल पर पानी पिएँ
* प्यास लगने का इंतज़ार न करें — प्यास डिहाइड्रेशन का देर से संकेत है
* फल, सब्ज़ियाँ, सूप जैसे जलयुक्त खाद्य पदार्थ लें
* अत्यधिक चाय, कॉफी और मीठे पेय कम करें
* मूत्र का रंग देखें — हल्का पीला रंग सही हाइड्रेशन का संकेत है

निष्कर्ष पर्याप्त पानी पीना केवल अच्छी आदत नहीं — यह हृदय की सुरक्षा है। यह सुधार करता है:

* रक्त प्रवाह
* रक्तचाप
* हृदय की कार्यक्षमता
* संपूर्ण मेटाबॉलिक स्वास्थ्य

हाइड्रेशन हृदयाघात और हृदय रोगों की रोकथाम का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है। यह सरल है, सुरक्षित है, लगभग निःशुल्क है और विज्ञान द्वारा प्रमाणित है।

* आज की भागदौड़, तनावपूर्ण और निष्क्रिय जीवनशैली में पानी पीना एक छोटी आदत है — लेकिन इसका प्रभाव जीवनरक्षक हो सकता है।

आज से ही पर्याप्त पानी पीने को अपनी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा बनाइए — आपका दिल आपको धन्यवाद देगा।

# “आदत से संस्कृति तक, मनुष्य के भीतर बनता हुआ ब्रह्मांड”

पिंकी कुंडू

समय के साथ इंसान की आदतें बदल सकती हैं। शुरुआत में जो चीज़ असहज लगती है, वही धीरे-धीरे सहज हो जाती है। पर जब वही आदत बार - बार दोहराई जाती है, स्वीकृति पा लेती है और व्यक्ति की पहचान का हिस्सा बन जाती है, तब वह केवल आदत नहीं रहती संस्कृति बन जाती है और संस्कृति बदलना, आदत बदलने से कहीं अधिक कठिन होता है।

1. आदत बदलती है, संस्कृति जड़ पकड़ लेती है उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति रोज़ रात देर तक मोबाइल चलाने लगा।

* शुरुआत में यह एक आदत है जो बदली जा सकती है पर वर्षों तक यही क्रम चलता रहे, तो उसका सोचने का तरीका, नींद का चक्र, ध्यान की क्षमता और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उसी के अनुसार ढल जाती हैं।

* अब मोबाइल चलाना केवल आदत नहीं रहा, वह व्यक्ति की जीवन - संस्कृति बन गया। इसीलिए कहा जाता है.....आदत को बदला जा सकता है, पर संस्कृति को तोड़ने के लिए आत्मा तक हिलती है।

2. चाहत, लत और अवचेतन का जाल कोई शराबी शराब क्यों नहीं छोड़ पाता? क्योंकि शराब अब केवल स्वाद या नशा नहीं रही। वह उसका

* दुख में सहारा
* खुशी में साथी
* अकेलेपन में मित्र
* तनाव में दवा बन चुकी होती है।
* अब शराब उसके अवचेतन मन में बस चुकी है।
* वह बिना सोचे हाथ बढ़ा देता है जैसे साँस लेना।

इसी तरह प्रेम में पड़े व्यक्ति को देखिए वह जानता है कि रिश्ता उसे दुख दे रहा है, फिर भी वह छोड़ नहीं पाता।

क्यों? क्योंकि वह व्यक्ति अब उसकी भावनात्मक संस्कृति बन चुका है।

* उसकी सुबह, शाम, सोच, भविष्य सब उसी से जुड़ चुके हैं।
* यहाँ तर्क हार जाता है, क्योंकि लड़ाई चेतन से नहीं, अवचेतन से होती है।

3. जब अवचेतन बदलने की कोशिश होती है, तो पीड़ा क्यों होती है ? जब इंसान किसी गहरी जमी हुई आदत या संस्कृति को बदलने का प्रयास करता है, तो उसे असहनीय पीड़ा होती है। उदाहरणः

* शराब छोड़ते समय शरीर काँपता है
* प्रेम छोड़ते समय सीने में दर्द होता है
* गलत सोच छोड़ते समय खालीपन महसूस होता है क्योंकि
* यह केवल व्यवहार का परिवर्तन नहीं है, यह पहचान के टूटने जैसा अनुभव होता है।

*मन कहता है.. “अगर यह नहीं रहा, तो मैं कौन हूँ ?” यही कारण है कि लोग बदलाव से डरते हैं।

4. इंसान वही दिखता है जो वह करता है इंसान लाख कोशिश कर ले, पर जो उसके भीतर है, वह बाहर आ ही जाता है। उदाहरणः

* कोई व्यक्ति कहता है कि वह शांत है, पर छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ जाता है
* कोई खुद को सच्चा बताता है, पर हर बात में चालाकी झलकती है
* कोई प्रेम का दिखावा करता है, पर उसके व्यवहार में स्वार्थ साफ दिखाई देता है
* क्योंकि अवचेतन अभिनय नहीं करता। वह स्वतः प्रकट हो जाता है। जैसे धुएँ से आग का पता चलता है, वैसे ही व्यवहार से भीतर की संस्कृति सामने आ जाती है।

5. आदत बनाम संस्कृतिः बदलाव का फर्क अगर कोई बुरी आदत है जैसे ज्यादा मीठा खाना, देर से सोना, गुस्सा करना तो वह धीरे-धीरे बदली जा सकती है।

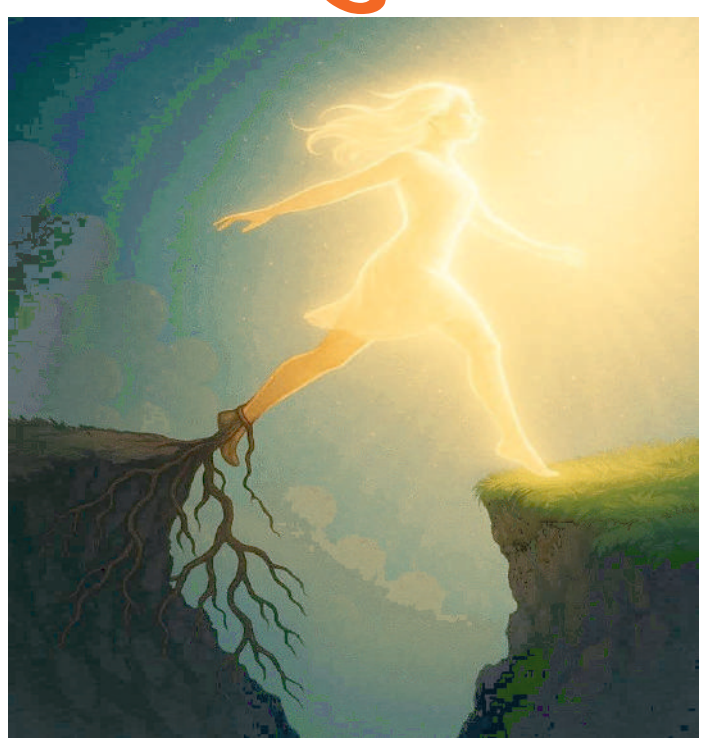

* पर अगर वही आदतः पीढ़ियों से चली आ रही हो व्यक्ति की पहचान बन चुकी हो “मैं ऐसा ही हूँ” का बहाना बन गई हो तो वह संस्कृति बन जाती है।
* वहाँ केवल इच्छाशक्ति काफी नहीं होती वहाँ मार्गदर्शन चाहिए।
* ऐसा मार्गदर्शन जोः
* आपको समझे
* जज न करे
* पूर्वग्रह न बनाए
* आपकी गति से साथ चले
* क्योंकि संस्कृति टूटती नहीं, पुनः ढाली जाती है।

6. कुप्रथा भी संस्कृति कहलाने लगती है समाज में कई कुप्रथाएँ केवल इसलिए चलती रहीं क्योंकि उन्हें “संस्कृति” का नाम दे दिया गया। जैसेः

* भेदभाव
* अंधविश्वास
* हिंसक परंपराएँ
* लोग कहते हैं “हमारे यहाँ ऐसा ही होता है।” ठीक यही बात इंसान अपने भीतर भी करता है।
* वह कहता है “मैं ऐसा ही हूँ, बदल नहीं सकता।” पर सच यह है कि संस्कृति बनी है, जन्म से नहीं थी।

7. हर इंसान के भीतर एक ब्रह्मांड है हर मनुष्य के भीतर एक पूरा ब्रह्मांड है जहाँ उसकी सोच, स्मृतियाँ, डर, इच्छाएँ और संस्कार घूमते रहते हैं। वहाँ भी संस्कृति बनती है।

* अगर वह ब्रह्मांडः
* नकारात्मक विचारों से भरा है
* हिंसक दृश्य देखता है
* असंयमित खान-पान करता है
* अशांत ध्वनियों में रहता है

तो भीतर कचरा जमा होता जाता है और वही कचरा पहले आदत बनता है, फिर संस्कृति।

8. इंद्रियों की जागरूकता ही मुक्ति का मार्ग है आज के समय मेंः

* स्पर्श
* दृश्य
* ध्वनि
* गंध
* स्वाद

हर जगह हमला कर रहे हैं।

अगर इंसान जागरूक नहीं हुआ,

तो वह अनजाने में अपने भीतर वह सब भर लेता है जो उसे धीरे-धीरे खोखला कर देता है। इसलिए कहा गया है जो तुम ग्रहण करते हो, वही तुम बनते हो। पहले वह आदत बनता है, फिर संस्कृति।

निष्कर्ष इंसान बदल सकता है पर इसके लिए उसे यह समझना होगा कि वह किस स्तर पर बदलाव चाहता हैः

आदत पर या संस्कृति पर।

* आदत समय से बदलती है,
* संस्कृति समझ, करुणा और सही मार्गदर्शन से।
* और सबसे ज़रूरी बात
* अपने भीतर क्या जमा हो रहा है, इस पर सजग रहना क्योंकि भीतर का ब्रह्मांड ही बाहर की दुनिया रचता है।

# नवग्रह क्या है? ये हमारे जीवन पर कैसे जबरदस्त असर डालते है

पिंकी कुंडू

आज की generation जब “नवग्रह” सुनती है, तो तुरंत सोचती है — “ये तो superstition है, डराने की बातें हैं।”

पर सच यह है। नवग्रह डर नहीं हैं। वे डिज़ाइन हैं। हिंदू धर्म ने बहुत पहले समझ लिया था कि इंसान के जीवन में 9 core forces काम करती हैंः

सूर्य – आत्मसम्मान, पहचान
चंद्र – मन, emotions
मंगल – हिम्मत, action
बुध – सोचने की शक्ति
गुरु – wisdom, direction
शुक्र – रिश्ते, आनंद
शनि – discipline, consistency
राहु – ambition, craving
केतु – detachment, clarity

जब life disturb होती है, असल में ये forces imbalance हो जाती हैं।

1. Anger बढ़ता है = मंगल uncontrolled होता है
2. Confusion बढ़ता है = चंद्र कमजोर होता है
3. Ego बढ़ता है = सूर्य out of balance होता है
4. Fear बढ़ता है = शनि से भागना

नवग्रह पूजा का मतलब यह नहीं कि “ग्रह बदल जाएँ”। बल्कि यह है कि हम खुद बदलने को तैयार हों। हिंदू धर्म भविष्य नहीं बेचता, चरित्र बनाता है।

नवग्रह =Ancient Indian Life Management System जो आज भी perfectly relevant है।

कभी ध्यान दिया है कि जब जीवन में सब कुछ होते हुए भी मन खाली लगता है, तो समस्या बाहर नहीं होती - भीतर होती है।

ऋषियों ने इस भीतर के संघर्ष को नवग्रहों की भाषा में समझाया।

**रामायण को देखो-ः**

* राम जी का सूर्य तेज था, पर अहंकार नहीं।
* सीता जी का चंद्र कोमल था, पर दुर्बल नहीं।
* लक्ष्मण का मंगल प्रचंड था, पर क्रूर नहीं।
* हनुमान जी का गुरु मजबूत था, इसलिए शक्ति दिशा में थी।
* और रावण ? उसके पास सूर्य था, मंगल था, बुध था पर शनि को उसने शत्रु मान लिया। अनुशासन से भागा। विवेक को नकारा। राहु ने उसे ambition दिया, पर केतु नहीं था — इसलिए वैराग्य नहीं आया। यही कारण था कि वह जीतकर भी हार गया।

नवग्रह हमें यह नहीं बताते कि “क्या बुरा होगा”। वे बताते हैं कि कहाँ सुधार करना है।

1. शनि कहता है — “भाग मत, टिक।”
2. गुरु कहता है — “सीख, वरना शक्ति विनाश बनेगी।”
3. शुक्र याद दिलाता है — “आनंद लो, पर उसमें डूबो मत।”
4. केतु फुसफुसाता है — “सब कुछ तुम्हारा नहीं है।”

हिंदू धर्म ने कभी ग्रहों से डरना नहीं सिखाया, उसने सिखाया —अपने भीतर झाँकना।

1. जो अपने चंद्र को समझ ले, वह रिश्तों में नहीं टूटता।
2. जो अपने मंगल को साध ले, वह ग़ुस्से में नहीं बहता।
3. जो अपने शनि को स्वीकार कर ले, वह जीवन की परीक्षा में टिक जाता है।

नवग्रह बाहर नहीं हैं। वे हमारे भीतर हैं। और जो अपने भीतर का आकाश समझ लेता है, उसे जीवन का कोई ग्रह डरा नहीं सकता।

# घर / कार्यालय और स्वयं की नकारात्मक ऊर्जा जाँचने के शास्त्रसम्मत, सुरक्षित और स्वयं करने योग्य उपाय

पिंकी कुंडू



घर की नकारात्मक ऊर्जा जाँचने के शास्त्रसम्मत, सुरक्षित और स्वयं करने योग्य उपाय दिए जा रहे हैं। इनमें कोई हानि-कारक तंत्र नहीं है — ये केवल ऊर्जा की स्थिति पहचानने के संकेत हैं।

**1. कपूर जाँच विधि (सबसे सरल व प्रभावी)**

* विधि
* शाम के समय (सूर्यास्त के बाद)
* घर के मध्य भाग में
* एक चाँदी या स्टील की कटोरी में कपूर जलाएँ
* संकेत
* कपूर पूरी तरह साफ जल जाए ⟶ ऊर्जा सामान्य
* कपूर बार-बार बुझ जाए / धुआँ अधिक हो ⟶ नकारात्मकता
* काला धुआँ या चटकना ⟶ भारी नकारात्मक ऊर्जा

**2. नमक जाँच विधि (24 घंटे की) विधि**

* एक काँच की कटोरी में सेंधा नमक भरें
* इसे सोने के कमरे या बैठक में रखें
* 24 घंटे बाद देखें
* संकेत
* नमक वैसा ही रहे ⟶ नकारात्मकता कम
* नमक गीला / पिघला / चिपचिपा ⟶ नकारात्मक ऊर्जा
* बदबू आए ⟶ तुरंत उपाय आवश्यक
* नमक को बाद में घर से बाहर बहते जल में प्रवाहित करें

**3. दीपक लौ परीक्षण**

* विधि
* सरसों या गाय के घी का दीपक
* बिना हवा वाले स्थान पर जलाएँ
* संकेत
* लौ स्थिर ⟶ ऊर्जा शुद्ध
* लौ नाचती / टेढ़ी ⟶ मानसिक अशांति
* काली कालिख ⟶ नकारात्मक प्रभाव

**4. तुलसी पत्ता परीक्षण (प्राचीन विधि)**

* विधि
* एक ताज़ा तुलसी पत्ता घर के मंदिर में रखें
* संकेत (24 घंटे में)
* हरा रहे ⟶ शुभ ऊर्जा
* सूख जाए / काला हो ⟶ नकारात्मकता
* गिर जाए ⟶ वास्तु दोष या अशांति

**5. बच्चों व पशुओं का व्यवहार (प्राकृतिक संकेत)**

* संकेत
* बच्चों का अकारण डरना / रोना
* पालतू कुत्ते का एक जगह देखकर भौंकना
* बिल्ली का बार-बार किसी कोने से भागना
* यह सब सूक्ष्म नकारात्मक ऊर्जा के संकेत हो सकते हैं

**6. स्वप्न व नींद संकेत**

* बार-बार डरावने सपने
* नींद में घबराहट
* सुबह उठते ही भारीपन
* घर की ऊर्जा असंतुलित होने का संकेत

**7. मंत्र कंपन परीक्षण (उच्च स्तर का)**

* विधि घर में बैठकर ज़ोर से बोलेंः ॐ नमः शिवाय
* संकेत
* मन शांत हो ⟶ ऊर्जा ठीक
* घुटन, बेचैनी ⟶ नकारात्मकता
* आवाज भारी लगे ⟶ शुद्धि आवश्यक

**यदि नकारात्मकता पाई जाए तो त्वरित उपाय**

* रोज़ संध्या कपूर जलाएँ
* शनिवार को झाड़ू में नमक डालकर घर साफ करें
* उत्तर-पूर्व में गंगाजल छिड़काव
* रोज़ 1 बार हनुमान चालीसा या शिव मंत्र का जाप

# कालाष्टमी कब मनाई जाएगी

पिंकी कुंडू

कालाष्टमी के दिन भगवान शिव के विग्रह रूप काल भैरव भगवान की पूजा की जाती है, हर मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को कालाष्टमी मनाई जाती है। इस शुभ अवसर पर भगवान काल भैरव की भक्ति भाव से पूजा की जाती है। भगवान काल भैरव की उपासना से भय से मुक्ति, आत्मविश्वास और जीवन में स्थिरता प्राप्त होती है। 10 जनवरी को सुबह 08 बजकर 23 मिनट पर माघ माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि शुरू होगी। वहीं, 11 जनवरी को सुबह 10 बजकर 20 मिनट पर अष्टमी तिथि का समापन होगा। इस प्रकार 10 जनवरी को कालाष्टमी मनाई जाएगी।

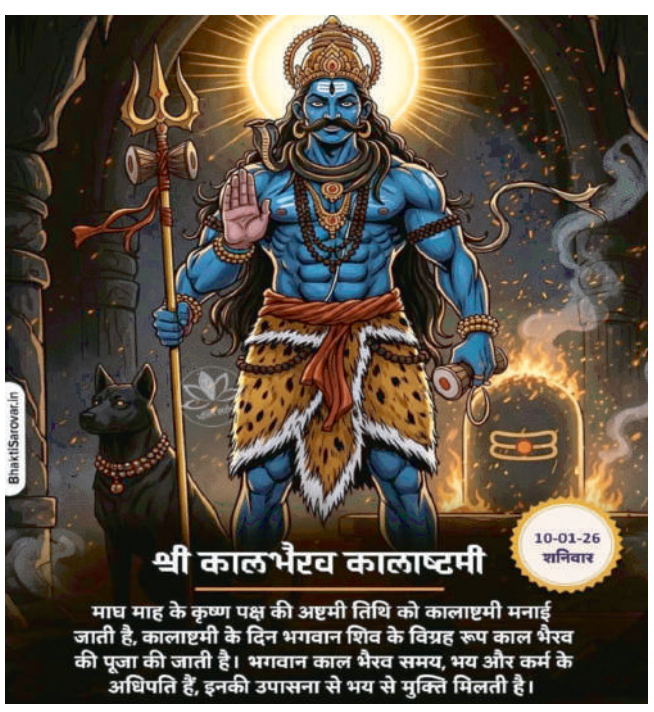




# रामप्पा मंदिर तेलंगाना, एक ऐसी जगह जहाँ भक्ति और कला का संगम होता है,

पिंकी कुंडू

ध्यान से देखें और समझें आज मैं आपको एक ऐसे मंदिर के बारे में बताना चाहती हूँ जो अपने आप में एक अनमोल विरासत है, शिल्प कौशल और वास्तुकला का एक ऐसा उदाहरण जो दिखाता है कि 900 साल पहले भी हमारे बीच ऐसे लोग थे जिनके पास रसायन विज्ञान, इंजीनियरिंग और शिल्प कौशल का अद्भुत ज्ञान था।

शब्द इस मंदिर का पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकते, क्योंकि जब आप वहाँ जाकर हर एक मूर्ति और उसकी संरचना को देखेंगे, तो आप सोचने पर मजबूर हो जाएँगे।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैं आज आपको बताने जा रही हूँ, वह यह है कि इस मंदिर के अंदर दुनिया के सबसे कठोर पत्थर, बेसाल्ट चट्टान का इस्तेमाल किया गया है। इसे दुनिया के सबसे कठोर पत्थरों में से एक माना जाता है। कहा जाता है कि इसे बिना सही मशीनरी के काटा नहीं जा सकता। इसे केवल रसायन विज्ञान के उचित ज्ञान और सटीक गणितीय मापों के साथ-साथ उच्च - प्रौद्योगिकी उपकरणों से ही काटा जा सकता है, और फिर एक उत्तम मूर्ति बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

**लेकिन सवाल यह हैः**

* क्या 900 साल पहले इस तरह के उपकरण उनके पास उपलब्ध थे ?
* क्या उनके पास वैसे ही उपकरण थे जैसे आज हमारे पास हैं, जैसे डायमंड कटर या तापमान - नियंत्रित उपकरण ?

मंदिर के आँगन में, अगर आप ऊपर की ओर देखेंगे, तो आपको छत दिखाई देगी। जब आप छत को ध्यान से देखेंगे, तो आपको 100 से ज़्यादा खूबसूरती से बनी मूर्तियाँ मिलेंगी, जो सभी बेसाल्ट चट्टान से बनी हैं।

आगे, आपको मंदिर के खंभे और नर्तकियों की कुछ मूर्तियाँ मिलेंगी, जिनके हाथों में वाद्य यंत्र पकड़े हुए और ऊँची एड़ी वाले जूते पहने हुए दिखाया गया है और यह सभी भी बेसाल्ट चट्टान से बनी हैं।

आपको इस मंदिर में ऐसी अनगिनत मूर्तियाँ मिलेंगी कई जगहों पर इसे ₹तैरता हुआ पत्थर₹ भी कहा जाता है।

यह 900 साल पुराना चमत्कार ना केवल अपनी जटिल नक्काशी और शानदार मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि अपनी अनोखी तैरती हुई ईंटों के लिए भी प्रसिद्ध है, जो आज भी गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देती हैं और आगंतुकों को प्रेरित करती हैं।

मंदिर के मनमोहक खंभे, विस्तृत कथात्मक मूर्तियाँ और पौराणिक चित्रण एक लुभावनी दृश्य प्रस्तुत करते हैं, जो इसे इतिहास और कला प्रेमियों के लिए अवश्य देखने योग्य बनाते हैं।

जब राजा ने इस मंदिर को बनवाने का आदेश दिया और इसके मूर्तिकार ने काम पूरा किया, तो राजा इतने चकित और प्रसन्न हुए कि उन्होंने मंदिर का नाम उस मूर्तिकार के नाम पर रामप्पा मंदिर रख दिया।

मंदिर का एक और नाम भी है, रामलिंगेश्वर मंदिर। यह शायद दुनिया का एकमात्र मंदिर है जिसका नाम अंदर रहने वाले देवता के नाम पर नहीं, बल्कि इसे बनाने वाले मूर्तिकार 'रामप्पा' के नाम पर रखा गया है।

2021 में, रामप्पा मंदिर को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

रामप्पा मंदिर के अतीत में कदम रखें और तेलंगाना की शानदार वास्तुकला विरासत को देखें - एक ऐसी जगह जहाँ

भक्ति और कला का संगम होता है।

रामप्पा मंदिर तेलंगाना राज्य में वारंगल शहर के पास पालमपेट गाँव में स्थित है।

# सड़क सुरक्षा कार्यक्रम तथा प्रतिभा खोज परीक्षा की तैयारी को लेकर संस्था की 17वीं बैठक संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

आज माँ कामाख्या ग्रामोत्थान ट्रस्ट की 20 वीं बैठक उपाध्यसागर में संपन्न हुई ।आज के बैठक में संस्था से जुड़े लगभग दस से बारह लोग उपस्थित हुए ।सर्वप्रथम आज के इस बैठक में यह जानकारी दी गई कि पूर्व में भी संस्था के द्वारा वार्षिक कार्यक्रम की जिम्मेदारी श्री धर्मेंद्र शर्मा को जब जब दी गई है तब तब उस जिम्मेदारी को उन्होंने सम्यक तरीके से निर्वहन किया है सफलतम तरीके से कार्यक्रम संपादित कराने के लिए श्री धर्मेंद्र शर्मा जी को बधाई दिया गया साथ ही आगामी आठ जनवरी को संस्था द्वारा कार्यक्रम आयोजित है जैसे अंतरविद्यालय प्रतिभाखोज प्रतियोगिता परीक्षा ,कंबल साड़ी वितरण दिव्यांग सम्मान आदि के लिए पुनः धर्मेंद्र शर्मा को ही नामित किया जाए जिससे दिव्यांग एवं निः शक्तजनों को आमंत्रित कर ससम्मान उनको आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जा सके ।

संस्था द्वारा आयोजित प्रतिभा खोज प्रतियोगिता परीक्षा के संयोजक श्री धर्मेंद्र शर्मा जी ने पूछने पर यह जानकारी दी कि जनवरी माह में 8 तारीख को आयोजित संस्था के वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है जो निम्नवत है सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा पर विशेष जागरूकता कार्यशाला एवं सफल प्रतिभागियों में हेलमेट वितरण कंबल साड़ी वितरण कार्यक्रम किया जाएगा

उक्त बैठक में यह बात भी निकाल कर आई कि इस बार लगभग 400 कंबल एवं 400 साड़ी वितरण कार्यक्रम की व्यवस्था है ।कंबल साड़ी वितरण के अंतर्गत यह ध्यान देने योग्य बात होगी कि प्रति वर्ष एक ही व्यक्ति को कंबल आदि ना दिया जाए बल्कि जरूरतमंद व्यक्तियों को वरीयता देना चाहिए ।प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में इस बार लगभग 1000 बच्चे भाग ले रहे हैं। सभी के लिए कॉपी पेन पेंसिल रबर कटर स्कूल बैग आदि की व्यवस्था है ।प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र को एजुकेशनल ग्लोब, स्कूल बैग ,मेडल,प्रमाण पत्र आदि देखकर उत्साहवर्धन किया जाएगा इसके साथ ही रोड सेफ्टी चुकि वर्तमान में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जनवरी माह को सड़क सुरक्षा माह के रुप में मनाया जा रहा है ।

प्रति वर्ष के तरह सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा जागरूकता कार्यशाला का आयोजन प्रश्नोत्तरी के माध्यम से संपादित किया जाएगा ।इसमें प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सड़क सुरक्षा वाले छात्रों को प्रमाण पत्र, हेलमेट , अन्य सभी पाठ्य सामग्री ,स्कूल बैग सहित देकर के उत्सवर्धन और प्रोत्साहित किया जाएगा। उक्त बैठक के दौरान माननीय अध्यक्ष ने प्रस्ताव रखा कि प्रतिवर्ष जिस संस्था या जिस व्यक्ति के द्वारा पाठ्य सामग्री स्कूल बैग इत्यादि उपलब्ध कराया जाता है जैसे कॉपी पेन पेंसिल रबर कटर स्कूल बैग की तैयारी उसे व्यक्ति या उस संस्था को भी अलग से संस्था द्वारा धन्यवाद पत्र जरूर प्रेषित किया जाना चाहिए।

परीक्षा में सम्मिलित होने वाले सभी प्रतिभागी को नाश्ता,भोजन की व्यवस्था पीने का पानी उपलब्ध कराया जाएगा।

यह संपूर्ण कार्यक्रम पूर्णतः निशुल्क होता है। अगल बगल के जनपद के काफी संख्या में छात्र छात्राएं भाग ले रहे हैं । इस बार पूरे कार्यक्रम में वालंटियर के रूप में छात्राओं को जिम्मेदारी दी गई है।

उनके सहयोग के लिए कुछ एन सी सी और स्काउट की छात्राएं भी उपस्थित रहेंगी। संस्था द्वारा आयोजित आज के इस बैठक में प्रमुख रूप से अमरनाथ उपाध्याय रविन्द्र उपाध्याय, धर्मेंद्र शर्मा,संतोष शर्मा,प्रमोद उपाध्याय,कुंदन सिंह ,रमेश सिंह,मनु यादव,सोनू, मनीष ,अमित,अतुल,अजीत आदि लोग उपस्थित थे।

## विश्व हिंदी दिवस विशेष: हिंदी केवल भाषा नहीं, चेतना है

भाषाएँ केवल शब्दों का अनुशासित क्रम नहीं होतीं; वे सभ्यताओं की साँसें होती हैं। उनमें इतिहास की धड़कन, स्मृतियों की परतें, पीढ़ियों की अनुभूतियाँ और सामूहिक चेतना की अनकही कथाएँ बसती हैं। हिंदी भी ऐसी ही एक भाषा है, जो केवल बोलचाल का माध्यम नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की सोच, संवेदना और आत्म-पहचान का आधार है। विश्व हिंदी दिवस हमें यही याद दिलाने आता है कि हिंदी किसी भूगोल की सीमाओं में कैद नहीं, बल्कि एक जीवंत, विस्तृत और वैश्विक उपस्थिति वाली भाषा है, जो महाद्वीपों के पार लोगों के जीवन में रची-बसी है। आज का संसार गति, तकनीक और उपभोक्तावाद की तेज़ रफ़्तार से संचालित हो रहा है। इस दौड़ में भाषाएँ भी बाज़ार और सत्ता की कसौटी पर परखी जा रही हैं। अंग्रेज़ी ने वैश्विक संवाद, शिक्षा और रोज़गार के क्षेत्र में अपनी मजबूत स्थिति बना ली है। इसमें कोई संदेह नहीं। पर समस्या अंग्रेज़ी के विस्तार में नहीं, बल्कि हिंदी के संकुचन में है। जब हम अनजाने में यह मान लेते हैं कि ज्ञान, आधुनिकता और प्रगति केवल अंग्रेज़ी की देन है, तब हम हिंदी को भावनाओं, घर-आँगन और अतीत तक सीमित कर देते हैं। यही वह बिंदु है, जहाँ हिंदी के सामने सबसे बड़ी चुनौती खड़ी होती है। हिंदी की आत्मा उसकी सहजता और मानवीय संवेदनशीलता में बसती है। यह भाषा बिना बोझिल हुए, बिना जटिल हुए, मनुष्य के भीतर के सबसे कोमल और सबसे तीखे भावों को अभिव्यक्त कर सकती है। प्रेम यहाँ केवल भावना नहीं, अनुभव बन जाता है; पीड़ा केवल शिकायत नहीं, चेतना बन जाती है; विद्रोह केवल शोर नहीं, विचार बनकर सामने आता है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य केवल सौंदर्य का संसार नहीं रचता, बल्कि समाज से संवाद करता है। प्रेमचंद ने शोषण और नैतिकता को आम जन की भाषा में रखा, महादेवी वर्मा ने स्त्री-वेदना को करुणा का स्वर दिया, निराला ने व्यवस्था से टकराने का साहस दिखाया, और हरिवंश राय बच्चन ने साधारण मनुष्य के असाधारण संघर्ष को शब्द दिए। पर विडंबना यह है कि आज हम उसी हिंदी को सीमित कर रहे हैं जिसने हमें सोचने की भाषा दी। नई पीढ़ी हिंदी से इसलिए दूर नहीं हो रही कि वह हिंदी को समझ नहीं पाती, बल्कि इसलिए कि हमने उसे यह भरोसा नहीं दिया कि हिंदी में भी भविष्य सुरक्षित है। जब विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, प्रबंधन और शोध जैसे क्षेत्रों में हिंदी की उपस्थिति नगण्य हो, तब भाषा धीरे-धीरे केवल भावनात्मक विकल्प बनकर रह जाती है। भाषा का यह भावनात्मककरण उसकी शक्ति को कमज़ोर करता है। क्योंकि भाषा तब तक जीवंत रहती है, जब तक वह जीवन के हर क्षेत्र में समान अधिकार से मौजूद हो। विश्व हिंदी दिवस का महत्व इसी प्रश्न से जुड़ा है। यह दिवस केवल मंचों पर भाषण देने, कविताएँ पढ़ने या औपचारिक प्रशंसा करने का अवसर नहीं, बल्कि आत्मावलोकन का क्षण है। हमें यह पूछना होगा कि क्या हम हिंदी को केवल प्रतीकात्मक सम्मान दे रहे हैं या वास्तविक अधिकार भी? क्या हम अपने बच्चों को यह सिखा पा रहे हैं कि हिंदी में सोचना, लिखना और शोध करना किसी तरह की बौद्धिक कमी नहीं, बल्कि सशक्त विकल्प है? वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की स्थिति विरोधाभासों से भरी है। एक ओर विश्व के अनेक देशों में हिंदी पढ़ाई जा रही है, प्रवासी भारतीय समुदाय इसे जीवित रखे हुए हैं, संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर हिंदी की उपस्थिति बढ़ी है, और डिजिटल दुनिया में हिंदी सामग्री का विस्तार हुआ है। दूसरी ओर, अपने ही देश में हिंदी कई बार औपचारिकता और अनिवार्यता के बोझ तले दबती दिखाई देती है। सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और वेब मंचों पर युवा हिंदी में नए प्रयोग कर रहे हैं, अपनी भाषा गढ़ रहे हैं। यह संकेत है कि हिंदी थमी नहीं है, बल्कि रूप बदल रही है। पर यदि यह परिवर्तन दिशाविहीन रहा, तो भाषा की गहराई खो सकती है। इसलिए आवश्यक है कि हिंदी को भावनाओं की भाषा से आगे बढ़ाकर ज्ञान और आधुनिकता की भाषा बनाया जाए। उच्च शिक्षा और शोध में हिंदी माध्यम को केवल विकल्प नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण मुख्यधारा के रूप में स्थापित करना होगा। तकनीकी शब्दावली के अनुवाद से आगे बढ़कर मौलिक हिंदी ज्ञान-सृजन को प्रोत्साहित करना होगा। डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, विज्ञान और वैश्विक संवाद में हिंदी की सहज उपस्थिति सुनिश्चित करनी होगी। अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन केंद्रों को केवल भाषा-शिक्षण तक सीमित न रखकर सांस्कृतिक और बौद्धिक संवाद के केंद्र के रूप में विकसित करना समय की मांग है। साथ ही, समाज की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। भाषा केवल नीतियों से नहीं बचती, वह व्यवहार से जीवित रहती है। घरों में हिंदी का सहज प्रयोग, पत्राचार में हिंदी को प्राथमिकता, सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में हिंदी का सम्मान, और बच्चों में भाषा के प्रति गर्व का भाव ये छोटे कदम मिलकर बड़ी चेतना का निर्माण करते हैं। जब भाषा को हीनता नहीं, आत्मविश्वास का आधार बनाया जाता है, तब पीढ़ियाँ उसे सहजता से अपनाती हैं। अंततः विश्व हिंदी दिवस हमें यह समझाने आता है कि हिंदी केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य की संभावना भी है। यह भाषा तभी सशक्त होगी, जब हम उसे केवल स्मृति नहीं, दृष्टि बनाएँ; केवल सम्मान नहीं, अधिकार दें; और केवल भावना नहीं, विचार का माध्यम मानें। क्योंकि भाषा केवल संवाद नहीं रचती, वह सोच की दिशा तय करती है। और जो समाज अपनी भाषा को सशक्त करता है, वही अपने भविष्य को सार्थक और स्वाभिमानी बनाता है।

**-डॉ. गरिमा भाटी, फ़रीदाबाद, हरियाणा**

संगिनी घोष

# भारत-अमेरिका व्यापार समझौता ठप, विरोधाभासी दावों के बीच आर्थिक तनाव बढ़ा

भारत और अमेरिका के बीच लंबे समय से चल रही व्यापार वार्ताएँ एक बार फिर ठहराव की स्थिति में पहुँच गई हैं, जहाँ दोनों पक्षों के अलग-अलग दावों ने द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों में मौजूद गहरी खींचतान को उजागर कर दिया है। ताज़ा विवाद तब सामने आया जब अमेरिकी वाणिज्य सचिव ने कहा कि वार्ताओं की गति इसलिए धीमी पड़ी क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वह अहम फॉलो-अप कॉल नहीं की, जिसे वाशिंगटन समझौते को अंतिम रूप देने के लिए आवश्यक मान रहा था। भारतीय अधिकारियों ने इस दावे को सिरे से खारिज करते हुए इसे गलत बताया और स्पष्ट किया कि कूटनीतिक व संस्थागत स्तर पर लगातार संवाद होता रहा है। नई दिल्ली के अनुसार, जटिल व्यापार वार्ताओं को केवल एक फोन कॉल तक सीमित करना वास्तविक स्थिति को सही ढंग से नहीं दर्शाता।

प्रस्तावित व्यापार समझौते का इतिहास कई वर्षों पुराना है, जिसे पहले के उच्च-स्तरीय संपर्कों के दौरान गति मिली थी, जब दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने और शुल्क, बाजार पहुंच, कृषि, डिजिटल सेवाओं और प्रौद्योगिकी से जुड़े लंबे समय से लंबित मुद्दों को सुलझाने की मंशा जताई थी। शुरुआती सकारात्मक संकेतों के बावजूद, शुल्क कटौती, घरेलू उद्योगों के संरक्षण और नियामकीय चिंताओं को लेकर मतभेद बने रहे, जिससे प्रगति धीमी हो गई। वर्ष 2025 में हालात तब और बिगड़ गए जब अमेरिका ने कुछ भारतीय निर्यातों पर उच्च शुल्क लगा दिए, जिनका कारण रणनीतिक और आर्थिक मुद्दे बताए गए, जिनमें भारत के ऊर्जा व्यापार से जुड़े फैसले भी शामिल थे।

फिलहाल न तो भारत और न ही अमेरिका ने औपचारिक रूप से वार्ताओं से पीछे हटने का ऐलान किया है, लेकिन आगे की प्रगति न होना दोनों पक्षों में बढ़ती असंतुष्टि को दर्शाता है। जहां वाशिंगटन देरी को लेकर अधीरता जता रहा है, वहीं भारत ने दोहराया है कि कोई भी समझौता संतुलित, परस्पर लाभकारी और राष्ट्रीय आर्थिक प्राथमिकताओं के सम्मान पर आधारित होना चाहिए। विश्लेषकों का मानना है कि यह ठहराव केवल आर्थिक मतभेदों का नहीं, बल्कि कूटनीतिक अपेक्षाओं में अंतर का भी संकेत है, भले ही दोनों देश रक्षा, प्रौद्योगिकी और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अपनी रणनीतिक साझेदारी को मजबूत बताते रहे हों। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच यह गतिरोध इस बात को रेखांकित करता है कि रणनीतिक निकटता को ठोस आर्थिक समझौतों में बदलना अब भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

# हिंदी:भारत की आत्मा से विश्व मंच तक- भाषा, संस्कृति,पहचान और वैचारिक स्वतंत्रता का वैश्विक विमर्श

आज अनेक माता-पिता गर्व से दिखाना चाहते हैं कि उनका बच्चा कितनी धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलता है, छोटी उम्र से अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ाना और हिंदी से दूरी बनाना कहीं न कहीं मानसिक उपनिवेशवाद का प्रतीक
आज क़े डिजिटल क्रांति,कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और वैश्विक संचार युग में तकनीक केवल अंग्रेजी या कुछ चुनिंदा भाषाओं तक सीमित रहेगी,हिंदी ने इस धारणा को तोड़ दिया है- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत की सबसे बड़ी पहचान उसकी भाषाई,सांस्कृतिक और वैचारिक विविधता में निहित है ।विश्व के किसी भी देश में इतनी भाषाएँ, बोलियाँ परंपराएँ व सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ एक साथ सह- अस्तित्व में नहीं पाई जातीं। इस विविधता के महासागर में यदि कोई एक सूत्र है,जो भारत को भावनात्मक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तरपर जोड़ता है, तो वह है हिंदी भाषा। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं,बल्कि भारत की सामूहिक चेतना,स्मृति और संस्कृति की संवाहक है ।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि हिंदीः केवल भाषा नहीं, भावनात्मक सेतु हैं,हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है परंतु इसकी शक्ति केवल संख्या में नहीं,बल्कि संवेदना,आत्मीयता और भावाभिव्यक्ति में निहित है। हिंदी वह भाषा है, जिसमें प्रेम भी सरल है, पीड़ा भी सहज है और प्रतिरोध भी स्वाभाविक ।जहाँ कई भाषाएँ औपचारिक संवाद तक सीमित रहती हैं,वहीं हिंदी व्यक्ति के हृदय से सीधे संवाद करती है। यही कारण है कि ग्रामीण भारत से लेकर शहरी महानगरों तक, साहित्य से लेकर सिनेमा तक और राजनीति से लेकर जनआंदोलनों तक हिंदी की भूमिका केंद्रीय बनी हुई है ।इसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक और वैश्विक महत्व के कारण हिंदी के सम्मान और प्रचार- प्रसार हेतु विशेष दिवस समर्पित किए गए हैं, 14 सितंबर (राष्ट्रीय हिंदी दिवस )और 10 जनवरी (विश्व हिंदी दिवस )।भारत में 14 सितंबर को हिंदी दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया था ।यह निर्णय केवल प्रशासनिक नहीं था,बल्कि यह उस ऐतिहासिक संघर्ष और सांस्कृतिक चेतना का परिणाम था, जिसने औपनिवेशिक शासन की भाषाई विरासत से बाहर निकलकर भारतीय भाषाओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया ।वहीं 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है,जिसका उद्देश्य हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठा दिलाना, वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में स्थापित करना और यह दर्शाना है कि हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं,बल्कि एक वैश्विक भाषा बन चुकी है। यह दिवस भारत की सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है।

साथियों बात अगर हम डिजिटल युग में हिंदीः विरासत से भविष्य की तकनीक तक इसको समझने की करें तोआज का युग डिजिटल क्रांति,कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग और वैश्विक संचार का युग है। लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि तकनीक केवल अंग्रेजी या कुछ चुनिंदा भाषाओं तक सीमित रहेगी, लेकिन हिंदी ने इस धारणा को तोड़ दिया है ।आज हिंदीःसोशल मीडिया की सबसे सक्रिय भाषाओं में से एक है,डिजिटल समाचार, ब्लॉग, पॉडकास्ट और यूट्यूब कंटेंट की प्रमुख भाषा बन चुकी है ।एआई आधारित अनुवाद वॉइस असिस्टेंट और चैटबॉट में तेजी से अपनाई जा रही है ।हिंदी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह पारंपरिक ज्ञान से लेकर अत्याधुनिक तकनीक तक समान रूप से सक्षम है। यही कारण है कि विश्व हिंदी दिवस का एक प्रमुख उद्देश्य डिजिटल युग में हिंदी की प्रासंगिकता और क्षमता को रेखांकित करना है।

साथियों बात अगर हम अंग्रेजी बनाम हिंदी : आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी वैचारिक गुलामी ?इसको समझने की करें तो 1947 में भारत ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन आज भी एक गंभीर प्रश्न हमारे सामने खड़ा है, क्या हम वैचारिक रूप से स्वतंत्र हो पाए हैं ?विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो जाता है कि क्या आज भी अंग्रेजी बोलना सामाजिक प्रतिष्ठा और आधुनिकता का प्रतीक बना हुआ है ? आज अनेक माता- पिता गर्व से यह दिखाना चाहते हैं कि उनका बच्चा कितनी धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलता है। छोटी उम्र से अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ाना और हिंदी से दूरी बनाना कहीं न कहीं मानसिक उपनिवेशवाद का प्रतीक है। हमें अन्य भाषाओं से प्रतिस्पर्धा नहीं,संतुलन की आवश्यकता हैं। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह विमर्श अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा के विरोध का नहीं, बल्कि हिंदी के आत्मसम्मान का है। अंग्रेजी वैश्विक संपर्क की भाषा है, परंतु हिंदी हमारी पहचान की भाषा है ।यदि हम बच्चों को केवल अंग्रेजी में सोचने और सपने देखने के लिए प्रशिक्षित करेंगे, तो वे अपनी जड़ों से कटते चले जाएंगे। समय आ गया है किः हिंदी को शिक्षा, तकनीक और प्रशासन में समान महत्व दिया जाए,बच्चों को हिंदी बोलने, लिखने और सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाए हिंदी को कमतर समझने की मानसिकता को समाप्त किया जाए ।भारत में लगभग 1500 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ हैं, जिनमें से अनेक विलुप्ति के कगार पर हैं। यह संकट केवल भाषाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भी है ।हिंदी का सशक्तिकरण तभी सार्थक होगा, जब वह अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सह- अस्तित्व और सम्मान के सिद्धांत पर आगे बढ़े ।हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में सशक्त बनाते हुए, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत की भाषाई विविधता सुरक्षित रहे।

साथियों बात अगर हम हिंदी और वैश्विक पहचानः संयुक्त राष्ट्र की सातवीं भाषा की ओर इसको समझने की करें तो, भारत सरकार लंबे समय से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की सातवीं आधिकारिक भाषा बनाने के लिए प्रयासरत है ।वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाएँ हैं -अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, अरबी और रूसी ।हिंदी के पक्ष में तर्क अत्यंत मजबूत हैंःयह विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल है ।भारत वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और शांति मिशनों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है ।हिंदी अनेक देशों में पढ़ाई और शोध की भाषा बन चुकी है ।यदि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलता है, तो यह केवल भाषा की जीत नहीं, बल्कि वैश्विक बहुभाषिक लोकतंत्र की जीत होगी।

साथियों बात अगर हम वर्ष में दो बार हिंदी दिवस मनाने के इतिहास को समझनें की करें तो, हिंदी के वैश्विक विस्तार की नींव 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में पड़ी। इस ऐतिहासिक सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। इसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि हिंदी भारत की सीमाओं से बाहर भी जीवंत, प्रासंगिक और प्रभावशाली भाषा है ।इसके बाद हिंदी का वैश्विक आंदोलन और तेज हुआ। वर्ष 2006 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी को औपचारिक रूप से विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। तब से लेकर आज तक भारत के सभी दूतावासों, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों विश्वविद्यालयों और प्रवासी भारतीय समुदायों में यह दिवस पूरे सम्मान के साथ मनाया जाता है।

साथियों बात अगर हम संवैधानिक वैचारिक डिजिटल और तकनीकी दृष्टिकोण से हिंदी भाषा की स्थिति को समझने की करें तो,संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं था बल्कि यह औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति और राष्ट्रीय अस्मिता की पुनर्स्थापना का प्रतीक था। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को संरक्षण और संवर्धन का दायित्व सौंपा गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि लोकतंत्र, समानता और जनभागीदारी की रीढ़ है। स्वतंत्रता के 75 वर्षों बाद भी यदि हिंदी को बोलना या अपनाना हीनता से जोड़ा जाए, तो यह वैचारिक गुलामी का संकेत है। सच्ची स्वतंत्रता तभी पूर्ण होगी जब शासन, शिक्षा और समाज में हिंदी को सम्मान, अवसर और आत्मविश्वास के साथ स्वीकार किया जाए ।डिजिटल युग में हिंदी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह केवल साहित्य या परंपरा की भाषा नहीं, बल्कि भविष्य की तकनीक की भी सक्षम भाषा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता,मशीन लर्निंग,वॉइस असिस्टेंट,ऑटो-ट्रांसलेशन सोशल मीडिया और डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। आज करोड़ों लोग इंटरनेट पर हिंदी में खोज करते हैं, कंटेंट बनाते हैं और संवाद स्थापित करते हैं, जिससे डिजिटल समावेशन संभव हो रहा है। विश्व हिंदी दिवस का मूल उद्देश्य यही है कि हिंदी को तकनीक-विरोधी नहीं, बल्कि तकनीक-सहयोगी भाषा के रूप में स्थापित किया जाए, जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच एक सशक्त सेतु बन सके।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि हिंदी का भविष्य हमारी जिम्मेदारी हैं हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस केवल औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि आत्ममंथन और संकल्प के अवसर हैं। हिंदी का भविष्य किसी सरकारी आदेश से नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना और व्यवहार से तय होगा ।यदि हमः हिंदी में सोचें,हिंदी में गर्व महसूस करें हिंदी को आधुनिक,तकनीकी और वैश्विक बनाएं तो हिंदी न केवल भारत की आत्मा बनी रहेगी, बल्कि विश्व संवाद की सशक्त भाषा के रूप में भी स्थापित होगी ।हिंदी केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य की संभावना है ।आइए,हिंदी को सम्मान नहीं,अधिकार दें।

# श्रीहरिदासबिहारी फाउंडेशन भारत ट्रस्ट द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय श्रीललित महोत्सव में 'श्रीललितबल्लभाचार्य स्मृति सम्मान' से अलंकृत हुए समाजसेवी डॉ. आशीष गौतम

कार्यक्रम में सेवा सत्र के अंतर्गत जरूरतमंदों को वितरित किए गए गर्म वस्त्र

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।** प्रतिष्ठित सेवाभावी संस्था श्रीहरिदासबिहारी फाउंडेशन भारत ट्रस्ट द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय श्रीललित महोत्सव विभिन्न अत्यन्त श्रद्धा और धूमधाम के साथ प्रारंभ हो गया है।जिसके अन्तर्गत प्रथम दिवस प्राचीन श्रीहरिदासपीठ मंदिर में आराध्यसेवा, सम्मान समारोह व सुगम संगीत सभा का आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर इष्टसेवा, सांस्कृतिक संरक्षण एवं समाजोत्थान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने हेतु डॉ. आशीष गौतम को ₹श्रीललितबल्लभाचार्य स्मृति सम्मान₹ से अलंकृत किया गया।उन्हें यह सम्मान ट्रस्ट संस्थापक श्रीहरिदास पीठाधीश्वर आचार्य प्रहलाद बल्लभ गोस्वामी महाराज ने सम्मान पत्र, संस्था का प्रतीक चिन्ह हरित्रयी चित्रपट, अंगवस्त्र, प्रसाद, माला व सत्साहित्य इत्यादि प्रदान किया।

सम्मानित हुए डॉ. आशीष गौतम (चिंटू भैया) ने कहा कि श्रीहरिदास पीठ के अधिष्ठाता निकुंजस्थ श्रीललितबल्लभाचार्यजी महाराज श्रीहरिदासी सम्प्रदाय के ठोस स्तम्भ थे।वे देश, धर्म, संस्कृति व साहित्य के उन्नयन में आजीवन समर्पित रहे।

मुख्य अतिथि मन्दिर हाई पावर्ड कमेटी के सदस्य सेवायत आचार्य दिनेश गोस्वामी एवं विशिष्ट अतिथि अंतरराष्ट्रीय सेवायत परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीहित आचार्य योगेंद्र बल्लभ गोस्वामी ने कहा कि आचार्य ललितजी ने श्रीहरिदासबिहारी महाराज की रसोपासना का व्यापक प्रचार किया।उनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व समाज के लिए आदर्श है। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार आशुकवि आचार्य प्रेम बल्लभ गोस्वामी महाराज ने कहा कि श्रीललितबल्लभाचार्य सादा जीवन उच्च विचार के पर्याय थे।

इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मधुर बिहारी गोस्वामी, प्रमुख समाजसेवी पं. अमित गौतम एडवोकेट (पिंटू भैया), काली मर्दन मंदिर सेवायत मुकेश पुरोहित एवं आचार्य नवल बिहारी गोस्वामी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन विप्रांश बल्लभ गोस्वामी और धन्यवाद ज्ञापन रविंद्र तंवर ने किया।

इससे पूर्व आराध्यप्रभु का विशेष पूजन अर्चन कर भोगराग व श्रृँगारसेवा अर्पित की गई।साथ ही ब्रज ललित कला मंच के संचालक संगीताचार्य तरुण किशोर के संयोजन में सुगम संगीत सभा में आचार्य प्रहलाद स्वामी, देवी प्रतिष्ठा, देवस्य पंडित, राधारमन चक्रवर्ती, गौरव मिश्रा, शशि दीक्षित (हरदोई) ने उच्च स्तरीय संगीत कला प्रदर्शित करते हुए खूब वाहवाही अर्जित की।

महोत्सव के अंतर्गत आयोजित सेवा सत्र में प्राचीन श्रीहरिदास पीठ मंदिर में नगर क्षेत्र के जरूरत नागरिकों को गर्म वस्त्र वितरित किए गए। कड़कडाती ठंड से बचाव हेतु जरूरत लोगों की सेवार्थ श्रीहरिदासबिहारी फाउंडेशन भारत ट्रस्ट परिवार की ओर से प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले शीतकालीन सेवा सत्र के क्रम में इस बार भी अनेक जरूरतमंद लोगों को कंबल, शाल, लेडीज़ व जेंट्स स्वेटर, कैप, मोजा आदि गर्म वस्त्र वितरित किए गए।

महोत्सव में समाजसेवी पंडित दिनेश गौतम (डब्बू भैया), श्रीमती विजयलक्ष्मी गोस्वामी, डॉ. चंद्रलता सिंह, अंबिका बैद, रोहित सहगल, श्रीमती केसर गोस्वामी, श्रीमती सरला अरोड़ा, कु. गुंजन, मुस्कान, निवेदिता, प्रवर्तिका, कीर्ति गौतम, अमित भटनागर, दिनेश गौतम (डब्बू भैया), रविंद्र तंवर, गौरव अग्रवाल, सुमेश भटनागर, लक्ष्मणसिंह, एवं कान्हा सिंह आदि की उपस्थिति विशेष रही।

# ठा. श्रीराधा दामोदर मंदिर में नित्यलीला प्रविष्ट निर्मलचंद्र गोस्वामी महाराज का त्रिदिवसीय दशम तिरोभाव महोत्सव 13 जनवरी से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।**सेवाकुंज क्षेत्र स्थित प्राचीन ठाकुर श्रीराधा दामोदर मंदिर में नित्यलीला प्रविष्ट श्रील जीव गोस्वामी पीठ परम्परा के 14वें पीठाधीश्वर गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायाचार्य निर्मलचंद्र गोस्वामी महाराज ₹पूज्य महाराजश्री₹ का त्रिदिवसीय दशम तिरोभाव महोत्सव 13 से 15 जनवरी 2026 पर्यंत विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि मंदिर की प्रधान सेवायत आचार्या तरुलता गोस्वामी (मां गुसाईं) के पावन सानिध्य में आयोजित होने वाले इस महोत्सव का शुभारंभ 13 जनवरी को सायं 05 बजे मंगल घट स्थापना के साथ होगा।तत्पश्चात वृन्दावन वैष्णव मण्डली के द्वारा शुभाधिवास किया जाएगा।14 जनवरी को प्रातःकाल षट्शिला एकादशी पर पूज्य महाराजश्री की तिरोभाव तिथि के उपलक्ष्य में अखंड श्रीहरिनाम संकीर्तन, समाधि पूजन, छप्पन भोग एवं फूल बंगला आदि के आयोजन सम्पन्न होंगे।इसके अलावा 15 जनवरी को मन्दिर प्रांगण में स्थित पूज्य महाराजश्री समाधि पर राधाकुंड के सन्त काजल कृष्ण दास बाबा महाराज के द्वारा सूचक गान किया जाएगा।तत्पश्चात सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ महोत्सव का समापन होगा।

मंदिर के वरिष्ठ श्रीअंग सेवाधिकारी आचार्य करुण गोस्वामी, आचार्य कृष्ण बलराम गोस्वामी एवं आचार्य पूर्णचंद्र गोस्वामी ने सभी भक्तों-श्रृद्धालुओं से इस महोत्सव में शामिल होने का आग्रह किया है।

## अरावली की पहाड़ियाँ

यह कैसा न्याय प्रिय शासन और कैसी यह आधुनिकता की मुहिम,
विकास की दौड़ में हरीतिमा को बना रहे हो एक क्षेत्र तुम कृत्रिम,
छीन रहे हो अरावली के इर्द-गिर्द फैले राज्यों की शुद्ध हवा पानी,
और तोड़ रहे हो घरौंदा मूक पशु-पक्षियों का बनाकर नई कहानी ।

एक स्वस्थ बीज से पौधे को वृक्ष बनने में लग जाते हैं कितने वर्ष,
झटके से उसी वृक्ष की जड़ों को उखाड़ने चले बिना सोचे निष्कर्ष,
तुम खंजर चला रहे हो माता की छाती पर शर्मशार हुई इंसानियत,
प्रकृति को बेरंग कर मरुस्थल बना रहे हो जो थी बेहद खूबसूरत ।

क्या तुमने बसाया उजाड़ने से पहले एक नया प्राकृतिक संसार,
क्या तुमने सोचा फैसला लेने से पहले "आनंद" मानवता विचार,
कितना दर्दनाक होगा अरावली की पहाड़ियों पर ये नवनिर्माण,
जहाँ से जुड़े है अनेकों जीवों और जनता के भावनात्मक प्राण ।

शायद तुम नहीं जानते हो मरुस्थल में एक हरे पेड़ की भूमिका,
वो कर देता है आग उगलती लपटों से थके हारे बदन को हल्का,
एक हरा वृक्ष भीषण गर्मी में जानलेवा लू के थपेड़ो से रक्षा करता,
और जल की एक-एक बूँद व बारिश के पानी को संजोकर रखता ।

- मोनिका ठागा ₹आनंदर₹, चेन्नई, तमिलनाडु

# दस जनवरी...विश्व हिंदी दिवस
# लचीलेपन में समाहित वसुधैवकुटुम्बकम का संदेसा!

लेखिका- साधना सोलंकी स्वतंत्र पत्रकार

साधना सोलंकी जयपुर,राजस्थान

राष्ट्रीय भाषा हिंदी दिवस 14 सितंबर हिंदुस्तान के नाम समर्पित है, पर 10 जनवरी इसे समूची धरती की बोली बनाए जाने का उपक्रम है। इसे हिंदी भाषा के आत्मसम्मान का उत्सव दिवस कहा जा सकता है, जो दर्शाता है कि भारत में ही नहीं विदेशों में भी हिंदी बोली और समझी जाती है। इस उपलब्धि का कारण इस भाषा का सर्वाधिक लचीलापन है। अर्थात यह दुनिया की हर बोली भाषा में घुलमिल कर बड़ी सहजता से अपनी अभिव्यक्ति दे जाती है। इसमें सहज वैज्ञानिकता ही दरअसल वसुधैवकुटुम्बकम का गहन संदेसा है...

मित्र सखा हमजोली
हर बोली की होली!

विश्व हिंदी दिवस आयोजन की शुरुआत 10 जनवरी 1975 को हूई, जब नागपुर में पहला विश्व हिंदी सम्मेलन मनाया गया। 30 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस तरह यह दिन इसके ऐतिहासिक होने की याद दिलाता है। लगा कि हिंदी केवल हिंदुस्तान की भाषा नहीं, बल्कि वैश्विक संवाद की क्षमता रखने वाली भाषा है।

हिंदी भाषा की विशेषता का कोई जोड़ नहीं। यह संस्कृति, परंपरा, भाव और मौन की अभिव्यक्ति का असरदार जरिया है। कहीं यह मां की ममता से लबालब मीठी लोरी सी है तो कहीं पिता की जिम्मेदारी सी! गुरु का अनुशासन भी इसमें झलकता है तो अंग्रेजी, उर्दू, बांग्ला, तमिल, पंजाबी आदि से हमजोली होने का मित्र सखा भाव भी! आंदोलन की क्रांति की आग भी यह लिए है।

महक वसुंधरा की!

इसके महत्व को समझने, योगदान को सम्मानित करने और दुनियाभर में इसे प्रचारित प्रसारित करने के लिए ही दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के नाम किया गया।

हिंदी अब सीमा बंधन से मुक्त, महाद्वीपों में अपने कसीदे पढ़ रही है। जब कोई परदेसी हिंदी में नमस्कार कहता है, तो वह हमारी संस्कृति सभ्यता को स्वीकार सम्मानित करता है।

धरोहर यह परंपरा की
महक यह वसुंधरा की
भविष्य की संभावना...
बारिश मरुधरा की!
अपना बहाव, अपनी गति

विश्व स्तर पर हिंदी की बात करें तो हिंदी 190 से ज्यादा देशों में बोली और समझी जाती है।

संयुक्त राष्ट्र सहित कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सुनी जाती है।

बॉलीवुड, ओटीटी, डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया में इसका अपना बहाव, अपनी गति है।

प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को विश्व के विविध देशों में रोपा और विस्तार दिया।

विदेशों में लगातार हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ रही है। UN में यह चर्चा का विषय बनी। दूतावासों में आयोजन इसकी पहुंच और सम्मान पर मोहर लगाते हैं।

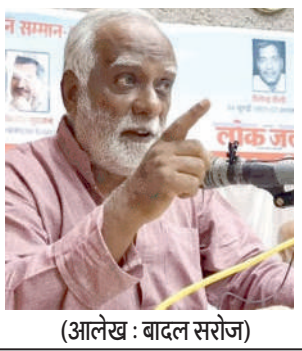

(आलेख : बादल सरोज)

# संघ प्रमुख के दावे : कुल्हाड़ियों से छेद और तलवार से तुरपाई की चतुराई

एक मित्र हुआ करते थे, जो संघी थे, लेकिन बुद्धिहीन भक्त नहीं थे। एक तो वर्किंग क्लास से थे, दूसरे पढ़ते-लिखते भी थे। संघ की भुजा भाजपा में काफी बड़े पद पर रहे और एक बार लिखा-पढ़ी में साफगोई दिखाने की जुर्रत कर दी, तो 'जो कभी नहीं भूलता, जो कभी माफ़ नहीं करता' के गुण वाले ब्रह्मा की नजर ऐसी टेढ़ी हुई कि बाद में हाशिये पर भी धकेल दिए गए। हाल ही में स्मृति शेष हुए इस मित्र ने पहले और आज के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अंतर के बारे में बतियाते हुए एक मार्के की बात बोली थी। उन्होंने कहा कि एक फर्क तो यही है कि पहले सरसंघचालक साल भर में बस एक बार, दशहरे के दिन, बोला करते थे। आजकल महीने में दस दिन से कम नहीं बोलते। इसमें कोई शुबहा नहीं कि कम बोलने के कुछ फायदे हैं, तो ज्यादा बोलने के ज्यादा नुकसान भी हैं। खासकर तब, जब 'साफ़ छुपना भी न हो, सामने आना भी न हो' की स्थिति हो, तब तो जोखिम और भी अधिक हो जाते हैं। मौजूदा सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के साथ इन दिनों ऐसा ही हो रहा है। वे जिस तरफ ढील देने की कोशिश करते हैं, उधर बात खिंच जाती है, जिसे समेटना चाहते हैं, वह खुलकर इत्ती फैल जाती है कि 'बंद मुट्ठी थी खरा कलदार था, ऐसे बिखरे पैसे पैसे हो गए' की गति को प्राप्त हो जाती है। इन दिनों शताब्दी वर्ष चल रहा है और शायद यह फैसला भी हुआ है कि वे स्वयं बगिया-बगिया घूमेंगे और बसंत बरपाएंगे भी, बगरायेंगे भी।

नई साल के दूसरे दिन 2 जनवरी को भोपाल में 'सौ का संघ' की श्रृंखला में उन्होंने प्रस्थापना दी कि संघ को भाजपा या विश्व हिंदू परिषद के नजरिए से देखना एक बहुत बड़ी भूल है, क्योंकि ये सभी संगठन पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से अपना कार्य करते हैं और संघ किसी को भी रिमोट कंट्रोल से नहीं चलाता है। संघ का प्राथमिक उद्देश्य समाज की सेवा करना है, न कि राजनीति की दिशा तय करना। अपने हिसाब से बात को और साफ़ करते हुए उन्होंने कहा कि संघ का मूल उद्देश्य राजनीति में हस्तक्षेप करना या सत्ता और टिकटों का वितरण करना नहीं है। संघ का एकमात्र लक्ष्य समाज की गुणवत्ता में सुधार करना और प्रत्येक नागरिक का चरित्र निर्माण करना है। उन्होंने संघ को एक अर्धसैनिक संगठन - पैरा मिलिट्री फोर्स - के रूप में देखे जाने को गलत बताया। वे बोले कि संघ में स्वयंसेवकों का वर्दी पहनना, मार्च निकालना और लाठी का अभ्यास करना केवल अनुशासन और शारीरिक प्रशिक्षण का एक हिस्सा है और इसे किसी सैन्य संगठन की तरह समझना एक बड़ी गलतफहमी है। संघ केवल व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है, जो आगे चलकर राष्ट्र की सेवा करते हैं।

सरसंघचालक ने हिंदू पहचान को भारत की सबसे बड़ी शक्ति और एकता का आधार बताया। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न मत, पंथ, संप्रदाय, भाषाएं और जातियां हो सकती हैं, लेकिन हिंदू पहचान हम सभी को एक अटूट सूत्र में पिरोती है। अब ये हिन्दू कौन है? इस दुविधा को वे स्वयं इसी श्रृंखला में 19 नवंबर 25 को गुवाहाटी में दिये गए प्रबोधन में बता चुके थे। यहाँ उन्होंने एक बार फिर कहा था कि भारत में रहने वाला हर शख्स हिंदू है। उसका धर्म या जेंडर कुछ भी हो, लेकिन वह मूल रूप से हिंदू ही है। उन्होंने कहा कि 'हिंदू' कोई सीमित धार्मिक शब्द नहीं, बल्कि हजारों साल पुरानी संस्कृति और सभ्यता की पहचान है, जो हम सबको सबको जोड़ती है। इसे और सरल बनाने के लहजे में उन्होंने कहा कि 'अगर मुसलमान और ईसाई भी अपनी पूजा-पद्धति और परंपराएं बनाए रखते हुए इस देश का सम्मान करते हैं, भारतीय संस्कृति का पालन करते हैं और भारतीय पूर्वजों पर गर्व करते हैं, तो वे भी हिंदू माने जाएंगे। असली पहचान धार्मिक प्रथाओं से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निष्ठा से बनती है।' उनके इस सार्वजनिक कथन की थोड़ी और गहराई से खुदाई करें तो और भी दिलचस्प विस्तार मिलता है। इस बार छपे हुए में नहीं, बाकायदा लाइव वीडियो में वे स्वयं मराठी उच्चारणयुक्त हिंदी में बताते दिखते हैं कि भारत (वे हिन्दुस्थान का शब्द वापरते हैं) में रहने वाले सभी हिन्दू हैं। कोई नौ वर्ष पहले दिल्ली के विज्ञान भवन में दिए अपने संबोधन में वे स्थापना देते हैं कि ₹बिना अपनी पूजा पद्धत्ति, खानपान, श्रद्धा को बदले वे हिन्दू हैं। सब हमारे भाई हैं।" इसी रौ में उन्होंने बोला कि 'जो भी विविधताएं हैं, वे कुटुंब की विविधताएं हैं – और ये विविधताएं सिर्फ सहन करने लायक ही नहीं हैं, बल्कि हमको (मतलब संघ को) स्वीकार हैं, मान्य हैं।'

अब हाथ कंगन को आरसी क्या? उनके कहे की सचाई को उन्ही की कसौटी पर जांच लेते हैं। भोपाल में संघ सुप्रीमो संघ के बारे में एक गलत नैरेटिव बनाए जाने से दुखी थे। उनका कहना था कि लोग मूल स्रोतों तक जाने के बजाय अधूरी या गलत जानकारियों पर भरोसा कर लेते हैं, जिससे भ्रम फैलता है। उन्होंने बताया कि संघ के बारे में सही जानकारी उन्हीं को मिलेगी, जो प्रामाणिक स्रोतों से उसे समझने का प्रयास करेंगे। जिन मूल स्रोतों की वे बात कर रहे हैं, उनके शिरोमणि विचारकों के अब तक माने जाने वाले सिद्धांतों की विवेचना और इस बार सौ वर्ष के संघ के पूरे सौ बरस के अपरिवर्तित चाल, चरित्र और चेहरे की मीमांसा अनेकानेक बार करते ही रहे हैं – और सच्ची बात तो यह है कि इन मूल स्रोतों में से कोई भी उनकी बात की ताईद करने वाला नहीं है। इसलिए इनमें जाने की बजाय और हाल के कुछ 'कामों' पर ही नजर डाल लेते हैं।

यदि सचमुच में 'बिना अपनी पूजा पद्धत्ति, खानपान, श्रद्धा को बदले वे हिन्दू हैं। सब हमारे भाई हैं।", तो अकेले 2025 में हुई भीड़ हत्याओं के 14 मामलों में अखलाकों और जुनैदों के जो 8 भाई मार दिए गए, वे किसके भाई थे? पालघाट में बांग्लादेशी बताकर जिस प्रवासी मजदूर रामनारायण को पीट-पीट कर मार डाला गया, वह किसका भाई था? बुलंदशहर का पुलिस अधिकारी सुबोध कुमार सिंह तो गोपन और ओपन दोनों ही हिसाब से पक्का भाई था – उसके साथ जो हुआ, वह करने वाले किसके भाई थे? देहरादून की अंकिता भंडारी, कुलदीप सेंगर, चिन्मयानंद, आसाराम, गुरमीत राम रहीम के द्वारा बलात्कार और कुछ मामलों में हत्या की जघन्यता की शिकार बनी युवतियां-साध्वियां हिन्दुस्थान में रहने वाली हिन्दू थीं या उनके साथ जबर जिनाह करके भी मूंछ मरोड़ते हुए कभी जमानत और कभी पैरोल पर मालाएं पहनने वाले भर ही भाई हैं? कुलबुर्गी, दाभोलकर, पान्सारे और गौरी लंकेश तो जन्मना उस कोटि में आते थे, जिनकी सर्वोच्च श्रेष्ठता का बखान उस किताब में किया गया है, जिसके आधार पर संघ के संस्थापक और प्रेरणा स्रोत हिन्दुस्थान में राज काज और समाज को पहुंचाना और चलाना चाहते थे/हैं।

अगर बिना अपनी पूजा पद्धत्ति और श्रद्धा को बदले बिना ही वे भाई हैं, तो अलग-अलग पूजा स्थलों पर हुड़दंग, उनके पर्वों उत्सवों के समय तोड़फोड़, उन पर झंडे फहराने के काम कौन करता है? चुनावी सभाओं में श्मशान–कब्रिस्तान का, भागवत जी जिनको भाई बता रहे हैं, उनकी एकता को खंड-खंड करने वाला अखंड जाप जो करते हैं, वे किस के भाई हैं? यदि वाकई में सारी विविधताएं 'कुटुंब की विविधताएं हैं – और ये विविधताएं सिर्फ सहन करने लायक ही नहीं हैं, बल्कि हमको (मतलब संघ को) स्वीकार हैं, मान्य हैं", तो फिर 'छोटी आँख' का जुमला कसकर ऐसे हालात कौन पैदा करता है, जिसके चलते पूरे पूर्वोत्तर भारत के भारतवासी – भागवत जी के शब्दों में हिंदुस्थानी – अपनी नस्लीय विविधता के चलते दिल्ली समेत उत्तर भारत में चिंकी, चीनी कहकर निशाना बनाये जाते हैं : जिसकी परिणिति त्रिपुरा के भारतीय, होनहार विद्यार्थी एंजेल चकमा को देहरादून में जान से मार डालने में होती है?

कुछ इससे दुखी होकर तो कुछ पूर्वोत्तर के पहले से ही संवेदनशील प्रदेशों में उठी गुस्से की लहर को शांत करने के लिए मोदी सरकार में ऊपर वाले दो के बाद सबसे अधिक बोलने वाले मंत्री किरण रिरिजू तक को कहना पड़ता है कि "हम (उत्तर-पूर्व के भारतीय) देश में नस्लवाद का निशाना रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में नस्लवाद और भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं है। किसी भी जाति, नस्ल या धर्म के लोगों का मजाक नहीं उड़ाया जाना चाहिए। केवल पूर्वोत्तर के लोग ही नहीं, बल्कि सभी को इस तरह की घटनाओं से दुखी होना चाहिए, क्योंकि यह किसी के साथ भी हो सकता है। इसे वे एक 'वैचारिक बीमारी' बताते हैं और कहते हैं कि इस तरह की मानसिकता केवल कुछ लोगों में होती है और इसके खिलाफ जागरूकता जरूरी है।''

रिरिजू भूल गए कि उनके प्रधानमंत्री की आँखें कितनी तेज हैं, जो सिर्फ छोटी आँखों तक ही नहीं देखती, वे तो कपड़े देखकर भी दूर से ही पहचान लेती हैं। बहरहाल, बकौल रिरिजू, इस तरह की बीमार मानसिकता के शिकार ये केवल कुछ लोग कौन हैं, यह बात उन्होंने इधर, प्रेस के सामने, नहीं बताई, मगर उधर जाकर कान में तो बता ही सकते हैं।

यहाँ जाति की पहचान का उल्लेख नहीं कर रहे, क्योंकि अब तक सिर्फ अंधभक्तों को छोड़कर बाकी ज्यादातर भारतीय जान चुके हैं कि भाई-भाई की बात कहने वालों के लिए दलित, आदिवासी और इन दिनों ओबीसी बताये जाने वाले शूद्रों की हैसियत कैसे भाई की है। यह कुनबा भाषाई वैविध्य के मामले में कितनी 'उच्च वैचारिक बीमारी' से ग्रस्त है, यह बाकी भाषाओं के बारे में उनसे अकेले में बात करके समझा जा सकता है। और यह रोग सिर्फ नीचे तक महदूद नहीं है। इन पंक्तियों के लेखक को 1975-77 की इमरजेंसी के दौरान आरएसएस के दिग्गजों के साथ एक जेल की एक ही बैरक में 19 महीने गुजारने का अनुभव है। इनके एक बड़े वाले जो दो-दो जिलों के संगठक भी थे और बौद्धिक देने लायक बौद्धिक भी माने जाते थे, उनके मुखारबिंद से भारतीय भाषाओं का चुन-चुनकर किया जा रहा संधि-विच्छेद सुना था। वे छोड़ संस्कृत, अंग्रेजी और हिंदी बाकी भारतीय भाषाओं की व्युत्पत्ति बता रहे थे। उनकी शोध के कुछ नमूने देखें : बंगाली = बन गाली। मलयालम = मल का विकल्प मल। तेलुगू = तेल + (बाकी आप समझ गए होंगे)। कन्नड़ = लोटे में भरे कंकड़। तमिल = तेल + मल। पंजाबी = पंजा हावी!! उड़िया = उड़ जा। मैथिली = मैली थाली। और भी बहुत कुछ। अलबत्ता इतनी सावधानी उन्होंने जरूर बरती कि मराठी के बारे में कुछ नहीं बोला। इसी तर्ज पर अगले दिन उनका ₹बौध्दिक₹ पहनावे को लेकर था। उसके अगले दिन खानपान के तरीके और व्यंजन विमर्श में थे।

अपनी भाषा, अपने खानपान, अपने परिधान, अपने साहित्य, अपनी जीवन शैली, कुल मिलाकर अपनी संस्कृति पर फख्र करना एक बात है - मगर इसके लिए बाकी मनुष्यता को नकारना, उनकी भाषा, उनके खानपान, उनके परिधान, उनके साहित्य, उनकी जीवन शैली, कुल मिलाकर उनकी संस्कृति को निकृष्टतम बताना, उसका अपमान करना -- मखौल बनाना एक खास किस्म की हीनग्रंथि है। इस तरह की मनोरोगिता एक विशिष्ट किस्म का विकृत मानस तैयार करती है। मनुष्य को असामाजिक प्राणी बनाती है। ऐसा संकीर्ण व्यक्तित्व ढालती है, जो घटते-घटते न दुनिया का बचता है, न देश का, न समाज का, ना ही स्वयं के परिवार का। वह एकदम खुद पर आकर टिक जाता है। और ऐसा टिकना भी कोई टिकना है भला!! भोपाल में भागवत जो बोल रहे थे, उसका हिन्दू होने के संघ के अब तक के 'एक भूगोल, एक नस्ल, एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति' वाले आधार के साथ कोई संबंध नहीं है। ये सिर्फ दिखाने के दांत हैं।

उन्होंने दावा किया कि संघ केवल व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है, जो आगे चलकर राष्ट्र की सेवा करते हैं। ऐसे स्वयंसेवक तैयार करता है ..... कैसे स्वयंसेवक? अब तो खुलासे इतने बढ़ गए हैं कि सिर्फ सोशल मीडिया ही नहीं भरा पड़ा, पोषित-पालित मीडिया को भी इन कारनामों को छापना और दिखाना पड़ रहा है। भ्रष्टाचार हो या कदाचरण, यौन दुराचरण हो या देश और उसकी सुरक्षा से जुड़े हितों के साथ गद्दारी और जासूसी करते पकड़े जाने वालों की फेहरिश्त हो, लिप्त पाए गए लोगों की राजनीतिक-सांगठनिक संबद्धता इस दावे की कलई खोल देती है। पहले स्वयंसेवक प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के किसी अन्य सन्दर्भ में बोले गए शब्द-युग्म में कहें तो 'कुनबे का हर संगी अपराधी नहीं है, मगर इसरो से आईएसआई से लेकर बाकी अपराधों में जितने पकड़े गए, उनमें ज्यादातर कुनबे के हैं।'

शुचिता, समर्पण, सादगी आदि इत्यादि की बात तो अब दिखाने को भी नहीं बची। शुरुआत में एक पत्रकार मित्र का जिक्र किया था। यहाँ भी इस कुनबे के साथ रहे एक नामी पत्रकार के एक अनुभव का उल्लेख सामयिक होगा। वे अटल सरकार में मंत्री भी थे। एक बार वे झंडेवालान के संघ कार्यालय का भ्रमण करने गये और लौटकर अटल जी से सादगी, सरलता की प्रशंसा करने लगे। वाजपेयी ने सिर्फ एक टिप्पणी से उन्हें चुप कर दिया। उन्होंने कहा कि अभी इन्होने सत्ता सुख नहीं देखा है। जब ये सत्ता सुख देख लेंगे, तब क्या-क्या करेंगे, यह आज सोचना भी मुश्किल है। सत्ता सुख वाले स्वयंसेवकों ने अपने आचरण से खुद वाजपेयी जी ने भी जो नहीं सोचा होगा, उससे भी आगे का कर दिखाया है। और, अभी तो बस शुरुआत ही हुई है।

ऐसा नहीं कि संघ सुप्रीमो यह सब नहीं जानते। वे जानते हैं और अपना मजबूत जाल बिछाने के बाद भी वे उसकी कमजोर बुनावट के बारे में जानते हैं। विज्ञान भवन, गुवाहाटी और अब भोपाल में इस तरह के बोलवचन करके वे भाजपा और विश्व हिन्दू परिषद् वगैरा से अपनी अलहदगी जताना और समावेशी दिखने की कोशिश कुल्हाड़ी से किये छेदों की तलवार से तुरपाई करने की चतुराई है। मगर किया- धरा, किया जा रहा इस कदर नुमायाँ है कि ऐसी झीनी चदरियाओं से ढंकने वाला नहीं है।

**(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।**

डॉ. विजय गर्ग

# नेट नहीं, सन्नाटा, सुरक्षित ऑफलाइन

बैंक एप बंद हैं, यूपीआई ठप है, टिकट कैंसिल हैं, काम अटका हुआ है। सरकार आश्वासन देती है—घबराइए नहीं, ऑफ़लाइन विकल्प मौजूद हैं। वही ऑफ़लाइन विकल्प, जिन्हें पिछले एक दशक में 'डिजिटल इंडिया' के नाम पर धीरे-धीरे ख़त्म कर दिया गया था। अब वही विकल्प राष्ट्र के उद्धारक बताए जा रहे हैं।

एक सुबह देश जागता है और पाता है—नेट नहीं है। मोबाइल हाथ में है, लेकिन आवाज़ गायब। न कोई चेतावनी, न कोई समय-सीमा। बस एक आधिकारिक वाक्य—'यह निर्णय अचानक नहीं, आवश्यक है।' जनता समझ जाती है—जब भी 'आवश्यक' कहा जाता है, तब कुछ न कुछ चुपचाप छीन लिया जाता है।

नोटबंदी में जेब खाली हुई थी, अब दिमाग़। तब लोग लाइन में खड़े थे, अब सन्नाटे में। फर्क बस इतना है कि तब असुविधा दिखती थी, अब उसी को शांति कहा जा रहा है।

बैंक एप बंद हैं, यूपीआई ठप है, टिकट कैंसिल हैं, काम अटका हुआ है। सरकार आश्वासन देती है—घबराइए नहीं, ऑफ़लाइन विकल्प मौजूद हैं। वही ऑफ़लाइन विकल्प, जिन्हें पिछले एक दशक में 'डिजिटल इंडिया' के नाम पर धीरे-धीरे ख़त्म कर दिया गया था। अब वही विकल्प राष्ट्र के उद्धारक बताए जा रहे हैं।

टीवी स्टूडियो पूरी क्षमता से चल रहे हैं। एंकर गर्व से बताते हैं—नेटबंदी देशहित में है। बहस हाई-स्पीड नेटवर्क और सेटेलाइट के सहारे जारी है। पैनलिस्ट समझाते हैं—इंटरनेट ने युवाओं को बिगाड़ दिया था, उन्हें सवाल पूछने की आदत लगा दी थी। अब देश सही दिशा में लौट रहा है—ख़ामोशी की ओर।

सरकारी आदेश आते हैं—ऑनलाइन सेवाएं अस्थायी रूप से स्थगित। लेकिन आवेदन केवल ऑनलाइन ही स्वीकार होंगे। शिकायत के लिए वेबसाइट है, हेल्पलाइन है—जो नेट आने पर काम करेगी। प्रशासन संतुष्ट है—प्रणाली पूरी तरह चालू है, बस जनता डिस्कनेक्ट है।

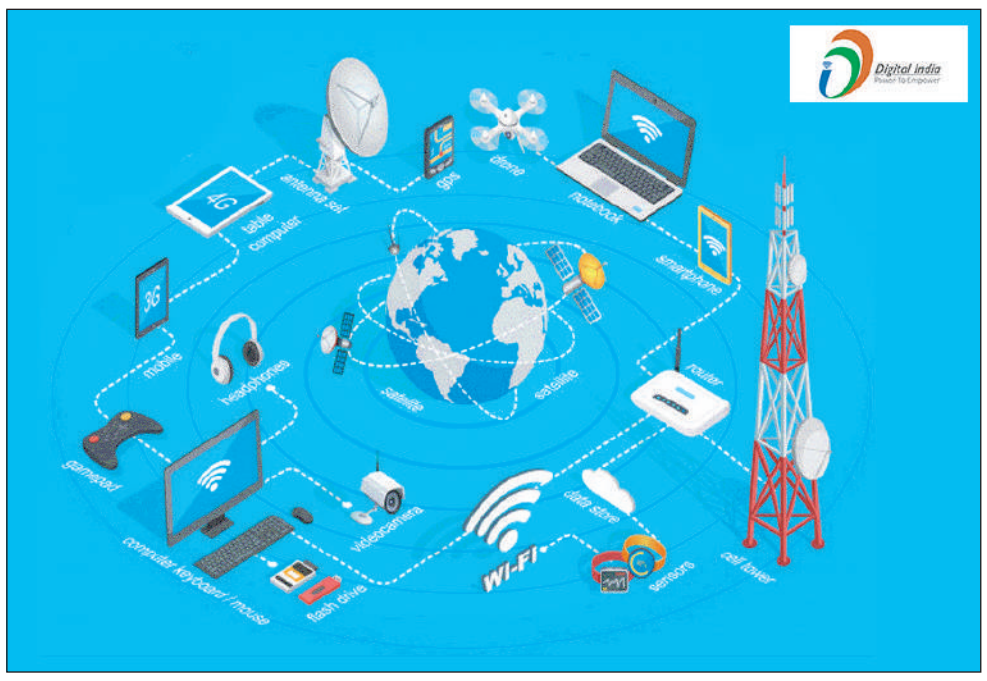


व्यापार सुबक रहा है। स्टार्टअप रुक गए हैं। शेयर बाज़ार अनुमान और बयान के सहारे सांस ले रहा है। सरकार कहती है—देश भावनाओं से चलता है, डेटा से नहीं। निवेशक पूछते हैं—स्थिरता कहां है? जवाब मिलता है—स्थिरता सत्ता में है।

शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार हो गया है। ऑनलाइन क्लास बंद, डिजिटल लाइब्रेरी बंद। बच्चों को किताबें दे दी गई हैं—ऐसी किताबें, जिनमें सवाल कम हैं और उत्तर पहले से तय। सरकार प्रसन्न है—अब सोचने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

लोकतंत्र भी हल्का महसूस कर रहा है। कोई ट्रेंड नहीं, कोई ट्वीट नहीं, कोई वायरल वीडियो नहीं। आधिकारिक बयान आता है—देश में पूर्ण शांति है। शांति का मतलब साफ़ है—कोई देख नहीं रहा, इसलिए कुछ हो ही नहीं रहा।

उपलब्धियां गिनाई जाती हैं। नेटबंदी से अफ़वाहें रुकीं, विरोध रुका, आलोचना रुकी। डिजिटल गिरफ़्तारी की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि डिजिटल नागरिक ही नहीं बचे। यह तकनीकी निर्णय नहीं, नागरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है। धीरे-धीरे जनता अभ्यस्त हो जाती है।

लोकतंत्र में सबसे सुरक्षित नागरिक वही होता है—जो ऑफ़लाइन हो।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

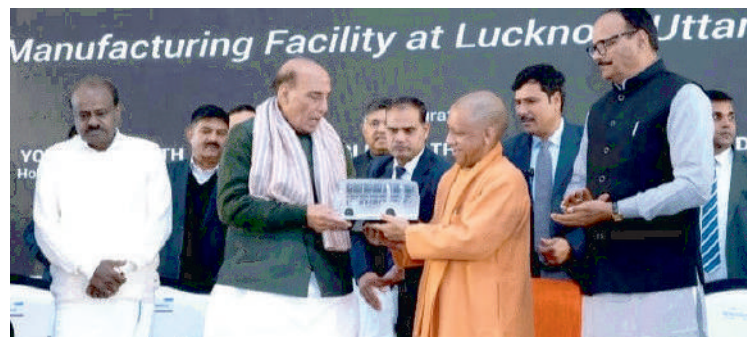


# इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन हेतु अशोक लेलैंड के नवीन विनिर्माण संयंत्र का उद्घाटन संपन्न

संजय कुमार बाठला

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के कर-कमलों से आज लखनऊ में इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन हेतु अशोक लेलैंड के नवीन विनिर्माण संयंत्र का उद्घाटन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री एच. डी. कुमारस्वामी के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की गरिमामयी उपस्थिति रही। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह परियोजना उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास को नई दिशा और गति प्रदान करने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शी सोच, प्रतिबद्धता और हम सभी के अटूट विश्वास का सशक्त प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह प्लांट 'मेक इन इंडिया' के साथ ही 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्पों को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री ने हिंदुजा ग्रुप को हार्दिक बधाई दी।

# प्रकृति के साथ जीने से बेहतर स्वास्थ्य

डॉ विजय गर्ग

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं में प्रकृति के साथ जुड़ने से लाभ होते हैं। एक अध्ययन में यह बात पुख्ता हुई है कि घर के आंगन में व बाहर प्रकृति से जुड़ी गतिविधियां हमारे भीतर के तनाव को कम करती हैं, मूड अच्छा करती हैं और सकारात्मक भावनाओं को बढ़ावा देती हैं।

हाल ही में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि प्रकृति से जुड़ी गतिविधियां हमारे मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती हैं, जो लोग मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहे हैं, उनको भी प्रकृति के साथ जुड़ने से लाभ होते हैं। यह अध्ययन यूनिवर्सिटी ऑफ यॉर्क द्वारा किया गया, जिसमें बताया गया है कि घर से बाहर प्रकृति से जुड़ी गतिविधियां हमारे भीतर के तनाव को कम करती हैं, मूड अच्छा करती हैं और हममें सकारात्मक भावनाओं को बढ़ावा देती हैं। इसमें यह भी पाया गया है कि 20 से 90 मिनट की गतिविधियां जिन्हें हम 8 से 12 सप्ताह के भीतर करते हैं, इनके बेहतर नतीजे सामने आते हैं।

**अध्ययन ने पुख्ता किये फायदे**

नींद को लेकर इस अध्ययन के मुख्य लेखक डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ साइंसेज के डॉ. पीटर कन्वेंटरी का कहना है कि हम पहले से ही इस तथ्य से परिचित हैं कि प्रकृति से जुड़ना हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है। लेकिन हमारे इस अध्ययन ने इस बात को और भी पुख्ता कर दिया है कि प्रकृति से जुड़ी गतिविधियों में संग्लन होने से हमारा मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। प्रकृति से जुड़ी इन गतिविधियों को स्वयं किया जाए या दूसरों के साथ मिलकर किया जाए, सभी का फायदा होता है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि आउटडोर गतिविधियां शारीरिक स्वास्थ्य को कम, मानसिक स्वास्थ्य को ज्यादा सुधारती हैं। इस अध्ययन ने लोगों को एक-दूसरे के साथ मिलकर प्रकृति से जुड़ने की ओर प्रोत्साहित

किया है। प्रकृति से जुड़ी ये गतिविधियां हमारे लिए सार्थक होती हैं और प्रकृति के बीच में रहकर हम एक दूसरे के प्रति पॉजीटिव होते हैं।

**तनाव, थकान के बीच सुकून का अहसास**

मॉडर्न जीवनशैली में लोग अपना अधिकांश समय घर या दफ्तर के भीतर फोन, टेलीविजन या कंप्यूटर की स्क्रीन पर ही बिताते हैं। दिनभर ऑफिस में रहने के दौरान मानसिक रूप से थके होने के कारण हम तनाव का शिकार होते हैं और ऐसे में प्राकृतिक वातावरण में अगर हमारा तन और मन विश्राम पाते हैं तो हमारी एकाग्रता बढ़ती है और हमें खुशी की अनुभूति होती है। दिल को सुकून मिलता है, रोजमर्रा की भागदौड़ भरी जिंदगी से कुछ देर प्रकृति के सान्निध्य में हमें मानसिक शांति भी मिलती है और हमारी रचनात्मक क्षमता भी बढ़ती है। कभी-कभी जब हम मानसिक रूप से थक जाते हैं और ताजी हवा के लिए घर से बाहर प्रकृति के नजदीक रहते हैं तो हम अपने को बेहतर पाते हैं।

**ये गतिविधियां हैं लाभकारी**

प्रकृति के बीच अपना समय बिताने के लिए वॉक करना, साइकिलिंग या लंबी दूरी तक पैदल चलना अच्छा लगता है। इससे हम वजन तो नियंत्रित रख ही सकते हैं। मासंपेशियों में तनाव कम होता है। हृदय प्रणाली पर दबाव कम होने से हार्ट बीट और ब्लड प्रेशर भी कम हो जाता है। जो लोग प्रकृति के ज्यादा करीब रहते हैं, उनमें हृदय रोग की दर भी कम होती है। खुले वातावरण में रहने से विटामिन डी का शरीर में स्तर बढ़ता है, जो हड्डियों, रक्त कोशिकाओं और प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण है। प्रकृति हमारी चिंता को कम करती है। तनाव व क्रोध घटाती है। हरियाली वाले स्थान में रहने से हमें अवसाद कम होता है। दूसरों के साथ ऐसे स्थान पर रहने से हमारा सामाजिक दायरा बढ़ता है और अंजान लोगों से हमारी मुलाकातें होती हैं।

**हरियाली का सकारात्मक असर**

प्राकृतिक रोशनी में रहने से नींद भी अच्छी आती है। प्रकृति बड़ों के लिए ही नहीं, बच्चों के लिए भी फायदेमंद होती है। डेनमार्क में 1985 से 2003 के बीच जन्में 9,00,000 लोगों की जांच की गई, जिसमें पाया गया कि हरियाली वाली जगहों में रहने वाले बच्चों में बड़े होने पर मानसिक विकारों का कम खतरा होता है। जो लोग नियमित रूप से पार्कों और हरेभरे स्थानों के पास रहते हैं, प्रकृति से अपना जुड़ाव रखते हैं, वे ज्यादा स्वस्थ होते हैं और लंबे समय तक जीते हैं। प्रकृति के संपर्क में रहने से, व्यायाम करने से, उनके स्वास्थ्य पर उसका पॉजीटिव असर होता है।

हम 10-15 मिनट बाहर खड़े होकर धूप सेंकते हैं, तो सुकून का अहसास होता है। थोड़ी देर घास पर पैदल चलें, आपको बहुत अच्छा लगेगा। टहलने जाएं तो गहरी सांसें लें। अपने घर की बालकनी में हरियाली का मजा लें। वहां लैपटॉप से काम करें। पिकनिक पर जाएं, वहां गेम्स खेलें। नदी में नौका विहार करें। घर के पास किसी पेड़ के नीचे बैठकर किताब पढ़ें। अपने टेरेस पर एक गार्डेन बनाकर वहां भोजन पकाकर खाएं। कुछ भी ऐसी एक्टिविटी करें, जिससे प्रकृति के साथ आपको समय गुजारने का मौका मिले।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

# घर का माहौल और परीक्षा की तैयारी: माता-पिता का अदृश्य योगदान

डॉ विजय गर्ग

परीक्षा की तैयारी को अक्सर किताबों, कोचिंग और घंटों की पढ़ाई से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में एक ऐसा पहलू भी है, जो दिखाई नहीं देता, पर सबसे गहरा असर डालता है—घर का माहौल। यह माहौल बनाने और संवारने में माता-पिता का योगदान अक्सर "अदृश्य" रह जाता है, जबकि छात्र की सफलता की नींव यहीं रखी जाती है।

**1. मानसिक सुरक्षा का भाव**

घर वह जगह है जहाँ बच्चा बिना डर के अपनी असफलताओं, शंकाओं और तनाव को व्यक्त कर सकता है। जब माता-पिता डाँट या तुलना की जगह समझ और भरोसा देते हैं, तो बच्चे के भीतर मानसिक सुरक्षा का भाव पैदा होता है। यही भाव परीक्षा के दबाव को सहने और आत्मविश्वास बनाए रखने में मदद करता है।

**2. अपेक्षाओं का संतुलन**

अक्सर माता-पिता अनजाने में अपनी अधूरी इच्छाओं का बोझ बच्चों पर डाल देते हैं। ऊँची अपेक्षाएँ प्रेरणा बन सकती हैं, लेकिन जब वे दबाव में बदल जाती हैं, तो पढ़ाई बोझ लगने लगती है। समझदार माता-पिता वही हैं जो बच्चे की क्षमता, रुचि और सीमाओं को समझते हुए यथार्थवादी उम्मीदें रखते हैं।

**3. अनुशासन का शांत वातावरण**

घर का शोर-शराबा, आपसी तनाव या लगातार मोबाइल-टीवी का चलना पढ़ाई की एकाग्रता को तोड़ देता है। इसके विपरीत, जब माता-पिता खुद भी अनुशासित दिनचर्या अपनाते हैं—जैसे समय पर सोना-जागना, मोबाइल का सीमित उपयोग—तो बच्चा बिना कहे ही उस अनुशासन को अपनाने लगता है।

**4. तुलना नहीं, प्रोत्साहन**

"पड़ोसी का बेटा" या "क्लास का टॉपर" जैसी तुलनाएँ बच्चे के मन में हीन भावना भर देती हैं। माता-पिता का अदृश्य योगदान तब सामने आता है जब वे बच्चे की छोटी-छोटी प्रगति को भी सराहते हैं। यह प्रोत्साहन बच्चे को यह एहसास कराता है कि मेहनत की कद्र होती है, सिर्फ परिणाम की नहीं।

**5. असफलता को स्वीकार करने की सीख**

परीक्षा जीवन का अंत नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा है। जब माता-पिता असफलता को शर्म नहीं, अनुभव मानते हैं, तो बच्चा भी डर की जगह सीखने का नजरिया अपनाता है। यही सोच आगे चलकर उसे बड़े जीवन-परीक्षाओं के लिए तैयार करती है।

**6. भावनात्मक संवाद की ताकत**

कभी-कभी एक साधारण सवाल—"आज पढ़ाई कैसी रही?"—बच्चे के मन का बोझ हल्का कर देता है। माता-पिता का यह संवादात्मक रवैया बच्चे को यह महसूस कराता है कि वह अकेला नहीं है। यह भावनात्मक सहारा अक्सर किताबों से ज़्यादा ताकत देता है।

**निष्कर्ष**

परीक्षा की तैयारी सिर्फ छात्र की जिम्मेदारी नहीं होती। घर का माहौल, माता-पिता का व्यवहार, उनकी समझ और संवेदनशीलता—ये सभी मिलकर एक अदृश्य लेकिन मजबूत सहारा बनाते हैं। जब घर तनावमुक्त, सहयोगी और भरोसे से भरा होता है, तब बच्चा न सिर्फ परीक्षा में बेहतर करता है, बल्कि एक संतुलित और आत्मविश्वासी इंसान भी बनता है।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट**

# रासायनिक खाद,मिट्टी का क्षरण और वैश्विक पर्यावरण संकट: मानव स्वास्थ्य,खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिकी तंत्र पर एक समग्र अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण

आधुनिक कृषि की अदृश्य कीमत- अल्पकालिक उत्पादन लाभ के लिए दीर्घकालिक प्राकृतिक संसाधनों का बलिदान देना आत्मघाती है

रासायनिक खादों का संकट केवल कृषि का मुद्दा नहीं है; यह मानव स्वास्थ्य, पर्यावरणीय सुरक्षा, खाद्य संप्रभुता और भावी पीढ़ियों के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर बीसवीं सदी में हरित क्रांति को मानव इतिहास की सबसे बड़ी कृषि उपलब्धियों में गिना गया,जिसने अकाल से जूझती दुनियाँ को अन्न- आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उन्नत बीजों के व्यापक उपयोग ने उत्पादन को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया।किंतु इक्कीसवीं सदी में वही कृषि मॉडल अब एक वैश्विक पर्यावरणीय, स्वास्थ्य और पारिस्थितिक संकट का रूप ले चुका है। रासायनिक खादों का अंधाधुंध उपयोग मिट्टी की उर्वरता, भूजल की शुद्धता, खाद्य पोषण और जैव विविधता चारों स्तंभों को एक साथ कमजोर कर रहा है। यह संकट केवल किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका हर जगह इसके दुष्परिणाम स्पष्ट दिखने लगे हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि मिट्टी केवल फसल उगाने का माध्यम नहीं है,बल्कि यह एक जीवंत पारिस्थितिक प्रणाली है जिसमें अरबों सूक्ष्मजीव, केंचुए, फफूंद और जीवाणु सक्रिय रहते हैं। ये तत्व मिट्टी को भुरभुरा बनाते हैं, पोषक तत्वों का चक्र चलाते हैं और पौधों को प्राकृतिक रूप से पोषण उपलब्ध कराते हैं।रासायनिक खादों विशेषकर नाइट्रोजन,फॉस्फोरस और पोटाश आधारित उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग इस संतुलन को नष्ट कर देता है।लगातार रसायनों के प्रयोग से मिट्टी की जैविक कार्बन सामग्री घटती है, जिससे उसकी जल धारण क्षमता कम हो जाती है और वह कठोर,निर्जीव तथा बंजर होने लगती है। अंतरराष्ट्रीय मृदा विज्ञान संगठनों के अनुसार, विश्व की लगभग 33 प्रतिशत कृषि भूमि पहले ही किसी न किसी रूप में क्षरण का शिकार हो चुकी है। भारत, चीन और अमेरिका जैसे कृषि प्रधान देशों में मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत तेजी से खत्म हो रही है। यह स्थिति दीर्घकाल में खाद्य उत्पादन को अस्थिर बना देती है और किसानों को और अधिक रसायनों पर निर्भर होने के लिए मजबूर करती है, एक ऐसा दुष्चक्र, जिससे बाहर निकलना अत्यंत कठिन हो जाता है।लाभकारी रासायनिक खादों का सबसे घातक प्रभाव मिट्टी में मौजूद लाभकारी सूक्ष्मजीवों पर पड़ता है। नाइट्रोजन स्थिर करने वाले जीवाणु, माइकोराइजा फफूंद और जैविक अपघटक जीव मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता के आधार होते हैं। जब रसायन सीधे पौधों को पोषण उपलब्ध करा देते हैं, तो ये सूक्ष्मजीव निष्क्रिय होने लगते हैं या मर जाते हैं। परिणामस्वरूप मिट्टी की आत्मनिर्भरता समाप्त हो जाती है और वह बाहरी इनपुट पर निर्भर हो जाती है।

साथियों बात अगर हम संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन की रिपोर्टें को समझने की करें तो यह चेतावनी देती हैं कि यदि यही प्रवृत्ति जारी रही,तो आने वाले दशकों में बड़ी मात्रा में कृषि भूमि जैविक रूप से

मृत हो सकती है। ऐसी मिट्टी में उत्पादन बनाए रखने के लिए रसायनों की मात्रा लगातार बढ़ानी पड़ती है, जिससे लागत, प्रदूषण और जोखिम तीनों बढ़ते हैं।रासायनिक खादों का एक बड़ा हिस्सा पौधों द्वारा अवशोषित नहीं हो पाता और वर्षा या सिंचाई के साथ मिट्टी की निचली परतों में रिसकर भूजल में मिल जाता है। नाइट्रेट और फॉस्फेट जैसे तत्व भूजल को प्रदूषित कर देते हैं, जो सीधे पीने के पानी के स्रोत बनते हैं। यह समस्या अब केवल ग्रामीण कृषि क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी गंभीर रूप ले चुकी है।भारत के इंदौर में जहरीला जल पीने से 15 से अधिक लोगों की मृत्यु की घटना इस संकट कीभयावहता को उजागर करती है। यह केवल एक स्थानीय दुर्घटना नहीं, बल्कि उस व्यापक समस्या का प्रतीक है जिसमें कृषि रसायन, औद्योगिक अपशिष्ट और अव्यवस्थित जल प्रबंधन मिलकर मानवजीवन के लिए घातक परिस्थितियाँ पैदा कर रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, नाइट्रेट- प्रदूषित जल से ब्लू बेबी सिंड्रोम, कैंसर और अन्य दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जल संकट और कृषि रसायन को समझने की करें तो यूरोप के कई देशों,विशेषकर नीदरलैंड्स और फ्रांस में,भूजल में नाइट्रेट स्तर खतरनाक सीमा को पार कर चुका है,जिसके कारण सरकारों को उर्वरक उपयोग पर कड़े नियम लगाने पड़े हैं। अमेरिका में डेड ज़ोन की समस्या-जहाँ नदियों से बहकर गए पोषक तत्व समुद्र में ऑक्सीजन की कमी पैदा कर देते हैं,कृषि रसायनों के दुष्प्रभावका अंतरराष्ट्रीय उदाहरण है। यह दर्शाता है कि रासायनिक खाद का असर केवल खेत तक सीमित नहीं रहता, बल्कि नदियों, झीलों और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र तक फैल जाता है।

साथियों बात अगर हम रसायनों के अत्यधिक उपयोगसे खाद्य पोषण में गिरावट और जहरीला भोजन इसको समझने क़ी करें तो,रसायनों के अत्यधिक उपयोग से फसलें भले ही आकार में बड़ी और देखने में आकर्षक हों, लेकिन उनकी पोषण गुणवत्ता लगातार गिर रही तत्वों की कमी सीधे पौधों की पोषण संरचना को प्रभावित करती है।इसके अतिरिक्त कीटनाशकों और उर्वरकों के अवशेष भोजन में बने रहते हैं, जो मानव शरीर में धीरे-धीरे जमा होकर कैंसर, मधुमेह, हार्मोन असंतुलन और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी बीमारियों को जन्म दे सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान एजेंसी ने कई कृषि रसायनों को संभावित कार्सिनोजेन की श्रेणी में रखा है, जो इस खतरे की गंभीरता को रेखांकित करता है।रासायनिक खाद और कीटनाशकों से जुड़ा स्वास्थ्य संकट तात्कालिक नहीं, बल्कि दीर्घकालिक और व्यापक होता है। किसान, खेत मजदूर और ग्रामीण समुदाय सबसे पहले इसकी चपेट में आते हैं, लेकिन शहरी उपभोक्ता भी इससे अछूते नहीं हैं। भोजन, पानी और पर्यावरण तीनों माध्यमों से रसायन मानव शरीर में प्रवेश करते हैं।यह एक ऐसा साइलेंट पैंडेमिक"है, जो धीरे-धीरे समाज की स्वास्थ्य संरचना को कमजोर कर रहा है और स्वास्थ्य प्रणालियों पर भारी बोझ डाल रहा है।मिट्टी के स्वास्थ्य में गिरावट का सीधा असर उसमें रहने वाले जीव-जंतुओं पर पड़ता है। केंचुए, जिन्हें मिट्टी का किसान कहा जाताहै,रासायनिक खादों के कारण तेजी से कम हो रहे हैं। कीटों और सूक्ष्म जीवों की विविधता में कमी से प्राकृतिक परागण और कीट नियंत्रण की प्रक्रियाएँ बाधित होती हैं। इससे जैव विविधता का संतुलन बिगड़ता है और पारिस्थितिकी तंत्र अस्थिर हो जाता है।पक्षियों, उभयचरों और जलीय जीवों की कई प्रजातियाँ कृषि रसायनों के कारण संकटग्रस्त हो चुकी हैं। यह केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व से जुड़ा प्रश्नहै,क्योंकिपारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ने का अंतिम प्रभाव मानव जीवन पर ही पड़ता है।

साथियों बात अगर हम जैविक खाद और टिकाऊ खेती:एकमात्र व्यवहारिक विकल्प, इसको समझने की करें तो इस वैश्विक संकट का समाधान रासायनिक खेती के विकल्पों में निहित है।जैविक खाद, हरी खाद, कंपोस्ट, वर्मी-कंपोस्ट और प्राकृतिक कृषि पद्धतियाँ मिट्टी की उर्वरता को पुनर्जीवित कर सकती हैं। ये न केवल मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को संरक्षित करती हैं, बल्कि भूजल प्रदूषण को भी रोकती हैं। जैविक खेती से उत्पादित भोजन अधिक पोषक और सुरक्षित होता है, जिससे दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।विश्व के कई देशों ने टिकाऊ कृषि को नीति स्तर पर अपनाना शुरू कर दिया है। यूरोपीय संघ की फार्म टू फोर्क रणनीति, भारत की प्राकृतिक खेती पहल और अफ्रीका में एग्रो-इकोलॉजी आंदोलन इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सभ्यता के सामने एक निर्णायक मोड़ पैदा हो गया है,रासायनिक खादों का संकट केवल कृषि का मुद्दा नहीं है; यह मानव स्वास्थ्य, पर्यावरणीय सुरक्षा,खाद्यसंप्रभुता और भावी पीढ़ियों के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है। यदि वर्तमान रुझान जारी रहे, तो दुनियाँ को भोजन की कमी नहीं, बल्कि स्वस्थ भोजन की कमी का सामना करना पड़ेगा। अब यह स्पष्ट हो चुका है किअल्पकालिक उत्पादन लाभ के लिए दीर्घकालिक प्राकृतिक संसाधनों का बलिदान देना आत्मघाती है।जैविक खाद और टिकाऊ खेती केवल विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुकी है।यह परिवर्तन केवल किसानों से नहीं,बल्कि नीति- निर्माताओं, वैज्ञानिकों, उपभोक्ताओं और वैश्विक समुदाय से सामूहिक प्रतिबद्धता की मांग करता है।मिट्टी,जल और जीवन तीनों को बचाने का यही एकमात्र रास्ता है, और यही मानव सभ्यता के भविष्य की वास्तविक कसौटी भी।

# विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी पर विशेष) - एक महत्वपूर्ण कदम : हिंदी भाषा और एआई तकनीक का मिलन

संदीप सृजन

हिंदी भाषा, जो विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और भारत की आधिकारिक भाषा है, अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की दुनिया में एक नई क्रांति का केंद्र बिंदु बन रही है। एआई तकनीक ने हिंदी को डिजिटल युग में नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है, जहां भाषाई बाधाएं ध्वस्त हो रही हैं और समावेशी विकास की नई संभावनाएं खुल रही हैं। हिंदी भाषा और एआई तकनीक का यह संगम न केवल भारत की बहुभाषी विविधता को मजबूत कर रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को विज्ञान, शिक्षा और शासन की भाषा बनाने में योगदान दे रहा है।

हिंदी भाषा का एआई से जुड़ाव नया नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में यह तेजी से बढ़ा है। भारत में 22 अनुसूचित भाषाओं और सैकड़ों बोलियों के साथ भाषाई विविधता एक बड़ी चुनौती रही है। एआई की प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) तकनीक ने इस विविधता को अवसर में बदल दिया है। भारत सरकार की प्रमुख पहल भाषिणी इस दिशा में मील का पत्थर है। राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (एनएलटीएम) के तहत विकसित भाषिणी एक एआई-संचालित प्लेटफॉर्म है जो रीयल-टाइम अनुवाद, वाक् पहचान और भाषा समझ प्रदान करता है। यह 22 अनुसूचित भाषाओं सहित जनजातीय भाषाओं का समर्थन करता है। 2025 में भाषिणी ने महाकुंभ जैसे बड़े आयोजनों में बहुभाषी चैटबॉट के रूप में काम किया, जहां लाखों श्रद्धालुओं को हिंदी और अन्य भाषाओं में जानकारी मिली। भारतीय रेलवे ने भी भाषिणी को टिकटिंग और घोषणाओं में एकीकृत किया है, जिससे यात्रियों को अपनी भाषा में सुविधा मिल रही है।

एक और महत्वपूर्ण विकास भारतजेन है। यह भारत का पहला स्वदेशी बहुभाषी जनरेटिव एआई मॉडल है, जो टेक्स्ट-टू-टेक्स्ट और टेक्स्ट-टू-स्पीच क्षमताओं से युक्त है। वर्तमान में यह हिंदी, मराठी, तमिल, मलयालम, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु और कन्नड़ जैसी 9 भाषाओं का समर्थन करता है। जून 2026 तक यह सभी 22 अनुसूचित भाषाओं को कवर करेगा। भारतजेन कृषि, शासन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में अनुप्रयोग विकसित कर रहा है। उदाहरणस्वरूप, किसानों को हिंदी में मौसम और फसल सलाह मिल सकेगी। यह मॉडल भारतीय संदर्भों और संस्कृति को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जो पश्चिमी एआई मॉडलों से अलग है।




वैश्विक स्तर पर भी हिंदी के लिए विशेष एआई मॉडल विकसित हो रहे हैं। जी42 कंपनी का नंदा मॉडल एक 13 अरब पैरामीटर वाला हिंदी-केंद्रित लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) है, जो 2.13 ट्रिलियन टोकनों पर प्रशिक्षित है। यह हिंदी की बोलियों, मुहावरों और क्षेत्रीय विविधताओं को समझता है। नंदा का अपग्रेडेड वर्जन 87 अरब पैरामीटर वाला है, जो हिंदी-अंग्रेजी मिश्रित भाषा (हिंग्लिश) को भी संभालता है। सरवम एआई का ओपनहाथी हिंदी मॉडल और गूगल का जेमिनी अब हिंदी सहित 9 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। गूगल सर्च का एआई मोड भी हिंदी में काम करता है, जो बातचीत शैली में खोज को आसान बनाता है।

एआई हिंदी शिक्षा और साहित्य को भी बदल रहा है। टॉकियो एआई जैसे ऐप्स हिंदी सीखने में मदद कर रहे हैं, जबकि आईआईटी मद्रास ने लेक्चरों को 11 भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने वाला सिस्टम विकसित किया है। बॉलीवुड और सोशल मीडिया पर हिंदी कंटेंट को एआई टूल्स से बेहतर बनाया जा रहा है। पर्यावरण, स्वास्थ्य और लिंग समानता जैसे विषयों पर हिंदी पॉडकास्ट और ब्लॉग एआई की मदद से वैश्विक पहुंच बना रहे हैं।

हालांकि, हिंदी और एआई के इस सफर में चुनौतियां भी हैं। मुख्य समस्या डेटा की कमी है। इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का बड़ा हिस्सा अंग्रेजी में है, जबकि भारतीय भाषाएं मात्र 1 प्रतिशत हैं। हिंदी की जटिल व्याकरण, संयुक्त शब्द, लिपि (देवनागरी) और बोलियों की विविधता एआई मॉडलों के लिए टोकनाइजेशन और प्रशिक्षण को कठिन बनाती है। हिंग्लिश और कोड-स्विचिंग (भाषा मिश्रण) भी समस्या पैदा करती है। कई साहित्यिक और मौखिक परंपराएं डिजिटाइज नहीं हुई हैं। इसके अलावा, बायस का खतरा है – यदि प्रशिक्षण डेटा असंतुलित हो तो एआई सांस्कृतिक गलतियां कर सकता है। गोपनीयता और डेटा सुरक्षा भी चिंता का विषय है। कम संसाधन वाली भाषाओं में एआई की सटीकता कम होती है, जिससे अनुवाद में अर्थ विकृति हो सकती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, भविष्य उज्ज्वल है। भारत सरकार की इंडियाएआई मिशन और ओपन-सोर्स पहलें डेटा संग्रह को बढ़ावा दे रही हैं। भाषिणी की क्राउडसोर्सिंग से लाखों वाक्य एकत्र हो रहे हैं। 2026 तक भारतजेन सभी भाषाओं को कवर करेगा, जो डिजिटल समावेशिता को बढ़ाएगा। एआई हिंदी को विज्ञान और तकनीक की भाषा बना रहा है, जैसा कि केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा – हिंदी अब सिर्फ भाषा नहीं, भारत की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। एआई से हिंदी में रोजगार के नए अवसर खुल रहे हैं, जैसे अनुवादक, कंटेंट क्रिएटर और एआई ट्रेनर।

हिंदी भाषा और एआई तकनीक का यह मिलन भारत को वैश्विक एआई नेता बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल भाषाई बाधाओं को तोड़ रहा है, बल्कि करोड़ों लोगों को डिजिटल दुनिया से जोड़ रहा है। यदि हम डेटा संग्रह, नैतिकता और समावेश पर ध्यान दें, तो हिंदी एआई के माध्यम से विश्व को नई वैचारिक दृष्टि दे सकती है। यह संगम हमें एक ऐसे भारत की ओर ले जा रहा है जहां हर नागरिक अपनी मातृभाषा में प्रौद्योगिकी का लाभ उठा सके। हिंदी और एआई का यह सफर अभी शुरुआत है – आगे और भी क्रांति बाकी है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तम्भकार

## देश-विदेश में 'दादागिरी'...!

देश-विदेश में ऐसी हो रहीं 'दादागिरी',
ना जाने किस-किसकी है बुद्धि फिरी।
ये विदेश में देखो राष्ट्रपति को ले उड़ी,
क्योंकि तेल पर इनकी जो नजर पड़ी।

जब राज्य की मुखिया हो गई परेशान,
तय राजनीति 'रणनीति' है ईडी हैरान।
तलाशी अभियान कब्जे में ली फाइल,
बावजूद इसके 'गायब' हो गई स्माइल।

चीन, भारत-ब्राजील पे 500 प्रतिशत,
टैरिफ लगाने की है यह गलत हरकत।
यूक्रेन में भैया शांति नहीं करवा पाया,
ये 'नोबेल' ना मिलने से खूब झल्लाया।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)



# पढ़ाई के नाम पर बच्चों से छिनता बचपन : - डॉ. प्रियंका सौरभ

- डॉ. प्रियंका सौरभ

अख़बार की एक छोटी-सी खबर कई बार पूरे समाज के चेहरे से नक़ाब हटा देती है। "पढ़ाई के लिए कहने और रील बनाने से रोकने पर किशोर छोड़ रहे घर"—यह वाक्य सिर्फ़ सूचना नहीं, बल्कि हमारे समय की एक गहरी त्रासदी का बयान है। यह बताता है कि घर, जो बच्चों के लिए सबसे सुरक्षित स्थान माना जाता है, कई मामलों में उनके लिए असहनीय दबाव का केंद्र बनता जा रहा है। पढ़ाई, अनुशासन और भविष्य की चिंता—ये सब आवश्यक हैं, लेकिन जब ये डर, ताने, अपमान और तुलना के साथ बच्चों पर थोपे जाते हैं, तो नतीजा सीखने की प्रेरणा नहीं, बल्कि पलायन होता है। यह खबर हमें ठहरकर सोचने को मजबूर करती है कि आख़िर हम अपने बच्चों से क्या चाहते हैं—अंक, रैंक और प्रदर्शन या एक संतुलित, संवेदनशील और स्वस्थ मनुष्य?

आज का किशोर अभूतपूर्व बदलावों के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल दुनिया ने उसकी आंखों के सामने विकल्पों का विस्तार कर दिया है—रील्स, शॉर्ट वीडियो, ऑनलाइन दोस्ती, त्वरित प्रसिद्धि और तुरंत मिलने वाली प्रशंसा। यह सब आकर्षक है, पर इसके भीतर अस्थिरता भी है। ऐसे में परिवार की भूमिका और भी निर्णायक हो जाती है। दुर्भाग्य से कई घरों में संवाद की जगह आदेश ने ले ली है, समझ की जगह तुलना ने, और सहानुभूति की जगह अपेक्षाओं ने। "हम तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं"—यह वाक्य अक्सर बच्चों के मन में भय बनकर उतरता है, क्योंकि इसके साथ उनकी बात सुनने की इच्छा नहीं जुड़ी होती।

पढ़ाई को लेकर समाज में एकांगी दृष्टि विकसित हो गई है। सफलता का पैमाना सीमित कर दिया गया है—अच्छे अंक, प्रतिष्ठित कॉलेज और तथाकथित सुरक्षित करियर। इस दौड़ में यह भूल जाता है कि हर बच्चा एक जैसा नहीं होता। किसी की रुचि विज्ञान में है, किसी की कला में; कोई खेल में खिलता है, कोई लेखन में। जब एक ही साँचे में सबको ढालने की कोशिश होती है, तो कई बच्चे टूटते हैं। वे अपनी असफलता को निजी अपराध मानने लगते हैं और धीरे-धीरे आत्मविश्वास खो देते हैं। घर छोड़ना उस टूटन का चरम बिंदु है—एक हताश प्रयास, जहाँ बच्चा भागकर शांति ढूंढना चाहता है।

किशोरावस्था वैसे ही भावनात्मक उथल-पुथल का समय है। शरीर बदलता है, मन सवालों से भरता है, पहचान गढ़ने की बेचैनी होती है। ऐसे समय में अगर घर में डांट, चिल्लाहट, तिरस्कार और निरंतर निगरानी का माहौल हो, तो बच्चा खुद को अकेला महसूस करता है। उसे लगता है कि उसकी भावनाओं की कोई कीमत नहीं। कई बार माता-पिता बच्चों की चुप्पी को अनुशासन समझ लेते हैं, जबकि वह भीतर जमा होता तनाव होता है। यह तनाव कब विस्फोट बन जाए—घर छोड़ने, नशे की ओर जाने या आत्म-क्षति तक—कहना मुश्किल है।

रील्स और सोशल मीडिया को इस समस्या का एकमात्र दोषी ठहराना भी सरलीकरण होगा। यह सच है कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों की एकाग्रता और धैर्य को प्रभावित करता है, लेकिन सवाल यह है कि बच्चे स्क्रीन में शरण क्यों लेते हैं? अक्सर इसलिए क्योंकि वहाँ उन्हें सुना जाता है, सराहा जाता है, या कम-से-कम जज नहीं किया जाता। अगर घर में संवाद जीवित हो, साझा समय हो, और भरोसे का रिश्ता हो, तो डिजिटल आकर्षण संतुलन में रहता है। समस्या तकनीक नहीं, तकनीक के साथ हमारे रिश्ते की है।

माता-पिता की चिंता स्वाभाविक है। वे अपने अनुभवों से सीखकर बच्चों को कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं। पर चिंता जब नियंत्रण में बदल जाती है, तब नुकसान होता है। बच्चों के शौक छीन लेना, दोस्तों से मिलना रोकना, हर समय तुलना करना—ये तरीके अल्पकाल में अनुशासन जैसे दिख सकते हैं, पर दीर्घकाल में विश्वास तोड़ देते हैं। बच्चा आज्ञाकारी दिखे, पर भीतर विद्रोह पनपता रहता है। पढ़ाई के प्रति प्रेम डर से नहीं, अर्थ से पैदा होता है—जब बच्चा समझता है कि वह क्यों पढ़ रहा है, किस दिशा में बढ़ रहा है।

स्कूल और शिक्षण संस्थानों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं। परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था बच्चों को अंक मशीन बना देती है। काउंसलिंग, लाइफ स्किल्स और मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर निवेश अभी भी अपवाद है। शिक्षक अक्सर पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में बच्चों की भावनात्मक जरूरतों को नहीं देख पाते। स्कूल और घर अगर मिलकर एक सहायक तंत्र बनाएं—जहाँ बच्चे की रुचि, क्षमता और मानसिक स्थिति पर संवाद हो—तो बहुत-सी त्रासदियाँ रोकी जा सकती हैं।

समाज में सफलताओं का प्रदर्शन और असफलताओं का उपहास भी समस्या को बढ़ाता है। रिश्तेदारों की तुलना, पड़ोस की अपेक्षाएँ, सोशल मीडिया पर उपलब्धि का शोर—ये सब माता-पिता के दबाव को कई गुना कर देते हैं, जो आगे बच्चों पर उतरता है। हमें सामूहिक रूप से यह स्वीकार करना होगा कि हर रास्ता एक जैसा नहीं होता और देर से खिलने वाले फूल भी सुगंध बिखेरते हैं। जीवन रैखिक नहीं है; उसमें ठहराव, मोड़ और पुनः शुरुआत भी होती है।

मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चुप्पी सबसे खतरनाक है। बच्चों की उदासी, चिड़चिड़ापन, नींद में बदलाव, पढ़ाई से अचानक दूरी—ये सब संकेत हैं, जिन्हें 'नाटक' या 'जिद' कहकर टाल देना आसान है। लेकिन समय रहते संवेदनशील हस्तक्षेप—एक शांत बातचीत, बिना टोके सुनना, जरूरत पड़े तो पेशेवर काउंसलिंग—कई जिंदगियाँ बचा सकता है। काउंसलिंग कोई कलंक नहीं, बल्कि समझदारी का कदम है।

घर के भीतर संवाद की संस्कृति बनाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। रोज़ का साझा समय—बिना मोबाइल, बिना आदेश—जहाँ बच्चा अपने दिन, डर और सपने कह सके। माता-पिता का यह स्वीकार करना कि उनसे भी गलती हो सकती है, बच्चों को ईमानदार बनाता है। नियम जरूरी हैं, पर नियमों के पीछे कारण बताना और बच्चों की राय सुनना उतना ही जरूरी है। अनुशासन सहमति से आए, भय से नहीं।

नीतिगत स्तर पर भी पहल आवश्यक है। स्कूलों में प्रशिक्षित काउंसलर, माता-पिता के लिए नियमित कार्यशालाएँ, पाठ्यक्रम में जीवन-कौशल और भावनात्मक शिक्षा का समावेश—ये कदम समय की मांग हैं। डिजिटल साक्षरता केवल तकनीक चलाना नहीं, बल्कि उसकी सीमाएँ समझना भी है। बच्चों को स्वयं-नियमन सिखाना होगा, ताकि वे स्क्रीन और पढ़ाई के बीच संतुलन बना सकें।

अंततः प्रश्न यह है कि हम किस तरह का समाज बनाना चाहते हैं। ऐसा समाज जो बच्चों को डराकर 'सफल' बनाता है, या ऐसा जो उन्हें समझकर सक्षम बनाता है? घर छोड़ते किशोर हमारी सामूहिक विफलता का संकेत हैं। यह केवल किसी एक परिवार की कहानी नहीं, बल्कि हमारी प्राथमिकताओं का आईना है। अगर आज हम नहीं रुके, नहीं सुना, नहीं बदले—तो खबरें और भी कड़वी होंगी।

हमें याद रखना चाहिए कि बच्चे भविष्य नहीं, वर्तमान हैं। उनकी हँसी, जिज्ञासा और असहमति—सब जीवन का हिस्सा हैं। पढ़ाई महत्वपूर्ण है, पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है वह वातावरण जिसमें पढ़ाई होती है। जब घर दोस्ती, सम्मान और भरोसे का स्थान बनेगा, तब बच्चे भागेंगे नहीं—वे वहीं रहकर उड़ान भरेंगे। यही समय की सबसे बड़ी पुकार है, और यही हमारे हाथ में सबसे बड़ी जिम्मेदारी।

# देवनागरी से डिजिटल मस्तिष्क तक: हिंदी की सभ्यतागत यात्रा

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

जब कोई भाषा युगों की चेतना को समेटे हुए भविष्य की तकनीक से संवाद करने लगे, तब वह केवल संप्रेषण का साधन नहीं रहती, बल्कि राष्ट्र की आत्मा और दिशा बन जाती है। विश्व हिंदी दिवस 2026 इसी ऐतिहासिक परिवर्तन का सशक्त प्रतीक है। 10 जनवरी को मनाया जाने वाला यह दिवस केवल हिंदी के गौरवगान तक सीमित नहीं, बल्कि उसकी निरंतर विकसित होती वैश्विक भूमिका का उद्घोष है। इस वर्ष की थीम "हिंदीः पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक", यह स्पष्ट करती है कि हिंदी अतीत की धरोहर और भविष्य की तकनीक के बीच सेतु बनकर खड़ी है। यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि हिंदी केवल स्मृति नहीं, बल्कि संभावना है।

विश्व हिंदी दिवस की पृष्ठभूमि हिंदी की वैश्विक यात्रा की गाथा है। 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में स्थापित किया। वर्ष 2006 में इसे आधिकारिक रूप से विश्व हिंदी दिवस घोषित किया गया। आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसे 60 करोड़ से अधिक लोग मातृभाषा के रूप में बोलते हैं और करोड़ों इसे समझते हैं। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के प्रयास इस बात का प्रमाण हैं कि हिंदी अब केवल जनभाषा नहीं, बल्कि वैश्विक संवाद की सशक्त दावेदार बन चुकी है।

हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति उसका पारंपरिक ज्ञान है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, आयुर्वेद और योग जैसे ग्रंथ मानव सभ्यता को जीवन दर्शन, नैतिकता और संतुलन का मार्ग दिखाते हैं। यह ज्ञान केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और व्यावहारिक भी है। आयुर्वेद की औषधियाँ आधुनिक चिकित्सा में स्थान बना रही हैं और योग को वैश्विक स्वास्थ्य आंदोलन के रूप में स्वीकार किया गया है। यह समस्त ज्ञान हिंदी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा और आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी की भूमिका ऐतिहासिक मोड़ पर है। भारत एआई मिशन के अंतर्गत हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में स्वदेशी बड़े भाषा मॉडल विकसित किए जा रहे हैं। इनका उद्देश्य केवल तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि भारतीय संदर्भों, मूल्यों और सांस्कृतिक संवेदनाओं के अनुरूप एआई का निर्माण है। हिंदी में एआई शिक्षा को व्यक्तिगत, कृषि को वैज्ञानिक और स्वास्थ्य को समग्र बना रही है। प्राचीन ग्रंथों का डिजिटल अनुवाद और विश्लेषण अब तकनीक के माध्यम से संभव हो रहा है।

वर्ष 2026 में भारत द्वारा आयोजित भारत एआई इम्पैक्ट समिट हिंदी की तकनीकी क्षमता को वैश्विक मंच प्रदान करता है। इस सम्मेलन में भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी, में जिम्मेदार और नैतिक एआई पर विशेष जोर दिया गया है। देवनागरी लिपि की ध्वन्यात्मक संरचना एआई के लिए अत्यंत उपयुक्त है। भारतीय स्टार्टअप्स हिंदी आधारित चैटबॉट, वॉइस असिस्टेंट और ज्ञान मंच विकसित कर रहे हैं। इसरो के गगनयान मिशन में हिंदी संवाद यह सिद्ध करता है कि अंतरिक्ष जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में भी हिंदी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है।

हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का यह संगम केवल तकनीकी प्रयोग नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व है। यदि एआई को केवल विदेशी भाषाओं और संदर्भों में प्रशिक्षित किया जाए, तो वह स्थानीय संवेदनाओं से कट सकता है। हिंदी आधारित एआई भारतीय समाज की विविधता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बेहतर ढंग से समझ सकता है। यह एआई न केवल सूचना देगा, बल्कि विवेकपूर्ण और संवेदनशील निर्णयों में सहायक बनेगा। यही कारण है कि हिंदी एआई का विकास भविष्य की अनिवार्यता बन चुका है।

हालाँकि हिंदी के समक्ष चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री की कमी, अंग्रेजी-प्रधान एआई मॉडल और डिजिटल साक्षरता का अभाव प्रमुख बाधाएँ हैं। अनुवाद में त्रुटियाँ और तकनीकी संसाधनों तक सीमित पहुँच भी चिंता का विषय हैं। फिर भी 2026 आशा और अवसरों का वर्ष है। वैश्विक तकनीकी कंपनियाँ हिंदी वॉइस टेक्नोलॉजी में निवेश बढ़ा रही हैं और भारतीय प्रयास स्थानीय भाषाओं को केंद्र में ला रहे हैं। यदि संस्कृत और हिंदी ग्रंथों को एआई प्रशिक्षण डेटा बनाया जाए, तो हिंदी वैश्विक एआई में अग्रणी बन सकती है।

हिंदी की समावेशी प्रकृति उसे भारत की राष्ट्रीय एकता का आधार बनाती है। यह 22 अनुसूचित भाषाओं को जोड़ने वाली सेतु है और इसमें संस्कृत, फारसी, अरबी सहित अनेक भाषाओं का प्रभाव समाहित है। यही विविधता इसे वैश्विक स्तर पर स्वीकार्य बनाती है। प्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी सांस्कृतिक स्मृति और पहचान का माध्यम है। अब एआई के माध्यम से हिंदी सीमाओं से परे जाकर भारतीय ज्ञान और मूल्यों को विश्व तक पहुँचा रही है।

भविष्य की दृष्टि से हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनने की क्षमता रखती है। शिक्षा में हिंदी-एआई पाठ्यक्रम, विश्वविद्यालयों में पारंपरिक ज्ञान आधारित तकनीकी अध्ययन और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी प्रस्तुतियाँ इसे नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगी। विश्व हिंदी दिवस को यदि एआई और भाषा के वैश्विक संवाद का मंच बनाया जाए, तो हिंदी नवाचार और मानवीय मूल्यों का केंद्र बन सकती है।

अंतरिक्ष से लेकर डिजिटल संसार तक, प्रयोगशालाओं से लेकर कक्षाओं तक, हिंदी की उपस्थिति भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को सुदृढ़ कर रही है। गगनयान जैसे मिशनों में हिंदी संचार बढ़ना यह संकेत देता है कि भविष्य की तकनीक भारतीय भाषाओं के साथ आगे बढ़ेगी। हिंदी का यह तकनीकी विस्तार भारत को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि नवाचार का नेतृत्वकर्ता बनाएगा।

विश्व हिंदी दिवस 2026 केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि हिंदी के वर्तमान और भविष्य को दिशा देने वाला एक गहन वैचारिक संकल्प है। यह संकल्प इस विश्वास पर आधारित है कि हिंदी अपनी सांस्कृतिक जड़ों, नैतिक मूल्यों और ज्ञान परंपरा को सुदृढ़ रखते हुए आधुनिक विज्ञान और उभरती तकनीकों का नेतृत्व कर सकती है। "हिंदीः पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक" की थीम यह स्पष्ट करती है कि सच्ची प्रगति वही है जिसमें तकनीकी नवाचार मानवीय संवेदना, विवेक और करुणा से जुड़ा हो। इस 10 जनवरी को हम सामूहिक रूप से यह प्रण लें कि हिंदी को केवल संवाद की नहीं, बल्कि नवाचार, मानवीय मूल्यों और वैश्विक समझ की सशक्त भाषा बनाएँ। यही हिंदी की वास्तविक शक्ति, पहचान और विजय है — जय हिंदी।

# डिजिटल युग में हिंदी: विश्व हिंदी दिवस 2026 का संदेश

सुनील कुमार महला

प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है ।यह दिवस मात्र एक तारीख नहीं है, अपितु यह तो हमारे देश के भाषाई आत्मसम्मान का बड़ा उत्सव है। पाठकों को बताता चलूं कि राष्ट्रीय हिंदी दिवस प्रतिवर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है, जैसा कि भारत की संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था तथा यह मुख्य रूप से भारत में हिंदी भाषा की मान्यता पर केंद्रित है ।हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्यों की बात करें तो इसमें क्रमशः हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करना, दुनिया भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना,अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना, संयुक्त राष्ट्र में इसे आधिकारिक भाषा बनाना तथा विदेशी लोगों में हिंदी के प्रति अधिकाधिक रुचि पैदा करना प्रमुख हैं ।सरल शब्दों में कहें तो इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान देना और इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है ।हिंदी न केवल हमारे देश प्राचीन संस्कृति और ज्ञान की संवाहक है, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी इसका महत्त्वपूर्ण और अहम योगदान, भूमिका रही है। हिंदी आज हमारे देश की राजभाषा (आफिशियल लैंग्वेज) तथा भारत की प्रमुख मातृभाषा है। विश्व हिंदी दिवस के इतिहास की यदि हम यहां पर बात करें तो 10 जनवरी 1975 को नागपुर (महाराष्ट्र) में पहला 'विश्व हिंदी सम्मेलन' आयोजित किया गया था तथा इसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था, जिसमें 30 देशों के १२२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। गौरतलब है कि वर्ष २००६ में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी को प्रतिवर्ष 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नॉर्वे में भारतीय दूतावास द्वारा पहली बार विदेश में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया था। वास्तव में, यह उस दिन को चिह्नित करता है जब वर्ष 1949 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली) में पहली बार हिंदी बोली गई थी। यह विश्व के विभिन्न हिस्सों में स्थित भारतीय दूतावासों द्वारा भी मनाया जाता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष २018 में मॉरीशस के पोर्ट लुइस में विश्व हिंदी सचिवालय भवन का भी उद्घाटन किया गया था ।हर साल इस दिवस की एक थीम या विषय रखा जाता है और वर्ष २०२५ में इसका विषय 'हिंदी: एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़' रखी गई थी। वास्तव में, यह थीम हिंदी को एक वैश्विक संवाद, संस्कृति और एकता के माध्यम के रूप में उभारने पर केन्द्रित थी ।इस वर्ष यानी कि वर्ष २०२६ में इसकी थीम/विषय 'हिंदी: पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) तक' रखी गई है ।यह थीम इस बात पर जोर देती है कि हिंदी न केवल हमारी प्राचीन संस्कृति और ज्ञान की संवाहक है, बल्कि आधुनिक युग में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' और डिजिटल तकनीक के क्षेत्र में भी पूरी तरह सक्षम और प्रगतिशील है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसका उद्देश्य है कि हिंदी पारंपरिक रूप से एक भाषा होने के साथ तकनीक की दुनिया में भी आगे है। इस भाषा को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। बहरहाल पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविंददास ने हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने के क्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा हिन्दी हमारे देश के संविधान की आठवीं अनुसूची की भाषा भी है ।साथ ही, अनुच्छेद 351 'हिंदी भाषा के विकास के लिये निर्देश' से संबंधित है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तथा अनुच्छेद 120 तथा अनुच्छेद 210 भी हिंदी से संबंधित हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343 भारत संघ की राजभाषा के निर्धारण से संबंधित एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रावधान है। इसके पहले खंड (343-1) में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि 'संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।' इसके साथ ही, सरकारी कार्यों में उपयोग किए जाने वाले अंकों का स्वरूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप (1, 2, 3 आदि) होगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह अनुच्छेद भारत की भाषाई विविधता को स्वीकार करते हुए हिंदी को केंद्र सरकार के आधिकारिक कामकाज की मुख्य भाषा के रूप में स्थापित करता है। अनुच्छेद 343 के अन्य खंडों में संक्रमणकालीन (ट्रांजिशनल) व्यवस्था भी दी गई है। गौरतलब है कि संविधान के लागू होने के समय (26 जनवरी 1950) भारतीय संविधान में यह प्रावधान किया गया था कि अगले 15 वर्षों तक यानी कि 1965 तक संघ के सभी आधिकारिक कार्यों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग भी पहले की तरह जारी रहेगा, ताकि प्रशासनिक स्तर पर कोई बाधा न आए। हालांकि, संसद को यह शक्ति दी गई थी कि वह 15 वर्ष की अवधि के बाद भी कानून बनाकर अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रख सकती है, जिसके परिणामस्वरूप बाद में 'राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया। सरल शब्दों में कहें तो अनुच्छेद 343 वह संवैधानिक आधार है जो हिंदी को भारत की प्रशासनिक और राष्ट्रीय पहचान से जोड़ता है ।बहरहाल, हिंदी भाषा की कई ऐसी अनूठी विशेषताएं हैं जो इसे विश्व की अन्य भाषाओं से अलग और वैज्ञानिक बनाती हैं। इसकी सबसे बड़ी खूबी इसकी ध्वन्यात्मकता है; यानी इसे जैसा लिखा जाता है, ठीक वैसा ही बोला भी जाता है। हिंदी की लिपि, देवनागरी, अत्यंत व्यवस्थित है, जिसमें स्वर और व्यंजनों को वैज्ञानिक आधार पर वर्गीकृत किया गया है। यह एक अत्यंत उदार,सरल,सहज, वैज्ञानिक शब्दावली लिए हुए बहुत ही शानदार भाषा है, जिसने समय के साथ संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ अरबी, फारसी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों को भी अपने भीतर सहजता से समाहित किया है ।व्याकरण की दृष्टि से देखें तो हिंदी में संज्ञा और क्रिया का गहरा संबंध होता है और इसमें लिंग (स्त्रीलिंग-पुल्लिंग) व वचन के आधार पर क्रिया का रूप बदल जाता है, जो भाषा को एक लयबद्धता प्रदान करता है। साथ ही, हिंदी में संबोधन के लिए 'तू', 'तुम' और 'आप' जैसे शब्दों का वर्गीकरण हमारे समाज की शिष्टता और रिश्तों की मर्यादा को दर्शाता है। अपनी सरलता और व्यापकता के कारण ही यह न केवल साहित्य की भाषा है, बल्कि आज के दौर में तकनीक और सिनेमा के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। उल्लेखनीय है कि हिंदी शब्द का जन्म फारसी भाषा से हुआ है, जिसका अर्थ है 'सिंधु नदी के किनारे का क्षेत्र'। 11वीं सदी में जब तुर्की आक्रमणकारी भारत आए, तो उन्होंने यहाँ की भाषा को 'हिंदी' नाम दिया। हिंदी की विकास यात्रा सदियों पुरानी है; यह प्राचीन काल में 'अपभ्रंश' के रूप में प्रचलित थी, जिसका प्रमाण हमें कालिदास के नाटकों में भी मिलता है। आज हम जिस देवनागरी लिपि का प्रयोग करते हैं, वह भी लगभग 11वीं शताब्दी के आसपास अस्तित्व में आई थी ।वर्तमान में, हिंदी भारत की राजभाषा है और देश के प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी के साथ इसका प्रमुख स्थान है। इसकी लोकप्रियता केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि गिरमिटिया मजदूरों और सांस्कृतिक प्रवास के कारण यह मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम और नेपाल जैसे कई देशों में भी सम्मान के साथ बोली जाती है ।हिन्दी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह वर्तमान में एक शक्तिशाली वैश्विक भाषा के रूप में उभर चुकी है। वर्ष २०२५-२६ के नवीनतम आंकड़ों (जैसे एथनोलॉग) के अनुसार, हिन्दी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बनी हुई है, जिसके बोलने वालों की कुल संख्या लगभग 60.9 करोड़ (609 मिलियन) से अधिक पहुँच गई है। वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी (1.5 अरब) और मंदारिन या मैंडरिन/चीनी (1.2 अरब) के बाद हिन्दी का ही स्थान आता है। दिलचस्प बात यह है कि दुनिया भर में हिन्दी के प्रसार की गति पिछले कुछ दशकों में अत्यंत तीव्र रही है, और जैसा कि इस आलेख में ऊपर भी चर्चा कर चुका हूं कि आज यह फिजी, मॉरीशस, नेपाल और गयाना जैसे देशों के अलावा अमेरिका और खाड़ी देशों में भी बड़े प्रवासी समुदाय द्वारा बोली जाती है ।भारत के संदर्भ में बात करें, तो हिन्दी देश की सबसे बड़ी और सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषा है। 2011 की जनगणना के बाद से हिन्दी भाषियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है और वर्तमान अनुमानों के अनुसार, भारत की लगभग 44% से 53% आबादी हिन्दी को अपनी पहली, दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में उपयोग करती है। डिजिटल क्रांति ने भी हिन्दी को काफी बढ़ावा दिया है; इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिन्दी सामग्री की मांग और खपत में भारी उछाल आया है। कितनी अच्छी बात है कि आज हिंदी का प्रयोग केवल बोलचाल या साहित्य तक सीमित न रहकर जीवन के लगभग-लगभग हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में व्यापक रूप से हो रहा है। प्रशासनिक और न्यायिक क्षेत्र में हिंदी भारत की राजभाषा के रूप में केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों और संसदीय कार्यों का मुख्य आधार है। यह हमारे लिए गौरवान्वित महसूस करने की बात है कि आज शिक्षा के क्षेत्र में भी नई शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पालिसी) के आने के बाद अब इंजीनियरिंग और चिकित्सा (मेडिकल) जैसे तकनीकी विषयों की पढ़ाई भी हिंदी में शुरू हो चुकी है। मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में तो हिंदी का वर्चस्व निर्विवाद है; बॉलीवुड फिल्में, हिंदी समाचार चैनल और विभिन्न ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने इसे न केवल भारत के कोने-कोने तक, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी लोकप्रिय बना दिया है ।तकनीकी और डिजिटल क्रांति ने हिंदी के प्रयोग को एक नई दिशा दी है। आज सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) के क्षेत्र में गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और एप्पल जैसी बड़ी कंपनियां अपने सर्च इंजन, वॉइस असिस्टेंट (जैसे सिरी और एलेक्सा) और कीबोर्ड में हिंदी को प्रमुखता दे रही हैं। ई-कॉमर्स और विज्ञापन की दुनिया में ग्राहकों से जुड़ने के लिए हिंदी सबसे प्रभावी माध्यम बन गई है। इसके अलावा, न्यायालयों में स्थानीय भाषा के बढ़ते प्रयोग और व्यापारिक जगत में 'मार्केटिंग' के लिए हिंदी के बढ़ते चलन ने इसे एक 'रोजगारपरक भाषा' (लैंग्वेज आफ एंप्लोयमेंट) के रूप में स्थापित कर दिया है। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा डिजिटल जनगणना २०२६-२७ की तैयारी की जा रही है, जिससे आने वाले समय में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के और भी सटीक व अद्यतन आंकड़े सामने आएंगे। अंत में यही कहूंगा कि विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) वैश्विक मंच पर हिंदी की बढ़ती शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रतीक है। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करना और दुनिया भर में इसके प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना है। आज जब हिंदी ज्ञान, विज्ञान और तकनीक की भाषा बनकर उभरी है, तो यह दिवस हमें याद दिलाता है कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर ही हम वैश्विक नागरिक के रूप में अपनी पहचान सशक्त बना सकते हैं।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,
पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

# सिंहभूम में पुनः शुक्रवार को तीन लोगों हाथी के शिकार बने ,महज 9 दिनों में 21 जानें गयी

**बंगाल , ओडिशा की वन्यजीव टीमें वहीं गुजरात के वनतारा के हाथी विशेषज्ञ भी सिंहभूम मे**

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**चाईबासा**। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम में हाथियों का आतंक से मानव समुदाय त्राहि त्राहि कर रहा है। आज शुक्रवार को जिले के मझगांव प्रखंड के बेनीसागर पंचायत अंतर्गत खड़पोस के पास स्थित तिलोकुटी गांव में हाथी ने दो लोगों को मार डाला। मृतकों में बेनीसागर निवासी 40 वर्षीय प्रकाश मालवा और एक बच्चा शामिल है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, एक बच्चे की लाश हाथी के दांत में फंस गया। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची ।पिछले दो दिनों से हाथी शांत था पर आज उसने उत्पात मचान शुरू कर दिया है। इस हाथी ने पिछले 9 दिनों में 21 लोगों की जान ले चुका है। इधर, हाथी की तलाश में जुटी वन विभाग की टीम को अब तक उसका सही लोकेशन नहीं मिल पाया है। पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा, जमशेदपुर के दलमा और ओडिशा वाइल्ड लाइफ की टीम यहां पहुंची है। देर रात को इसी कैम्प से जंगल में हाथी की खोजबीन की जा रही है। हाथी के बारे में ग्रामीण अलग-अलग सूचनाएं दे रहे हैं। इसके वेरिफिकेशन के लिए रातभर मशाल लेकर टीम उन जगहों पर पहुंची।

वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार, एक जनवरी से यह हाथी लगातार रिहायशी इलाकों में घुसकर रात के समय लोगों पर हमला कर रहा है। अधिकतर घटनाएं तब हुईं, जब लोग अपने घरों में सो रहे थे। गुरुवार को कोई जनहानि नहीं हुई, जो बीते दिनों में दूसरा ऐसा दिन था।

झारखंड के प्रधान मुख्य वन संरक्षक आशुतोष उपाध्याय और क्षेत्रीय मुख्य वन संरक्षक स्मिता पंकज ने चाईबासा पहुंचकर प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। अधिकारियों ने वनकर्मियों के साथ बैठक की और क्विक रिस्पांस टीम को सक्रिय रखने तथा वन सुरक्षा समितियों को अलर्ट मोड में रखने के निर्देश दिए। इधर, गुरुवार की देर रात को गुजरात स्थित वनतारा के हाथी एक्सपर्ट को लेकर डीएफओ आदिय नारायण हाट गम्हरिया कैम्प पहुंचे। वन विभाग ने बताया कि जैसे ही हाथी की सटीक लोकेशन मिलेगी, उसे तत्काल ट्रैंकुलाइज कर सुरक्षित क्षेत्र में स्थानांतरित किया जाएगा। वहीं, ग्रामीणों ने रात में गश्ती बढ़ाने और चेतावनी प्रणाली को मजबूत करने की मांग की है, ताकि भविष्य में किसी और की जान न जाए।

# नवीन ने PUCC को लेकर राज्य सरकार की आलोचना की: लोगों के उत्पीड़न पर चिंता जताई

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**भुबनेश्वर:** विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने पॉल्यूशन कंट्रोल सर्टिफिकेट (PUCC) को लेकर सरकार की आलोचना की है। BJP सरकार पॉल्यूशन कंट्रोल सर्टिफिकेट (PUCC) को लागू करने में नाकाम रही है। नवीन ने ट्विटर पर ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट की दूर की न सोचने और नाकाबिलियत की कड़ी आलोचना की और लोगों की परेशानी और आंदोलन पर चिंता जताई।उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा की जा रही PUCC प्रक्रिया में गंभीर अनियमितताएं हैं।नवीन ने लिखा कि ओडिशा में पॉल्यूशन कंट्रोल सर्टिफिकेट (PUC) लागू करने का BJP सरकार का मैनेजमेंट बहुत ही अव्यवस्थित है और नियमों में बार-बार बदलाव से ओडिशा के आम लोगों को बहुत ज़्यादा परेशानी और परेशानियां हुई हैं। 1 जनवरी, 2026 से 'नो PUC, नो फ्यूल' नियम की अचानक घोषणा के बाद, पूरे राज्य में टेस्टिंग सेंटर्स पर भारी भीड़ लग गई और लोगों को परेशान किया जा रहा था। BJP सरकार का बिना सही टेस्टिंग सेंटर्स, पहले से प्लानिंग और पब्लिसिटी के ऐसा नियम लागू करना गलत है। लोगों के गुस्से का सामना करते हुए, सरकार ने बार-बार अपने फैसले पर 'यू-टर्न' लिया है। पहले, इसने 1 फरवरी, फिर 31 मार्च और आखिर में 1 अप्रैल, 2026 से इस नियम की घोषणा की और यह घोषणा की कि कोई जुर्माना नहीं लगाया जाएगा और टोल गेट्स पर ई-डिटेक्शन भी रोक दिया गया। इन बार-बार बदलावों ने ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट की पूरी नाकाबिलियत और दूरदर्शिता की कमी को सामने ला दिया है। गाड़ियों से होने वाले पॉल्यूशन को कंट्रोल करना ज़रूरी है, लेकिन यह नागरिकों को परेशान करके नहीं किया जाना चाहिए। बीजू जनता दल लोगों के साथ मजबूती से खड़ा है और हम इस मिसमैनेजमेंट के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। नवीन पटनायक ने साफ कर दिया है कि ओडिशा के लोगों की भलाई को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, उन्होंने PUC सुविधाओं में बढ़ोतरी, प्रोसेस को आसान बनाने और गलत फाइन खत्म करने की मांग की है।

# धर्म परिवर्तन विवाद; मौत के 25 घंटे बाद भी शव पड़ा है

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**जलेश्वर/भूबनेश्वर** : धर्म परिवर्तन के कारण शव नहीं उठाया जा सकता। मौत के 25 घंटे बाद भी शव वहीं पड़ा है। शव को दफनाया जाए या जलाया जाए, इस पर विवाद है। धर्म परिवर्तन के विरोध के कारण शव नहीं उठाया जा सकता। बालासोर जिले के रायबनिया थाना क्षेत्र के रंगामटिया में ऐसी ही एक घटना देखने को मिली है। खबरों के मुताबिक, कालिक ग्राम पंचायत के रंगामटिया गांव के चीना हंसदा के बेटे छुटा हंसदा की मौत बुधवार रात को बुढ़ापे के कारण हो गई ।वह एक पारंपरिक आदिवासी समुदाय से थे, लेकिन 15 साल से ज़्यादा पहले उन्होंने दूसरा धर्म अपना लिया था। चूंकि आदिवासी रीति-रिवाजों को तोड़ा जा रहा था, इसलिए पारंपरिक गांव की पंचायत के मुखिया मसांग हांसदा, मोहन मरांडी, मंडल हांसदा धीरन सोरेन, राजू हेमाराम, परियार हांसदा, नारायण मुर्मू और दूसरों ने मुख्य गांव मशानी में शव का अंतिम संस्कार करने पर रोक लगा दी थी। मृतक का बेटा पुलिस स्टेशन के गेट पर था। पुलिस स्टेशन से लौटने के बाद, उसने अपने घर में शव को दफनाने के लिए प्रशासन से इजाज़त के लिए रेवेन्यू ऑफिसर ओलमारा को घर के सर्टिफिकेट की एक कॉपी भी भेजी थी। हालांकि, ऐसा लगता है कि अब तक शव का अंतिम संस्कार नहीं किया गया है। इस बीच, गांव वालों की शिकायतों और धर्म बदलने की वजह से आदिवासी समुदाय की संस्कृति, धर्म और परंपराएं खत्म हो रही हैं।

# जनगणना 2027-पहला फेज 1 अप्रैल से सितंबर के बीच होगा, घरों की लिस्टिंग और डेटा जुटाएंगे, ये काम 30 दिन में पूरा होगा

पिंकी कुंडू

केंद्रीय गृह मंत्रालय (MHA) ने बताया कि देश में होने वाली जनगणना 2027 का पहला फेज 1 अप्रैल से 30 सितंबर के बीच किया जाएगा। इसकी शुरुआत घरों की लिस्टिंग और घरों का डेटा इकट्ठा करने से होगी। हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अपने यहां 30 दिनों में यह काम पूरा करेंगे।

MHA ने बुधवार को नोटिफिकेशन जारी कर बताया कि 1 अप्रैल से देशभर में सभी मकानों और परिवारों की लिस्ट बनाई जाएगी। साथ ही परिवारों की अन्य जानकारी भी इकट्ठी की जाएगी, ताकि जनसंख्या गिनने की मजबूत तैयारी हो सके।

सरकार ने यह भी कहा कि घरों की लिस्टिंग शुरू होने से 15 दिन पहले लोगों को खुद से जानकारी भरने (सेल्फ एन्यूमरेशन) का विकल्प भी दिया जाएगा। दरअसल जनगणना 2021 में होनी थी, लेकिन कोरोना महामारी की वजह से इसे टाल दिया गया था, जो अब 2027 में पूरी होगी।

जनगणना पूरी तरह डिजिटल होगी सरकार ने बताया कि इस बार जनगणना पूरी तरह डिजिटल होगी। करीब 30 लाख कर्मचारी मोबाइल एप के जरिए जानकारी जुटाएंगे। मोबाइल एप, पोर्टल और रियल टाइम डेटा ट्रांसफर से जनगणना बहुत हद तक पेपरलेस होगी।

ये ऐप Android और iOS दोनों पर काम करेंगे। जाति से जुड़ा डेटा भी डिजिटल तरीके से इकट्ठा किया जाएगा। आजादी के बाद पहली बार जनगणना में जाति की गिनती शामिल होगी। इससे पहले अंग्रेजों के समय 1931 तक जाति आधारित जनगणना हुई थी।

यह फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली कैबिनेट कमेटी ने अप्रैल में लिया था। 2011 की पिछली जनगणना के अनुसार, भारत की आबादी करीब 121 करोड़ थी, जिसमें लगभग 51.5% पुरुष और 48.5% महिलाएं थीं।

`मैप पर हर घर 'डिजी डॉट' बनेगा, इसके 5 फायदे होंगे

1. आपदा में सटीक राहत- जियो टैगिंग से बना डिजिटल लेआउट मैप बादल फटने, बाढ़ या भूकंप जैसी आपदा के समय उपयोगी साबित होगा। सुदूर हिमालयी क्षेत्र में बसे किसी गांव में बादल फटने जैसी घटना के समय इस मैप से तुरंत पता चल जाएगा कि किस घर में कितने लोग रहते हैं। होटलों में क्षमता के हिसाब से कितने लोग रहे होंगे। इस ब्योरे से बचाव के लिए जरूरी तमाम नौका, हेलिकॉप्टर, फूड पैकेट आदि की व्यवस्था करने में मदद मिलेगी।

2. परिसीमन में मदद मिलेगी- राजनीतिक सीमाएं जैसे संसदीय या विधानसभा क्षेत्रों का युक्तिसंगत तरीके से निर्धारण करने में भी इससे मदद मिलेगी। जियो टैगिंग से तैयार मैप से यह तस्वीर साफ हो जाएगी कि क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का संतुलित बंटवारा कैसे हो। समुदायों को ऐसे न बांट दिया जाए कि एक मोहल्ला एक क्षेत्र में और दूसरा मोहल्ला किसी अन्य क्षेत्र में शामिल हो जए। घरों के डिजी डॉट से डिलिमिटेशन की प्रक्रिया में आसानी होगी।

3. शहरी प्लानिंग में आसानी- शहरों में सड़कों, स्कूलों, अस्पतालों या पार्कों की प्लानिंग करने में भी यह मैप उपयोगी साबित होगा। अगर किसी जगह के घरों के डिजिटल लेआउट में बच्चों की अधिकता होगी तो पार्क और स्कूल प्राथमिकता से बनाने की योजना तैयार की जा सकेंगी। यदि किसी बस्ती में कच्चे मकानों या खराब घरों की अधिकता दिखेगी तो वहां किसी मेडिकल इमरजेंसी के समय तत्काल मोबाइल राहत वैन भेजी जा सकेंगी।

4. शहरीकरण और पलायन दर का डेटा मिलेगा- इस जनगणना के दस साल बाद होनी वाली जनगणना में डिजिटल मैप के परिवर्तन आसानी से दर्ज किए जा सकेंगे। देश के विभिन्न हिस्सों में शहरीकरण की दर और पलायन के क्षेत्रों की मैपिंग की तुलना सटीक ढंग से की जा सकेगी।

5. मतदाता सूची से डुप्लीकेट नाम हट जाएंगे- आधार की पहचान के साथ जियो टैगिंग मतदाता सूची को सटीक और मजबूत बनाने में सहायक होगी। जब वोटर किसी भौगोलिक स्थान से डिजिटली जुड़ा होगा तो दोहरे पंजीकरण के समय उसके मूल निवास का पता भी सामने आएगा।

● ॥ पंचांग - संवत 2082-83 ॥● ॥ HINDU CALENDAR - for year 2026 ॥ ●

| Major Festivals 2026 | |
|---|---|
| Makar Sankranti | January 14 |
| Vasant Panchmi | January 23 |
| Maha Shivratri | February 15 |
| Holika Dahan (holi) | March 2 |
| Gudi Padva | March 19 |
| Ram Navami | March 26 |
| Hanuman Janmostav | April 2 |
| Akshay Tritiya | April 19 |
| Ashadi Beej/Rath Yatra | July 16 |
| Guru Purnima | July 29 |
| Raksha Bandhan | August 28 |
| Janmashtmi | Sept. 04 |
| Ganesh Chaturthi | Sept. 14 |
| Navratri | October 11 |
| Vijya Dashmi | October 20 |
| Karva Chauth | October 29 |
| Dhan Teras | November 6 |
| Dipavali | November 8 |
| Labh Panchmi | November 14 |
| Dev Diwali | November 24 |

| EKADASHI / एकादशी | |
|---|---|
| MONTH | DATES |
| January | 14 & 29 |
| February | 13 & 27 |
| March | 15 & 29 |
| April | 13 & 27 |
| May | 13 & 27 |
| June | 11 & 25 |
| July | 10/11 & 25 |
| August | 9 & 23 |
| September | 7 & 22 |
| October | 6 & 22 |
| November | 5 & 20/21 |
| December | 4 & 20 |

| SANKASHTI (संकष्टी) CHATURTHI | | PURNIMA / पूर्णिमा | AMAVASYA/अमावस्या |
|---|---|---|---|
| MONTH | Moon Rise | MONTH & DATE | MONTH & DATE |
| अंगारकी Jan.06, Tuesday | 21:20 | January 3 | January 18 |
| February 5, Thursday | 21:52 | February 1 | February 17 |
| March 6, Friday | 21:26 | March 2 | March 18 |
| April 5, Sunday | 22:00 | April 2 | April 17 |
| अंगारकी May 5, Tuesday | 22:33 | May 1 | May 16 |
| June 3, Wednesday | 22:04 | May 30 | June 15 |
| July 3, Friday | 22:00 | June 29 | July 14 |
| August 2, Sunday | 21:40 | July 29 | August 12 |
| August 31, Monday | 20:50 | August 28 | September 11 |
| अंगारकी Sept.29, Tuesday | 20:09 | September 26 | October 10 |
| October 29, Thursday | 20:46 | October 25 | November 9 |
| November 27, Friday | 20:46 | November 24 | December 8 |
| December 26, Saturday | 20:43 | December 23 | |

**ग्रहण / ECLIPSE - 2026**

| Date of ECLIPSE / ग्रहण | Visible ? |
|---|---|
| February 17, Tuesday - SOLAR | Not Visible in India |
| March 3, Tuesday - MOON | Visible in India |
| August 12, Wednesday - SOLAR | Not Visible in India |
| August 28, Friday - MOON | Not Visible in India |

**खरमास / Inauspicious Months - Days**

| DETAILS | DURATION |
|---|---|
| DHANARAK - | 16 December 2025 to 14 January 2026 |
| MEENARAK - | 14 March to 14 April 2026 |
| होलाष्टक - | Begins on February 24, ends on March 03 |
| श्राद्ध पक्ष - | begins on SEP. 27, and ends on Oct.10, 2026 |

●● अधिक मास / पुरुषोत्तम मास Start - 17 May & Ends - 15 June ●●

**SATURN Sade Sati (साढ़े साती) and Panoti (ढैय्या) Effects as Mentioned Below**

| | |
|---|---|
| → Last Phase of Sadesati for Aquarius (कुंभ राशि) | शनि गोचर - २०२६ |
| → Second Phase of Sadesati for Pisces (मीन राशि) | शनि वक्री - जुलाई २७, २०२६ |
| → First Phase of Sadesati for Aries (मेष राशि) | शनि मार्गी - दिसम्बर ११, २०२६ |
| → DHAIYA (Panoti) - LEO(सिंह राशि) & SAGITARIUS (धनु राशि) | |

पिंकी कुंडू

# लोक भवन बिरसा मंडप में झारखंड के नये चीफ जस्टिस राज्यपाल से शपथ ग्रहण की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची**, जस्टिस महेश शरदचंद्र सोनक ने शुक्रवार को झारखण्ड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ ली। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने लोक भवन के बिरसा मंडप में उन्हें पद की शपथ दिलाई। इस मौके पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, स्पीकर रवींद्रनाथ महतो, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी, उच्च न्यायालय के कई न्यायाधीश आदि उपस्थित रहे।राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने शुक्रवार को लोक भवन स्थित बिरसा मंडप में जस्टिस एमएस सोनक को झारखंड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ दिलाई। राज्यपाल ने मुख्य न्यायाधीश को शपथ ग्रहण के बाद हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दी।

इससे पूर्व राज्य के मुख्य सचिव अविनाश कुमार ने न्यायमूर्ति एमएस सोनक का झारखंड राज्य उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद पर नियुक्ति संबंधी वारंट को पढ़ा। तत्पश्चात राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव डॉ नितिन मदन कुलकर्णी ने ने माननीय मुख्य न्यायाधीश को शपथ ग्रहण हेतु आमंत्रित किया।

उक्त अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, विधानसभा अध्यक्ष रबीन्द्र नाथ महतो, केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, राज्य के मंत्रीगण, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री व नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, झारखंड उच्च न्यायालय के न्यायाधीशगण, पूर्व न्यायाधीशगण, भारतीय प्रशासनिक व पुलिस सेवा के वरीय अधिकारीगण तथा

# सरायकेला जिले में सुभाष मेडिकल कालेज-अस्पताल का मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन

**सिकलिगं का होगा व्यापक सर्वेक्षण, सीएम ने मिडिया से पोजेटिव रिपोर्टिंग की अपेक्षा की**

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**सरायकेला,** मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने शुक्रवार दोपहर सरायकेला-खरसावां जिले के आदित्यपुर में 'नेताजी सुभाष मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल' का औपचारिक उद्घाटन किया.

दोपहर करीब 1:20 बजे कार्यक्रम स्थल पहुंचे मुख्यमंत्री का स्वागत राष्ट्रगान और पारंपरिक वंदना के साथ किया गया. संस्थान के चेयरमैन एम.एन. सिंह ने गणमान्य अतिथियों का बुके देकर स्वागत किया. उद्घाटन के बाद जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा, ₹आज का दिन कोल्हान के लिए ऐतिहासिक है. सरायकेला में एक उच्च स्तरीय मेडिकल कॉलेज का सपना आज हकीकत बन गया है. यह संस्थान न केवल शिक्षा देगा, बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी समाज की सेवा के लिए डॉक्टर तैयार करेगा.₹ उन्होंने संस्थान द्वारा नर्सिंग और डिग्री कॉलेज के क्षेत्र में किए गए पुराने कार्यों की भी प्रशंसा की

मुख्यमंत्री ने झारखंड की स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर दूरगामी लक्ष्य साझा किए. उन्होंने बताया कि वर्तमान में झारखंड में 10 मेडिकल कॉलेज हैं, लेकिन सरकार का लक्ष्य आगामी 4 वर्षों में इस संख्या को बढ़ाकर 20 करने का है. उन्होंने जानकारी दी कि चाईबासा, कोडरमा और बोकारो में सरकारी मेडिकल कॉलेजों का निर्माण कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है. मुख्यमंत्री ने छात्रों से संवाद करते हुए कहा कि जब वे डॉक्टर बनकर निकलें, तो समाज की उम्मीदों पर खरा उतरें.कार्यक्रम में मौजूद स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने झारखंड के मेडिकल सिस्टम में सुधार का भरोसा दिलाया. उन्होंने घोषणा की कि सरकार अब पूरे राज्य में थैलेसीमिया और सिकल सेल एनीमिया के मरीजों का व्यापक सर्वे कराएगी. उन्होंने कहा, ₹अब तक हमारे मरीजों को इन बीमारियों के जटिल इलाज के लिए दूसरे राज्यों के चक्कर काटने पड़ते थे, लेकिन अब झारखंड के ही अस्पतालों में इनका पुख्ता इलाज सुनिश्चित किया जाएगा.₹ इसके साथ ही उन्होंने मीडिया से सकारात्मक रिपोर्टिंग की अपील करते हुए कहा कि वे व्यवस्था को ठीक करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं.

कॉलेज के चैयरमैन एम.एन. सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री और पूर्व स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता के सहयोग से 2022 जियाडा के माध्यम से भूमि आवंटित हुई थी. यह मेडिकल कॉलेज फिलहाल 100 एमबीबीएस सीटों के साथ शुरू हुआ है और यहां अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं. स्वास्थ्य सचिव अजय सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जमशेदपुर के आसपास यह तीसरा मेडिकल कॉलेज है, जो इस औद्योगिक क्षेत्र की स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करेगा. कार्यक्रम में सांसद जोबा मांझी, विधायक सविता महतो, दशरथ गागराई ,समीर मोहंती, सोमेश सोरेन भी मौजूद रहे।

# धनबाद में 300 करोड रिंगरोड मुआवजा घोटाले में 16 अभियुक्त एसीबी के हाथों गिरफ्तार

**फर्जी हस्ताक्षर ,डमी खाते, काल्पनिक लाभार्थी,70 फीसदी राशि गायब कर रफा-दफा कर दिया था पूर्व में मामले को**

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची,** धनबाद की रिंग रोड परियोजना के जमीन अधिग्रहण मुआवजा घोटाले में एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने गुरुवार को देर रात से शुक्रवार सुबह तक कई जगहों पर छापे मारकर 16 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारियों में भू-राजस्व विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, क्लर्क और जमीन कारोबार के बड़े बिचौलिए शामिल हैं। इस कार्रवाई से लगभग 300 करोड़ रुपये के कथित घोटाले का पूरा पर्दाफाश होने की संभावना है। झारखंड में एसीबी ने अलग-अलग स्थानों पर छापे मारकर 16 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि इस मामले में धनबाद के एक भाजपा नेता रमेश राही ने किसान रैयतों की समस्या को उठाया था। धनबाद रिंग रोड परियोजना राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना थी, जिसका उद्देश्य शहर को ट्रैफिक जाम से मुक्ति दिलाना था। सन 2010 से 2012 के बीच शुरू हुई इस परियोजना के लिए सैकड़ों एकड़ उपजाऊ जमीन रैयतों से अधिग्रहीत की गई थी। सरकार ने मुआवजे के नाम पर करोड़ों रुपये आवंटित किए, लेकिन रैयतों तक पूरा पैसा नहीं पहुंचा। इसके बजाय अधिकारी और बिचौलियों ने फर्जी दस्तावेज बनाकर मोटी रकम हजम कर ली। एक प्रभावित किसान रामू महतो ने बताया था कि उसकी 5 एकड़ जमीन ली गई, लेकिन मुआवजा आज तक नहीं मिला। बिचौलिए कहते थे कि फाइल अटकी है, असल में वे ही लूट रहे थे।यह मामला 2014 में तब सुर्खियों में आया जब स्थानीय मीडिया और कुछ रैयतों ने शिकायत दर्ज कराई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि मुआवजा राशि का 70 फीसदी हिस्सा गायब हो गया। फर्जी हस्ताक्षर, डमी खाते और काल्पनिक लाभार्थियों के नामों से धोखाधड़ी की गई। उस समय तत्कालीन जिला भू-अर्जन पदाधिकारी उदयकांत पाठक, लाल मोहन नायक, चंद्रशेखर दास समेत आधा दर्जन अधिकारी निलंबित हुए। लेकिन जांच में मामला रफा-दफा होता रहा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023